जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 47 संख्याः 61 प्रभात बीकानेर, मंगलवार 23 सितम्बर, 2025 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

जीएसटी दरों में कमी होने का श्रेय मोदी सरकार को देना पूर्णतया उचित है

पर, डॉ. केलकर व डॉ. असीम दासगुप्ता, जिन्होंने जीएसटी प्रोग्राम को देश का सबसे सफल कार्यक्रम बनाया, उनकी तारीफ करने से चूकना भारी गलती होगी

- डॉ. विजय केलकर ने यह कल्पना की थी और विज़न दिया था कि देश में एक यूनिफॉर्म टैक्स हो, गुड्स व सर्विस के लिए। उस समय वे केन्द्रीय वित्त सचिव थे। डॉ. असीम दासगुप्ता एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इकॉनमिस्ट तथा कोलकता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे। अमेरिका में विश्वविद्यालय में पढ़ाने के बाद, प.बंगाल के वित्त मंत्री थे तथा उन्होंने पूर्ण रेखा तैयार की, जीएसटी व्यवस्था की तथा भारी भरकम ''बाइबल'' तैयार की, कायदे-कानून की।
- जब मोदी सरकार आई, तब जीएसटी के दूध के दाँत टूटने की प्रक्रिया व प्रारंभिक दिनों की उलझनों को, इन दोनों व्यक्तियों ने काफी हद तक सुलझा लिया था।
- पर, मोदी सरकार ने हिम्मत दिखाई व राजनीतिक निर्णय लिया, जीएसटी को क्रियान्वित करने का और यह प्रोग्राम इतनी सफलता से चला कि अब दिवाली से पूर्व जीएसटी की दरें घटाना भी संभव हो पाया है।
- राजनीतिक निर्णय आसान काम नहीं था। उदाहरण के लिए, गुजरात के मु.मंत्री के रूप में मोदी जी ने इस प्रोग्राम का विरोध किया था, पर, फिर प्र.मंत्री कार्यकाल में उनकी सरकार ने पूर्ण सहयोग व नेतृत्व प्रदान किया, इस प्रोग्राम को क्रियान्वित करने में।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का, जीएसटी दरों में कटौती से पहले देश के नाम संबोधन, पूरी तरह से एक राजनीतिक कदम था।

जीएसटी परिषद, जो जीएसटी व्यवस्था में अंतिम संशोधन करने के लिए सक्षम निकाय है, द्वारा जीएसटी में सुधार और पुर्नव्यवस्था की गई है। इसकी लागू होने की तारीख भी काउंसिल ने ही तय की है।

सबसे पहले, यह याद रखना ज़रूरी है कि दरों में इस तरह की कमी इसलिए संभव हुई, क्योंकि जीएसटी प्रणाली अब तक बहुत सफल रही है और जीएसटी संग्रह उम्मीद से कहीं अधिक रहा है।

इन घटनाक्रमों के पीछे भारतीय अर्थव्यवस्था की अच्छी स्थिति भी है, जो तमाम मुश्किलों के बावजूद, अपेक्षाकृत उच्च विकास दर से आगे बढ़ रही है।

इसमें कोई शक नहीं कि सरकार और सत्तारूढ़ पार्टी इस कदम के जरिए अपनी जनहितैषी छवि पेश करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन यह मौजूदा लाभ असल में कई सालों तक अनेक नीति-निर्माताओं, अर्थशास्त्रियों और अधिकारियों की लंबी मेहनत का नतीजा है।

इस संदर्भ में डॉ. विजय केलकर का नाम ज़रूर लिया जाना चाहिए, जिन्होंने सबसे पहले देशभर में एक समान वस्तु और सेवा कर लागू करने का खाका तैयार किया था। डॉ. केलकर उस समय वित्त मंत्रालय में वित्त सचिव थे और एक अनुभवी आर्थिक प्रशासक रहे हैं।

इसके बाद, जब अप्रत्यक्ष करों के इतने बड़े ढांचे को बदलने का कठिन काम शुरू हुआ, तो एक राज्य के वित्त मंत्री, जिन्हें पर्दे के पीछे के उनके अथम परिश्रम के लिए नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता, का नाम सामने आता है। ये हैं डॉ. असीम दासगुप्ता। अमेरिका से पढ़ाई करके लौटने के बाद कलकत्ता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

90 करोड़ रूपए की राशि पर जीएसटी चोरी करने वालों की जमानत अर्ज़ी खारिज

जयपुर, 22 सितंबर। आर्थिक अपराध मामलों की एसीजेएम कोर्ट, महानगर द्वितीय ने ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म के जरिए अर्जित की गई 90 करोड़ रुपए की राशि पर जीएसटी चोरी करने वाले आरोपियों की जमानत अर्जियों को खारिज कर दिया है। अदालत ने ये आदेश आरोपी मनोज कुमार और जगदीश की जमानत अर्जियों पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि आरोपियों पर कर

- ऑनलाइन गेमिंग के जरिए शेफबिज स्पाइस प्रा.लि. और इनोवा लैंडिंग गेम्स प्रा.लि. ने 90 करोड़ रूपए की राशि प्राप्त की, पर कोई जीएसटी नहीं दिया।

चोरी का गंभीर आरोप है, जो देश की अर्थ व्यवस्था को प्रभावित करने वाला अपराध है। यह वाइट कॉलर क्राइम है और इस स्तर पर उन्हें जमानत का लाभ नहीं दिया जा सकता। विशेष लोक अभियोजक जितेन्द्र सिंह पूनिया ने बताया कि डीजीजीआई उदयपुर जोन क्षेत्रीय इकाई की ओर से खुफिया जानकारी से पता चला कि ऑनलाइन गेमिंग की सेवाओं के जरिए मै. शेफबिज स्पाइस प्रा.लि. और इनोवा लैंडिंग गेम्स प्रा.लि. ने 90 करोड़ रुपए की राशि प्राप्त की है, लेकिन उनकी रिटर्न से पता चला कि उन्होंने इस राशि पर कोई जीएसटी नहीं दिया और इस तरह करोड़ों रुपए की जीएसटी चोरी की गई है। आरोपियों ने दोनों कंपनियों के नाम पर करोड़ों रुपए का लेन-देन कर जीएसटी की चोरी व धोखाधड़ी का अपराध किया है। मामले में अनुसंधान जारी है, इसलिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिहार के चुनाव में अडानी औद्योगिक घराना अनायास एक बड़ा मुद्दा बन गया है?

अडानी ग्रुप को 1050 एकड़ भूमि एक रूपया प्रति वर्ष के दाम पर आवंटित की गई है, भागलपुर में एक थर्मल प्लांट लगाने के लिए

- सरकार का कहना है, अडानी ग्रुप 24,000 मेगावाट क्षमता का पावर प्लांट लगाएगा, जिससे 12,000 लोगों को रोजगार मिलेगा तथा 3,000 लोगों को स्थाई नियुक्ति।
- बिहार के उद्योग मंत्री ने स्पष्ट करते हुए कहा, यह भूमि इसी दर पर बिहार स्टेट पावर जैनरेशन कंपनी को आवंटित की गई तथा कॉरपोरेशन ने पावर प्लांट लगाने के लिए निविदा आमंत्रित की थी तथा ''पारदर्शी'' प्रक्रिया से यह पावर प्लांट लगाने का काम अडानी ग्रुप ने प्राप्त किया और फिर भूमि भी उन्हें मिली प्लांट लगाने के लिए।
- अडानी ग्रुप की गतिविधियाँ महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ व झारखंड चुनाव में भी मुद्दा थीं। महाराष्ट्र, व छत्तीसगढ़ में अडानी ग्रुप के मुद्दे चुनाव के नतीजों को प्रभावित नहीं कर पाये थे। पर, झारखंड में अडानी ग्रुप की गतिविधियों की वजह से भारी राजनीतिक हंगामा सा रहा था।
- बिहार के चुनाव में क्या कुछ ऐसा होगा?

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। आगामी बिहार विधानसभा चुनाव एक सियासी थ्रिलर की शक्ल लेता जा रहा है, जिसमें आरोप-प्रत्यारोप की झड़ी लगी हुई है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा भाजपा पर वोट चोरी का आरोप, चुनाव रणनीतिकार से नेता बने प्रशांत किशोर (संस्थापक, जन सुराज पार्टी) द्वारा बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और तीन अन्य एनडीए मंत्रियों- मंगल पांडे, अशोक चौधरी और संजय जायसवाल पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप, और अब, बिहार कांग्रेस द्वारा राज्य सरकार के एक निर्णय के खिलाफ राज्यभर में विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है। बिहार सरकार ने भागलपुर के पीरपैंती में अडानी समूह को मात्र 1 रुपया वार्षिक किराए पर 1050 एकड़ जमीन लीज़ पर देने का फैसला किया है। इस ज़मीन पर थर्मल पावर प्लांट बनना है।

इससे पहले भी, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और झारखंड के विधानसभा चुनावों के दौरान अडानी समूह का नाम विपक्षी हमलों के निशाने पर रहा था।

हालांकि महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ में विपक्ष द्वारा अडानी ग्रुप पर लगाये गये आरोपों, जो असल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा भाजपा के खिलाफ थे, का कोई खास असर नहीं दिखा, लेकिन झारखंड में यह मुद्दा अहम बना। अब सवाल यह उठता है: क्या बिहार चुनावों में ''अडानी फैक्टर'' वाकई निर्णायक भूमिका निभाएगा?

अडानी समूह ने भागलपुर के पीरपैंती में लगभग 3 बिलियन डॉलर (करीब 25,000 करोड़) के निवेश से 2400 मेगावाट का थर्मल पावर प्लांट लगाने की योजना बनाई है तथा ग्रुप का कहना है कि इसमें 800-800 मेगावाट की तीन यूनिट्स होंगी तथा 12,000 नौकरियाँ, तथा 3000 स्थायी पद सृजित होंगे।

बिहार के उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा के अनुसार, यह जमीन पहले बिहार स्टेट पावर जनरेशन कंपनी लिमिटेड (बीएसपीजीसीएल) को 1 रुपया सालाना लीज़ पर दी गई थी, और बाद में इसे एक पारदर्शी बोली प्रक्रिया के तहत अडानी समूह को स्थानांतरित किया गया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एच-1बी वीज़ा पर ट्रंप का आदेश आते ही सैन फ्रैंसिस्को एयरपोर्ट पर मचा हड़कंप

एमिरेट्स फ्लाइट से भारत आ रहे अमेरिकन एनआरआई आनन-फानन में विमान से उतर गए

- शुक्रवार को घटी इस घटना के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। वीडियो में देखा गया कि भारत जाने के लिए एमिरेट्स की फ्लाइट में बैठे यात्री ट्रंप का वीज़ा शुल्क बढ़ाने का आदेश आते ही उतर गए। उन्हें डर था कि अगर वे चले गए तो शायद अमेरिका लौट ना पाएं।
- इससे फ्लाइट तीन घंटे लेट हो गई। फ्लाइट कैप्टन ने भी घोषणा की, मौजूदा अभूतपूर्व हालात को देखते हुए जो लोग विमान से उतरना चाहें वे उतर सकते हैं।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा एच-वन बी वीज़ा के लिए आवेदन शुल्क एक लाख डॉलर तय करने का आदेश देने के बाद, कई भारतीय यात्री टेकऑफ़ से ठीक पहले एक एमिरेट्स विमान से उतर गए।

यह घटना सैन फ्रांसिस्को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हुई, जहाँ भारत जा रही एमिरेट्स की एक उड़ान में अफरा-तफरी मच गई। यात्रियों के उतरने के कारण उड़ान तीन घंटे देरी से रवाना हुई।

एमिरेट्स की उस उड़ान में सवार एक यात्री ने सोशल मीडिया पर कुछ वीडियो साझा किए, जिसमें देखा जा सकता है कि कैसे लोग घबराहट में विमान से उतर रहे हैं, उन्हें डर था कि वे अमेरिका वापस नहीं लौट पाएंगे। एक वीडियो में यात्री गलियारों में खड़े दिखाई दे रहे हैं, कुछ अपने मोबाइल फोन पर व्यस्त हैं, और कई लोग हतप्रभ होकर यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि उड़ान रवाना होगी या नहीं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाक वायुसेना ने अपना ही गांव तबाह किया

नयी दिल्ली, 22 सितंबर। पाकिस्तान की वायुसेना ने अपने ही देश के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के एक गांव में भारी बमबारी की। अचानक हुए इस

- पाक वायुसेना ने खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के एक गांव पर भारी बमबारी की जिसमें 30 से ज्यादा लोग मारे गए व सैकड़ों घायल हो गए।

हमले में तिराह घाटी का मत्रे दारा गांव तबाह हो गया, हमले में कम से कम 30 लोग मारे गये और सैकड़ों अन्य घायल हो गये। मरने वालों में कई महिलाएं और बच्चे शामिल हैं।

यह हमला 21 सितंबर की रात को किया गया और कई स्थानीय सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तानी सेना ने अपने चीन निर्मित जेएफ-17 लड़ाकू विमानों से गांव पर कम से कम आठ एलएस -6

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत से दो बार हार कर भी एशिया कप फाइनल में पहुँच सकता है पाकिस्तान

रविवार को भारत से दूसरी बार हारने से पाकिस्तान को झटका तो लगा, पर उम्मीदें अभी मरी नहीं हैं

- एशिया कप सुपर 4 फॉर्मेट पर आयोजित किया जा रहा है। इसलिए अभी भी पाकिस्तान के पास मौका है।
- पाकिस्तान को मंगलवार को श्रीलंका और गुरुवार को बाँग्लादेश को हराना होगा, अगर वह इसमें सफल होता है तो फाइनल में पाकिस्तान को भारत के खिलाफ खेलना होगा।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। एशिया कप 2025 में भारत और पाकिस्तान के बीच एक और मुकाबला हो सकता है, अगर दोनों टीमें फाइनल में पहुंचती हैं। तो आइए समझते हैं, ऐसा कैसे संभव हो सकता है।

सुपर-4 चरण में रविवार को भारत के खिलाफ 6 विकेट की हार ने पाकिस्तान की फायनल के लिये क्वालिफाइ करने की उम्मीदों को झटका दिया है। लेकिन यह हार पाकिस्तान को टूर्नामेंट से बाहर नहीं करती, क्योंकि यह नॉकआउट मुकाबला नहीं था, बल्कि राउंड-रॉबिन फॉर्मेट में खेला गया सुपर-4 मुकाबला था।

जहाँ, भारत ने इस जीत के साथ फाइनल की ओर एक मज़बूत कदम बढ़ा दिया है, वहीं, सलमान आगा की अगुवाई में पाकिस्तान को बचे हुए दोनों मुकाबले जीतने होंगे, ताकि वे टूर्नामेन्ट में सूर्यकुमार यादव की टीम से तीसरी बार भिड़ सकें।

पाकिस्तान का अगला सुपर- 4 मैच मंगलवार को श्रीलंका से होगा। श्रीलंका ने ग्रुप-बी में सभी तीन मैच (बांग्लादेश, अफगानिस्तान, हांगकांग) जीतकर टॉप किया था, लेकिन सुपर-4 का पहला मुकाबला वे शनिवार को बांग्लादेश से हार चुके हैं।

पाकिस्तान को हर हालत में श्रीलंका को हराना होगा। अगर पाकिस्तान श्रीलंका से हारता है, तो टूर्नामेंट से उसका बाहर होना तय माना जा सकता है।

अगर पाकिस्तान, श्रीलंका को हरा देता है, तो उसका अगला मुकाबला गुरुवार को बांग्लादेश से होगा। अगर पाकिस्तान यह मैच भी जीतता है, तो उनकी फाइनल की राह लगभग तय हो जाएगी। एशिया कप फायनल रविवार को होगा। ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि अभी श्रीलंका और बांग्लादेश भी फायनल की दौड़ से बाहर नहीं हुये हैं। जहाँ बांग्लादेश ने पहले ही एक जीत दर्ज कर ली है, वहीं, श्रीलंका की टीम भी किसी भी टीम को हराने की क्षमता रखती है।

हालाँकि भारत ने सुपर-4 में पाकिस्तान को हराकर शानदार शुरुआत की है, लेकिन फाइनल में उसकी जगह अभी पक्की नहीं हुई है।

भारत को दो और मैच खेलने हैं, बुधवार को बांग्लादेश से, तथा शुक्रवार को श्रीलंका से। भारत को फायनल में पहुंचने के लिये, इनमें से कम से कम एक मैच और जीतना होगा। लेकिन सूर्यकुमार यादव की टीम अपने शत प्रतिशत जीत के रिकॉर्ड को बरकरार रखना चाहेगी और सुपर 4 के शेष दोनों मुकाबले जीतने की कोशिश करेगी।

चीन ने ''के वीज़ा'' शुरु किया

बीजिंग, 22 सितंबर। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के द्वारा एच-1बी वीज़ा पर भारी भरकम फीस लगाने के बाद पूरी दुनिया में अफरा-तफरी का माहौल है। ट्रंप के फैसले से खासकर भारत को तगड़ा झटका लगा है। मगर, जहां एक तरफ अमेरिका विदेशी

- ट्रंप के एच-वन बी वीज़ा का शुल्क बढ़ाने के आदेश के बाद चीन ने ग्लोबल टैलेंट को आकर्षित करने के लिए वीज़ा की नई कैटेगरी शुरु की है।

कर्मचारियों के लिए अपने दरवाजे बंद कर रहा है, तो दूसरी तरफ चीन ने ग्लोबल टैलेंट्स के लिए दरवाजे खोलने का फैसला कर लिया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अब समय आ गया है कि मानहानि को अपराध की कैटगरी से बाहर कर दिया जाए' - सुप्रीम कोर्ट

वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने बहस करते हुए कहा कि भारत ही उन चन्द लोकतांत्रिक देशों में एक है, जहाँ मानहानि को ''क्रिमिनल ऑफैंस'' माना जाता है

- भारतीय न्याय संहिता की धारा 356 में मानहानि को अपराधिक कृत्य माना गया है। यह धारा आईपीसी की धारा 499 की जगह आई है। सुप्रीम कोर्ट ने 2016 में धारा 499 की वैधता को कायम रखा था, तब सुब्रमण्यम स्वामी, केजरीवाल व राहुल गांधी समेत कई नेताओं ने इसकी वैधता को चुनौती दी थी।
- द वायर में छपे एक आलेख पर जेएनयू की एक पूर्व प्रोफेसर अमिता सिंह ने मानहानि का मुकदमा दायर किया था और इस केस पर एक मजिस्ट्रेट ने वायर को सम्मन भेजा था जिसके खिलाफ वायर ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितंबर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दिल्ली की एक ट्रायल कोर्ट में समाचार संगठन द वायर के खिलाफ लंबित मानहानि मामले की सुनवाई के दौरान टिप्पणी की कि अब मानहानि को अपराध की श्रेणी से बाहर करने का समय आ गया है।

न्यायमूर्ति एम.एम. सुंदरेश और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने यह टिप्पणी उस याचिका की सुनवाई के दौरान की, जिसमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) की प्रोफेसर अमिता सिंह द्वारा द वायर के खिलाफ दायर मानहानि मामले में जारी समन को चुनौती दी गई थी।

न्यायालय ने ''द वायर'' का संचालन करने वाली संस्था फाउंडेशन फॉर इंडिपेंडेंट जर्नलिज़्म द्वारा दायर याचिका पर प्रोफेसर अमिता सिंह को नोटिस जारी किया।

न्यायमूर्ति सुंदरेश ने टिप्पणी की, ''मुझे लगता है अब समय आ गया है कि इसे अपराध की श्रेणी से बाहर किया जाए।'' वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, जो समाचार पोर्टल की ओर से पेश हुए, ने न्यायालय की इस टिप्पणी से सहमति जताई।

भारतीय न्याय संहिता की धारा 356 के तहत अब मानहानि एक आपराधिक अपराध है। यह धारा पहले की भारतीय दंड संहिता की धारा 499 की जगह लाई गई है।

भारत उन कुछ लोकतांत्रिक देशों में से एक है जहाँ मानहानि एक आपराधिक अपराध है, जबकि अधिकांश देशों में इसके लिए केवल दीवानी उपाय उपलब्ध हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने 2016 में आइपीसी की धारा 499 की वैधता को बरकरार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दिल्ली दंगे मामले में सुप्रीम कोर्ट का दिल्ली पुलिस को नोटिस

नयी दिल्ली, 22 सितंबर। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली में 2020 हुए दंगों के आरोपियों में शामिल

- सुप्रीम कोर्ट ने 2020 के दिल्ली दंगों में कथित आरोपी, शरजील इमाम, उमर खालिद व अन्य की जमानत याचिकाओं पर सुनवाई करते समय ये नोटिस जारी किए हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के पूर्व छात्रों शरजील इमाम, उमर खालिद और अन्य की ज़मानत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

चापलूसी तीन घृणित दुर्गुणों से बही है–असत्य, दासत्व और विश्वासघात। –अज्ञात

सरकार का एक ही काम, उलझाओ सुबह और शाम

2014 जून में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी तो एक आशा जगी थी कि सरकारी कामकाज में सरलीकरण होगा तथा जनता को अनावश्यक रूप से सरकारी दफ्तरों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। उन्होंने कई बार सार्वजनिक सभाओं में यह कहा कि उनका उद्देश्य श्रेष्ठ शासन और न्यूनतम सरकार का रहेगा । इसका अर्थ हुआ कि सरकारी कार्यालय के द्वारा आम नागरिकों के काम करने में रोड़े नहीं लगाए जाएंगे ताकि वे अपनी क्षमता और प्रतिभा के अनुसार स्वयं प्रगति करें तथा देश की उन्नति में भी योगदान कर सकें।

भाजपा सरकार के 11 वर्ष के बाद, होना तो ऐसा चाहिए था कि नागरिक के सभी काम सरलता से होते। उसके जीवन में आने वाली सरकारी उलझनें सुलझनी चाहिए थीं । आज की स्थिति को देखें तो लगता है कि सामान्य नागरिक के प्रत्येक काम जैसे जन्म प्रमाण पत्र या निवास प्रमाण पत्र बनवाना हो, छात्रवृत्ति के लिए सरकारी योजना का लाभ लेना हो, आयुष्मान योजना में इलाज कराना हो, नया उद्यम प्रारंभ करना हो, भर्ती परीक्षा में भाग लेना हो, अपने मकान का नक्शा पास कराना हो, ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना हो, हर काम में नागरिक के जीवन में उलझनें पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गई हैं। ऐसा नहीं है कि पहले की सरकारों में भ्रष्टाचार और परेशानियां नहीं थीं, किंतु इस सरकार ने उन्हें दूर करने का वादा किया था। इसलिए इससे अपेक्षा भी बहुत अधिक बढ़ गई थी। इस आलेख में हम यह विश्लेषण उन्हीं अपेक्षाओं के संदर्भ में करेंगे।

डिजिटाइजेशन, जिसे हर समस्या के हल के रूप में सरकार द्वारा लाया गया, उसने अधिकांश गरीब लोगों की मुसीबतें और बढ़ा दीं, क्योंकि वे इस प्रणाली का उपयोग करने में सक्षम ही नहीं हैं। सरलीकरण के नाम पर जितने भी आदेश सरकार ने जारी किए, उनसे जटिलता और बढ़ गई है। इस धरातलीय तथ्य को प्रमाणित करने के लिए कुछ उदाहरण उपयुक्त होंगे।

सरकार ने फर्जी राशन कार्ड धारकों के नाम हटाने के लिए बायोमेट्रिक सिस्टम लागू किया। सैद्धांतिक रूप से इसमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती । कुछ समय बाद यह देखा गया कि मजदूरी करने वाले, घरों पर बर्तन साफ करने वाले निर्धन व्यक्तियों की उंगलियों के निशान मिट जाने से उनके बायोमेट्रिक निशान रिकॉर्ड से मिलान नहीं होते थे। इस आधार पर उन्हें फर्जी मानकर उनका राशन बंद कर दिया गया। इसे पुन: जारी करवाने की प्रक्रिया में कई सामाजिक संस्थाओं को अत्यंत परेशानियों का सामना करना पड़ा। जो निर्धन व्यक्ति नियमित रूप से राशन ले रहे थे, उन्हें इससे वंचित होना पड़ा। इससे उनकी उलझन और बढ़ गई।

सामान्यतया, ग्रामीण क्षेत्रों में अथवा शहरी कच्ची बस्तियों में फॉर्म भरते समय नाम के अक्षरों में कभी-कभार कोई छोटी-मोटी गलती हो जाया करती है। अब ऐसा होने पर, वे किसी भी प्रकार के सरकारी लाभ से वंचित हो जाते हैं ,क्योंकि अधिकांश योजनाओं की प्रक्रिया को ऑनलाइन कर दिया गया है । उदाहरण के लिए, हमारे यहां काम करने वाले एक व्यक्ति के पिता का नाम एक दस्तावेज में 'विजय कुमार' लिखा हुआ था और किसी दूसरे में 'वी के' लिखा हुआ था, इस कारण उनका प्रार्थना पत्र निरस्त कर दिया गया और वे सभी योजनाओं के लाभ से वंचित हो गए, जबकि उनकी अन्य सारी सूचनाएं सही अंकित थीं। इन दस्तावेजों को दुरुस्त करने की प्रक्रिया इतनी जटिल है कि उन्होंने इस लाभ को छोड़ देना ही अधिक अच्छा माना, बजाय इसके कि वे विभिन्न सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाते और दैनिक मजदूरी से भी हाथ धो बैठते।

बैंक खाता खुल जाने के बाद भी हर 3 वर्ष में केवाईसी का प्रावधान किया गया है। अधिकांश गरीब व्यक्तियों के लिए ऑनलाइन केवाईसी को अप डेट करना कतई संभव नहीं है। इस कारण बैंक से जुड़ी हुई सुविधाओं से वे वंचित हो गए हैं। सारी प्रक्रियाएं ऑन लाइन होने के कारण गरीब, अशिक्षित लोगों की छोटी सी भी गलती उनके लिए कई प्रकार की मुसीबतें पैदा कर देती है।

निर्माण श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति की बहुत अच्छी योजना भारत सरकार की है। इस योजना के अंतर्गत बहुत ही कम बच्चों को लाभ मिल पा रहा है क्योंकि पूरी व्यवस्था ऑनलाइन है और कोई उनकी मदद करने वाला नहीं है । आवेदन तो वह ऑनलाइन जैसे-तैसे कर लेते हैं किंतु उसके बाद भी उन्हें छात्रवृत्ति स्वीकृत क्यों नहीं हो रही है, यह बताने वाला विभाग में कोई नहीं है । जब भी श्रम विभाग में संपर्क किया जाता है तो उन्हें केवल एक ही उत्तर मिलता है कि वे 'कुछ नहीं' कर सकते हैं, क्योंकि सारी व्यवस्था ऑनलाइन है। यह 'कुछ नहीं' अधिकारियों की सेवा पूजा होते ही 'सब कुछ' में परिवर्तित हो जाता है ।

इसका अर्थ यह हुआ कि भ्रष्टाचार कम होने की बजाय चाहे-अनचाहे, जाने-अनजाने, पहले से अधिक बढ़ गया है। इससे केवल ई मित्र वाले पैसा बना रहे हैं।

आज स्थिति यह हो गई है कि बिना आवश्यक दस्तावेज के, आपको वांछित प्रमाण पत्र मिल जाएगा, यदि आप संबंधित अधिकारियों /कर्मचारियों की 'इच्छा' पूर्ति कर सकते हैं। यदि आप ईमानदारी से अपना काम करना चाहते हैं तो उसके लिए आपके पास कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है। उदाहरण के लिए, प्राथमिक विद्यालय की मान्यता प्राप्त करने के लिए इतने कड़े मापदंड बना रखे हैं कि कोई भी स्वैच्छिक संस्था उनकी पूर्ति नहीं कर सकती, किंतु यदि आप धरातल पर देखें तो अनेक ऐसे विद्यालय चल रहे हैं जहां न खेल के मैदान हैं, न शौचालय न पर्याप्त शिक्षक। इसके विपरीत, यदि कोई ईमानदारी से संस्था काम करना चाहती है, तो ऑनलाइन प्रक्रिया की आड़ में उनके प्रार्थना पत्र कभी भी स्वीकृत नहीं होते। जब कभी कोई उनके यहां निरीक्षण के लिए आता है, तो उसकी रिपोर्ट भी इस पर निर्भर करती है कि उसकी कितनी 'सेवा पूजा' की गई है।

डिजिटाइजेशन, जिसे हर समस्या के हल के रूप में सरकार द्वारा लाया गया, उसने अधिकांश गरीब लोगों की मुसीबतें और बढ़ा दीं, क्योंकि वे इस प्रणाली का उपयोग करने में सक्षम ही नहीं हैं। सरलीकरण के नाम पर जितने भी आदेश सरकार ने जारी किए, उनसे जटिलता और बढ़ गई है। इस धरातलीय तथ्य को प्रमाणित करने के लिए कुछ उदाहरण उपयुक्त होंगे।

यही स्थिति संस्थाओं के पंजीकरण की है । हाल ही में एक आदेश जारी हुआ है जिसके द्वारा सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट में पंजीकृत सभी स्वैच्छिक संस्थानों को देवस्थान विभाग में ट्रस्ट के रूप में पंजीकरण कराना आवश्यक कर दिया गया है । इसके अभाव में उन्हें आयकर अधिनियम की धारा 12A और 80G में मिलने वाले लाभ से वंचित कर दिया जाएगा। राजस्थान में हजारों की संख्या में शैक्षिक संस्थाएं हैं और देवस्थान विभाग की यह क्षमता ही नहीं है कि वे इतनी संस्थाओं का ट्रस्ट के रूप में पंजीयन कर सके। इसके कारण भ्रष्टाचार चरम पर है। हमारे परिचित एक सामाजिक संस्थान से जुड़े हैं । उन्होंने बताया कि उन्हें इस काम के लिए देवस्थान विभाग के इंस्पेक्टर/ सहायक आयुक्त के पास 40 बार जाना पड़ा, 8 महीने लगे और 20000 की रिश्वत दी गई तब उनका कार्य हो पाया। कल्पना कीजिए, केवल इस एक आदेश ने संस्थाओं के लिए कितनी समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं। स्वैच्छिक संस्थाएं समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास या सशक्तिकरण के कार्य में अपना समय लगाएं या केवल देवस्थान विभाग के कार्यालय के चक्कर ही काटते रहें। यह उल्लेखनीय है कि ये संस्थाएं पहले से ही सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1958 में पंजीकृत हैं और इसी अनुसार वर्षों से कार्य कर रही हैं । अचानक देवस्थान विभाग में अतिरिक्त पंजीकरण का प्रावधान करके, इन संस्थाओं के लिए बहुत बड़ी उलझन पैदा कर दी गई है। जो संस्थाएं बहुत पुरानी हैं, उनसे कहा जाता है कि वे संस्थापक सदस्यों को उनके सम्मुख प्रस्तुत करें । यह नहीं सोचा गया कि जो व्यक्ति दुनिया में ही नहीं है उन्हें देवस्थान विभाग के संबंधित अधिकारी के समक्ष किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है? एक संस्था के पदाधिकारी ने व्यंगात्मक रूप से देवस्थान विभाग के अधिकारी को बताया कि संस्थापक सदस्य स्वर्गवासी हो गए हैं । वहां के टिकट की व्यवस्था वे कर सकते हैं। विभाग का कोई कर्मचारी वहां जाकर उनसे हस्ताक्षर करा ले।

पहला बड़ा कदम मोदी सरकार ने 2016 में नोटबंदी करके उठाया था। इसका उद्देश्य आतंकवाद की समाप्ति, भ्रष्टाचार पर अंकुश एवं काले धन को समाप्त करना था। यूपीआई पेमेंट की बढ़ती व्यवस्था के बावजूद देश में जितनी नकदी नोटबंदी के समय उपलब्ध थी, उससे कहीं अधिक आज प्रचलन में है। जिस प्रकार से विभिन्न अधिकारियों/नेताओं के घरों पर छापों में करोड़ों / अरबों रुपए के नोट पाए जाते हैं एवं जिस प्रकार चुनाव प्रचार में पैसा पानी की तरह बनाया जाता है, उससे तो यह कतई नहीं लगता कि भ्रष्टाचार में कोई कमी आई है एवं काला धन समाप्त हुआ है । विभिन्न अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों की रिपोर्ट के अनुसार स्विट्जरलैंड में जमा बैंकों में भारतीयों की धन राशि पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। कानून को कड़ा करने के दावों के बावजूद माल्या, ललित मोदी, नीरव मोदी, निखिल चौकसी जैसे लोग हजारों करोड़ का चूना देश की जनता को लगाकर फरार हो गए हैं। सरकार आज तक इन्हें वापस भारत लाकर सजा तक नहीं दे पाई है । हाल ही में अनिल अंबानी के विरुद्ध भी 17000 करोड़ के बैंक फ्रॉड का मामला सामने आया है।

ऐसा लगता है कि सरकार की सारी नीतियां केवल कुछ समृद्ध लोगों की समृद्धि में और अधिक वृद्धि करने के उद्देश्य से बनाई जाती हैं। जो लोग धरातल पर काम कर रहे हैं, चाहे व्यक्तिगत रूप से अथवा संस्थाओं के माध्यम से, उनके काम में बहुत समस्याएं पैदा कर दी गई हैं ।

वनों की कटाई के कई बार समाचार आते रहते हैं और सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस बारे में कई सख्त आदेश भी जारी किए गए हैं। इन सबके बावजूद मेरे गृह नगर उदयपुर के आसपास की सारी हरी भरी पहाड़ियां काटकर वहां पर अस्पताल और बड़े होटल बना दिए गए हैं। पहाड़ियों का व्यवसायिक उपयोग के लिए इस प्रकार का दोहन शायद ही कभी हुआ हो। इसी प्रकार एक ओर जहां झीलों से 500 मीटर की दूरी पर किसी भी प्रकार के निर्माण कार्य पर प्रतिबंध है और इस कारण अनेक छोटे-छोटे मकान मालिकों को नोटिस भेजकर उनके काम को रुकवाया जाता है, वहीं दूसरी ओर बड़े-बड़े पांच सितारा होटलों को झील के किनारे और बीच में बनाने की अनुमति दे दी गई । नागरिकों के लिए इस प्रकार के बड़े होटल बनते हुए देखना कष्टकारी है।

कहा जाता है कि इन होटलों के निर्माण की अनुमति के लिए करोड़ों रुपए का लेनदेन होता है। क्या जिन अधिकारियों/मंत्रियों ने इस प्रकार के निर्माण की अनुमति दी, वे कड़े दंड के भागी नहीं होने चाहिएं?

अंत में कुल मिलाकर हम यही कह सकते हैं कि वर्तमान समय में यह कहावत अच्छी तरह लागू होती है कि "समरथ को नहीं दोष गुसाईं". आम व्यक्ति के लिए तो सरकार सुबह से शाम तक उसकी उलझन ही बढ़ा रही है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

क्रिटिकल टेलीकम्यूनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर की सूची : गजट नोटिफ़िकेशन जारी

टेलीकॉम नेटवर्क सुरक्षा व डिजिटल सेवाओं में विश्वास बढ़ेगा

विकास आसावत

क्रिटिकल टेलीकम्यूनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर (सीटीआई) की अधिसूचना दूरसंचार नेटवर्क की सुरक्षा हेतु महत्वपूर्ण पहल है। इस अधिसूचना को दूरसंचार अधिनियम, 2023 व पिछले वर्ष जारी सीटीआई के नियम की निरंतरता में देखा जा सकता है। पिछले वर्ष सितम्बर में लेबनान और सीरिया के कुछ हिस्सों में सैकड़ों हैंडहेल्ड रेडियो पेजर लगभग एक साथ फटने की घटना टेलीकॉम डिवाइस या नेटवर्क में सुरक्षा चूक के बारे में सोचने को मजबूर कर देती है. जुलाई 2024 में माइक्रोसॉफ्ट के साइबर सुरक्षा सहयोगी क्राउडस्ट्राइक द्वारा एक कंटेंट अपडेट के व्यवधान के कारण विंडोज प्लेटफॉर्म पर चलने वाले सिस्टम ठप्प हो गए व भारत समेत अन्य देशो में बैंक, एयरलाइंस, शेयर ट्रेडिंग परिचालन प्रभावित हुआ। इस तरह की घटनाओं को देखते हुए टेलीकॉम डिवाइस, नेटवर्क, इंफ्रास्ट्रक्चर का पूर्ण सुरक्षित, मज़बूत, भरोसेमंद व लचीला होना समय की मांग है।

क्रिटिकल टेलीकम्यूनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर (सीटीआई) :- टेलीकॉम सेक्टर में उपकरण सुरक्षा के सम्बन्ध में भारत सरकार ने हाल ही जुलाई माह में दूरसंचार कानून के तहत सेवा प्रदाताओं के अधीन नेटवर्क के कुछ भागों को गजट नोटिफ़िकेशन जारी कर क्रिटिकल टेलीकम्यूनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर (सीटीआई) घोषित किया है। कानून के तहत इन इंफ्रास्ट्रक्चर में व्यवधान और विच्छेद से आर्थिक, लोक स्वास्थ्य या राष्ट्रीय सुरक्षा पर विपरीत प्रभाव होता है। वहीं गत वर्ष नवंबर में टेलेकम्यूनिकेशन्स (क्रिटिकल टेलीकम्यूनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर) रूल्स के नोटिफिकेशन के अंतर्गत प्रत्येक दूरसंचार इकाई को यह सुनिश्चित करना होगा कि क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर जिसमे इनके पुर्जे, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर भी शामिल हैं, अनुपालना में हैं।

इकाई यह भी सुनिश्चित करेगी कि क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर एसेंशियल व इंटरफेस आवश्यकताओं, इंडियन टेलीकॉम सिक्योरिटी असुरेन्स रेक्विरमेंट्स व अनुरूपता मूल्यांकन आदि के अनुरूप हो। जुलाई में जारी राज्यसभा की अधीनस्थ विधान समिति की रिपोर्ट की अनुसंशा के अनुसार विदेशी निर्मित उपकरणों से उत्पन्न विशिष्ट जोखिमों को कम करने के लिए लक्षित कार्रवाई की आवश्यकता है।

मोबाइल सेवाओं के सम्बन्ध सीटीआई :- नोटिफिकेशन में 4जी मोबाइल सेवाओं के सम्बन्ध में होम लोकेशन रजिस्ट्रर (एचएलआर-उपभोक्ता के फ़ोन नंबर, लोकेशन व सर्विसेज की जानकारी का डेटाबेस) की परिचालन सहायता प्रणाली और ग्राहक संबंध मॉड्यूल को क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर के भाग के रूप में सूचित किया गया है। वहीं 2जी और 3जी मोबाइल सेवाओं के सम्बद्ध में उक्त दो भाग के अतिरिक्त सिग्नल ट्रांसफर पॉइंट्स को क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर के भाग के रूप में सूचित किया गया है। 2जी सेवाओं में टेक्स्ट व मल्टीमीडिया मैसेज व लो स्पीड, उन्नत वॉइस क्वॉलिटी आदि शामिल है। वहीं 3जी का सम्बन्ध 3.1 एमबीपीएस तक स्पीड, ब्रॉडबैंड, अधिक डाटा ट्रांसफर रेट आदि से है। 4जी में बेहतर डाटा कम्प्रेशन व फ्रीकवेंसीज़ के व्यापक रेंज के कारण तेज डाटा ट्रांसफर स्पीड और उन्नत नेटवर्क क्षमता मिलती है और इस कारण अपने से पूर्व जनरेशन सेवाओं से बेहतर होता है।

इसी नोटिफिकेशन में आगे 5 जी मोबाइल सेवाओं के सम्बन्ध में सीआरएम के अतिरिक्त ऑथेंटिकेशन सर्वर फंक्शन और एकीकृत डेटा प्रबंधन (यूडीएम-उपभोक्ता के रिकार्ड्स को मैनेज करना) की परिचालन सहायता प्रणाली को क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर का भाग माना गया है। 5जी वैश्विक वायरलेस मानक है जो तेज गति, अल्ट्रा लो लेटेंसी, अधिक विश्वसनीयता, विशाल नेटवर्क क्षमता और नए ऍप्लिकेशन्स और सेवाओं को इनेबल करता है। इसी क्रम में इंटरनेट, बुनयादी, राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय लंबी दूरी व उपग्रह सेवाओं के क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को भी निर्धारित किया गया है।

सजा का प्रावधान :- मत्वपूर्ण पहलु यह भी है कि दूरसंचार के 2023 एक्ट के अनुसार, कोई भी व्यक्ति, संस्थान आदि यदि क्रिटिकल टेलीकम्यूनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर को हानि पहुंचता है तो उसको तीन वर्ष का कारावास या दो करोड़ का जुर्माना या दोनों की सजा भुगतनी पड़ सकती है। जबकि गैर क्रिटिकल टेली कम्यूनिकेशन इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए यह सजा नुकसान के लिए मुआवज़ा और पचास लाख रुपये तक का जुर्माना पर सीमित है।

नेटवर्क सुरक्षा व अखंडता को मजबूती :- सेवा की निरंतरता के लिए कुछ खतरों में प्राकृतिक घटनाएँ (मौसम, भूकंप, बाढ़ और बिजली); आग, विस्फोट, दुर्घटनाओं, आंतरिक तोड़फोड़ और आतंकवाद से होने वाली क्षति है। अन्य खतरों में लॉस ऑफ़ की इनपुट जैसे इलेक्ट्रिकल पावर, सॉफ़्टवेयर फेलियर, इलेक्ट्रॉनिक इंटरफेरेंस जैसे अनुपयुक्त संकेत व फ्रीक्वेंसी, हाई वोल्टेज, ट्रैफिक ओवरलोड, मैलवेयर, हैकिंग, विशेष सिग्नलिंग मेसेजस द्वारा नेटवर्क में गड़बड़ी करना शामिल है। क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर नियम व सूची का उद्देश्य डिजिटल सोसाइटी का आधार बनने वाले दूरसंचार नेटवर्क की सुरक्षा, अखंडता, फ्लैक्सिबिलिटी और परिचालन निरंतरता को मज़बूत करना है। ये नियम अनुपालन मानकों, रिपोर्टिंग आवश्यकताओं और जोखिम न्यूनीकरण तंत्रों के माध्यम से क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को साइबर खतरों सहित अन्य जोखिमों से सुरक्षित रखने में सहयोगी है। क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को चिन्हित करने के लक्ष्य में डाटा लीक के जोखिम को काम करना, साइबर खतरे व जासूसी के प्रति प्रतिक्रिया में सुधार और डिजिटल सेवाओं में अधिक विश्वास कायम करना है। के किसी एक हिस्से के खराब होने पर, उपकरणों के लिए डुप्लिकेट या ट्रिपल बैकअप और विविध ट्रांसमिशन रूटिंग जैसे सोलुशन कारगर होते है। जब नेटवर्क के सभी हिस्सों को लचीला नहीं बनाया जा सकता और ऐसे मामलों में बहाली और रिपेयर की पूरक प्रक्रियाओं को मज़बूत करना होगा।

विकास आसावत,
पेटेंट अटॉर्नी एवं एडवोकेट।

शहरी सेवा शिविर में हर पात्र को मिल रहा है योजनाओं का लाभ

नागौर, राजसमन्द और भीलवाड़ा-जिला कोई भी हो, शिविर में तत्काल समस्याओं का समाधान हो रहा है

नागौर नगर परिषद् के नेहरू पार्क में लगे शहरी सेवा शिविर में 65 वर्षीया दिव्यांग रामेश्वरी देवी पत्नी नोलाराम निवासी डेह रोड़ नागौर ने बताया कि पिछले लम्बे समय से इनको वृद्धावस्था पेंशन, विकलांग पेंशन एवं राशन नहीं मिल रहा। आधार कार्ड चैक करवाने पर पाया गया कि आधार कार्ड में जुड़े मोबाइल नम्बर सही नहीं थे व जन आधार भी आधार कार्ड से जुड़ा नहीं था। इस पर शिविर प्रभारी ने सांख्यिकी विभाग के अधिकारी को मौके पर बुलाकर जन आधार में डेटा अपडेट करवाया। सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग के अधिकारी से जन आधार का ई-केवाईसी करवाया। ई-मित्र से रामेश्वरी का पेंशन आवेदन करवाया गया। उसके बाद यूनिक डिस्एबिलिटी कार्ड के लिए ऑनलाईन आवेदन करवाकर उसे सरकारी वाहन से जे.एल.एन. अस्पताल भेजकर मेडिकल बोर्ड से दिव्यांगता की जांच करवायी गई तथा जांच के आधार पर यह कार्ड जारी करवाया गया। शिविर में ही सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग को सहायक उपकरण योजना में आवेदन करवाया गया। उसके बाद वृद्ध महिला को ट्राई साईकिल का लाभ कैम्प में ही दिया गया। अब विकलांग वृद्ध महिला रामेश्वरी देवी व उनका परिवार काफी खुश है। 22 सितम्बर को इन्हे पुन: शिविर में बुलाकर इनकी विकलांग पेंशन व एनएफएसए राशन में नाम जुड़वा कर इनको तुरन्त फायदा दिलवाया गया।

गरीबी और बीमारी में निक्षय पोषण योजना ने दिया रामा रावत को सहारा :- भीलवाड़ा जिले के शिवनगर, गागेड़ा निवासी रामा रावत भी उनमें से एक हैं, जिन्हें गरीबी और बीमारी की मार के बीच निक्षय पोषण योजना ने जीने का नया सहारा दिया।

शिविर के दौरान जिला कलेक्टर जसमीत सिंह संधू ने रामा को पोषण किट भेंटकर संबल प्रदान किया। रामा लंबे समय से खांसी और कमजोरी से जूझ रहे थे। आयुष्मान आरोग्य मंदिर गागेड़ा पर बलगम की जांच से पुष्टि हुई कि वे टीबी रोग से पीड़ित हैं। उसका तुरंत गागेड़ा उप स्वास्थ्य केन्द्र पर डॉट्स उपचार प्रारंभ किया गया। रामा की आर्थिक स्थिति कमजोर होने से उन्हें पर्याप्त पोषण नहीं मिल पा रहा था। इस स्थिति को देखते हुए ग्रामीण सेवा शिविर के दौरान उसे आटा, चावल, दाल, तेल व अन्य खाद्य सामग्री से युक्त पोषण किट दी गई। इससे उसे एक तरफ टीबी से लड़ने में तो सहायता मिलेगी ही, आटा, दाल, चावल खरीद में लगने वाले धन की बचत होगी।

खेत का बंटवारा हुआ, दिलों का हुआ मिलन, दो भाईयों के चेहरे पर लौटी मुस्कान :- राजसमंद जिले के ननाणा ग्राम पंचायत के टोकरा की ढाणी निवासी धर्मसिंह एवं प्रेमसिंह पुत्र अर्जुनसिंह की वर्षों पुरानी समस्या आखिरकार ग्रामीण सेवा शिविर के माध्यम से हल हो गई। पिता के निधन के बाद दोनों भाईयों ने आपसी सहमति से कृषि भूमि का मौके पर विभाजन तो कर लिया था लेकिन राजस्व रेकार्ड में अलग खाता नहीं खुलने के कारण वर्षों से उन्हें योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा था। यह पीड़ा हर बार उन्हें हताश कर देती थी। ऐसे में राज्य सरकार द्वारा जिले के आमेट पंचायत समिति अंतर्गत ग्राम पंचायत खाखरमाला में आयोजित ग्रामीण सेवा शिविर की जानकारी मिलने पर दोनों भाई आशा की किरण लेकर शिविर प्रभारी उपखण्ड अधिकारी एवं तहसीलदार से मिले। तुरंत कार्रवाई करते हुए भू-अभिलेख निरीक्षक और पटवारी को मौके पर भेजा गया, जिन्होंने विभाजन पत्र तैयार कर नकल प्रदान की। विभाजन पत्र की नकल हाथों में आते ही दोनों भाइयों के चेहरे पर खुशी छलक पड़ी। वर्षों से रुका हुआ सपना पूरा होने पर उन्होंने प्रशासन और राजस्थान सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया।

भीलवाड़ा से पीआरओ रविन्द्र वैष्णव, राजसमंद से एपीआरओ प्रवेश परदेशी व नागौर से एपीआरओ अजीतसिंह।

भीलवाड़ा में सिंधी समाज ने 35 कर्मवीर डॉक्टरों व स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का सम्मान किया

भीलवाड़ा, (निसं)। सामाजिक सरोकारों में हमेशा अग्रणी रहने वाला सिंधी समाज रविवार को एक और अनूठी पहल का गवाह बना। पूज्य दादा हेमराजमल साहब सेवा समिति के तत्वावधान में नाथद्वारा सराय स्थित पूज्य दादा हेमराज मल भगत झूलेलाल सनातन मंदिर परिसर में भव्य सिंधु रत्न अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सिंधी समाज के 35 कर्मवीर डॉक्टरों एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को उनके चिकित्सकीय कौशल और समाज सेवा में योगदान के लिए "सिंधु रत्न प्राइड" सम्मान से अलंकृत किया गया।

सम्मानित किए गए चिकित्सकों में डॉ. वीरभान चंचलानी, गिरीश-आशा दत्ता, मनोज गंगवानी, कमल-रिचा रिजवानी, अमित थावानी, वंदना थावानी, जितेंद्र थावानी, प्रियंका-धनीश खूबचंदानी, प्रकाश-अंजू थावानी, विशाल जेठानी, मोहनदास थावानी, रोहित सचदेव, लकी नारवानी, समीर ठाकुर, अशोक खटवानी, रचना सखरानी, महिमा माखीजा, भूपेंद्र-नीलम भोजवानी, कन्हैयालाल जेठानी, वर्षा-दिलीप गजवानी सहित अन्य डॉक्टर व स्वास्थ्य कार्यकर्ता शामिल रहे। इन सभी को वैदिक मंत्रोच्चार के बीच तिलक-अक्षत, माल्यार्पण, उपरना व शाल ओढ़ाकर तथा श्रीफल व सिंधु चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह में प्रमुख अतिथि के रूप में राजमाता विजयाराजे सिंधिया चिकित्सा महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वर्षा अशोक सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा, अति. कलेक्टर शहर प्रतिभा देवथिया, पूर्व अति. कलेक्टर हुँदल विधानी, मेवाड़ यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार हरीश गुरनानी, भाजपा जिला महामंत्री अविनाश जीनगर, विधायक अशोक कोठारी के प्रतिनिधि बाबूलाल टाक, कोहिनूर सेवा समिति अध्यक्ष छीतर मल गेंगट तथा शाहपुरा के पूर्व उपप्रधान बजरंग सिंह राणावत उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिंधी सेंटूल पंचायत अध्यक्ष रमेश सभनानी व भगत टेऊं राम ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा भगवान झूलेलाल के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। इसके बाद समाज के वरिष्ठजनों, पार्षदों व अतिथियों का शाल-उपरना पहनाकर स्वागत-सत्कार किया गया।

राशिफल मंगलवार 23 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, हस्त नक्षत्र सायं 6:20 तक, ब्रह्म योग रात्रि 8:22 तक, बालव करण दिन 3:51 तक, चन्द्रमा रात्रि 2:56 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज राजयोग दिन 1:40 से आरम्भ होगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति है। आज से राष्ट्रीय आश्विन मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:20 से 10:44 तक, लाभ 10:49 से 12:14 तक, अमृत 12:14 से 1:49 तक, शुभ 3:19 से 4:49 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:20

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। भाई-बंधुओं के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मीन
घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वैज्ञानिक तरीकों से भेड़ एवं बकरी पालन के गुर बताये

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ प्रमोद कुमार यादव ने भेड़ एवं बकरी पालन प्रशिक्षण के समापन पर प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

बीकानेर, (कासं)। वैज्ञानिक भेड़ बकरी पालन के माध्यम से उद्यमिता विकास पर सात दिवसीय प्रशिक्षण सोमवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ।

प्रशिक्षण के समापन अवसर पर आयोजित समारोह में केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर,

- **भेड़ बकरी पालन में नस्ल सुधार कर कैसे उच्च गुणवत्ता वाले पशुधन को तैयार करने तथा इससे अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की**

टोंक के निदेशक डॉ अरूण कुमार तोमर ने पशुपालकों को भेड़ बकरी पालन में नस्ल सुधार कर कैसे उच्च गुणवत्ता वाले पशुधन को तैयार करने तथा इससे अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बकरी के दूध के मूल्य संवर्धन उत्पाद बनाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि वर्तमान में बकरी के दूध से बने उत्पादों की मांग बढ़ी है। ऐसे में पशुपालक वैज्ञानिक तरीकों से भेड़ एवं बकरी पालन कर आय का अतिरिक्त स्त्रोत सृजित कर सकते हैं। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ प्रमोद कुमार यादव ने कहा कि पशुपालक प्रशिक्षण से मिली जानकारी को व्यावहारिक रूप से अपनाते हुए अधिकाधिक लाभ लें। इससे अन्य लोग भी प्रेरित होंगे। विश्वविद्यालय द्वारा यह भेड़ बकरी पालन से संबंधित इस वर्ष यह पांचवां प्रशिक्षण आयोजित किया गया है।

इस अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ नीना सरीन ने कहा कि भेड़ बकरी पालन में कम लागत के कारण उद्यमिता विकास के माध्यम से स्वरोजगार और रोजगार सृजन का बेहतर अवसर मिल सकता है। उन्होंने बताया कि पशुपालकों और किसानों को प्रशिक्षण के दौरान भेड़ बकरी पालन पोषण के वैज्ञानिक तरीकों, प्रबंधन, सहित उद्यमिता के विभिन्न विधाओं की विस्तार से जानकारी दी गई है। प्रशिक्षण में राजस्थान के अलावा भी उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र सहित 6 राज्यों से 57 किसान शामिल हुए। पशुपालकों को सरकार की योजनाओं, बैंकिंग सेक्टर के माध्यम से ऋण प्रकिया इत्यादि की विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ शंकरलाल ने प्रशिक्षण की रूपरेखा पर विस्तार से जानकारी दी और क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ. एच. एल. देशवाल ने सभी आभार व्यक्त किया।

डॉ शंकरलाल ने बताया कि सात दिवसीय प्रशिक्षण में किसानों को विश्वविद्यालय स्थित समन्वित कृषि प्रणाली इकाई में सिरोही बकरी पालन, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान बीकानेर के मगरा, चोकला, मारवाडी भेड़ों की नस्लों के फार्मों का भ्रमण करवाया। साथ ही राजूवास बीकानेर के विभिन्न फार्मों में पशुपालकों को अलग अलग नस्लों से परिचित करवाते हुए वैज्ञानिक पोषण प्रबंधन की जानकारी दी गई।

शिविर में 75 यूनिट रक्तदान

बीकानेर, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी रानी बाजार मंडल द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर सेवा पखवाड़ा के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार भवन में किया गया।

शिविर का शुभारंभ जिलाध्यक्ष सुमन छाजेड़, जिला महामंत्री राजेन्द्र पवार, कौशल शर्मा, श्याम सिंह हाडला, जिला मंत्री धर्मेन्द्र सोलंकी, झम्कू देवी, दिलीप पुरी, मुकेश सैनी, मुकेश बन सहित अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर किया। मंडल अध्यक्ष मुकेश सैनी ने बताया कि शिविर में 101 संकल्प पत्र भरे एवं 75 यूनिट रक्तदान किया गया।

कार्यक्रम में भाजपा नेता रवि शेखर मेघवाल, बीकानेर पश्चिम विधायक जेठानन्द व्यास, सत्यप्रकाश आचार्य, सुशीला कंवर, दिलीप पुरी, मुमताज़ अली भाटी, भूपेन्द्र शर्मा, अशोक प्रजापत, अरूण जैन, नरसिंह सेवग, सुरेश भसीन, अरूण कुमार सोलंकी, जसवंत सोलंकी, ज्योति विजयवर्गीय, घेवरचंद, राजेश पंडित, सुरेश छिंपा, दिनेश भटनागर, प्रीति माहेश्वरी, ओमप्रकाश खत्री, कार्तिप्रिया आहुजा, सोमेश शर्मा, अनुप्रिया जैन, सुभद्र पाण्डेय, देवेन्द्र पुरी, हरीश भोजक, गायत्री गिरी, श्रवण सिंह बिश्नोई, राकेश बन, नितिन सोनी, दीवाकर भाटी, जय भाटिया, सोहन सिंह, पवन सुथार, पुखराज स्वामी, किशन शर्मा, विशाल गोलछा, सुशील आचार्य, चंद्रशेखर शर्मा, गोविंद भाटी, सुधा आचार्य, पुनीत शर्मा, शहर जिला बीकानेर संयोजक इन्द्र प्रकाश राव, अनूप गहलोत, सुरेश बन सहित अनेक गणमान्य अतिथि, भाजपा कार्यकर्ता एवं समाजसेवी उपस्थित रहे। रानी बाजार मंडल के उपाध्यक्ष मुकेश बन ने आभार व्यक्त किया।

अग्र बंधुओं का सामूहिक भोज

श्रीगंगानगर, (कासं)। दस हजार से ज्यादा अठा बंधुओं ने जमीन पर बैठ कर पत्तल में सामूहिक सह भोज किया।

प्रचार मंत्री दिनेश गुप्ता ने बताया कि तेज गर्मी को देखते हुए सहभोज में मेडिकल की टीम के अलावा दमकल व एम्बुलेंस की भी व्यवस्था की गई। अजय अग्रवाल ने बताया कि भगवान अग्रसेन के सिद्धांत सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय है। उनके शासनकाल में एक निम्न स्तर का व्यक्ति भी पूरे स्वाभिमान से अपना जीवन व्यतीत करता था। चारों तरफ सुख शांति का वास था।

वर्तमान समय में सबसे अधिक जरूरत महाराजा अग्रसेन की शिक्षाओं को लागू करने की है। उन्होंने बताया कि समाजवाद का उनका सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। उनके सिद्धांत से ना केवल अग्रवाल समाज का उत्थान हुआ बल्कि हर समाज की तरक्की हुई। उन्होंने कहा कि अग्रवाल समाज हमेशा सामाजिक व धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है। जरूरतमंदों की सहायता करने में समाज के लोग सबसे आगे रहते हैं।

इस कार्यक्रम में अग्रसेन महाराज के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। इस प्रश्नोत्तरी में सही जवाब देने वाले प्रतिभागियों का सम्मान किया गया। अतिथियों व समाज के लोगों को पगड़ी, दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया।

समिति की टीम ने 2 माह में सहभोज की तैयारियों को अंतिम रूप दिया। भोजन प्रसाद को 100 सेवादारों ने परोसा। भोजन प्रसाद वितरण में जयको लंगर सेवा समिति के अध्यक्ष अनिल सरावगी ने बताया कि 25 से ज्यादा सेवादारों ने ड्यूटी दी।

सार-समाचार

नए पदाधिकारियों को दायित्व सौंपा

गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति बीकानेर के नव मनोनीत पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने दायित्व ग्रहण किया।

बीकानेर, (कासं)। गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति बीकानेर महानगर की पुनर्गठित कार्यकारिणी की बैठक अंत्योदय नगर में आहुत कर नव मनोनीत पदाधिकारियों एवं सदस्यों को दायित्व ग्रहण संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष राम किशोर तिवारी के सानिध्य में करवाया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष तिवारी ने संबोधन में कहा कि भ्रूण हत्या, गर्भपात एवं लिव इन रिलेशन जैसे अनैतिक कृत्यों के कारण अनुमानित 50 लाख जन्मों की गर्भ में हत्याएं प्रतिवर्ष होने के कारण हमारे राष्ट्र की डेमोग्राफी बदल रही है जो की सोचनीय एवं अत्यंत ज्वलंत विषय है। नवनियुक्त अध्यक्ष सुरेन्द्र उपाध्याय ने राष्ट्रीय अध्यक्ष को विश्वास जताया कि बीकानेर शाखा अगले 2 वर्ष में भ्रूण हत्या जैसे जघन्य महापाप के विरूद्ध एवं संस्कार, संरक्षण के कार्यक्रमों को इस कदर गतिमान करेगी की प्रदेश की अन्य शाखाओं को प्रेरणा मिल सके। महानगर सचिव सुरेश शर्मा के अनुसार नव कार्यकारिणी में मगन चांडक एवं लक्ष्मीनारायण मोदी को संरक्षक एवं सुशील शर्मा, भुवनेश यादव, लक्ष्मण उपाध्याय को उपाध्यक्ष का दायित्व दिया गया है। इसी तरह से सहमंत्री ईश्वर दयाल कुम्हार, राजकुमार व्यास को बनाने के साथ महिला प्रभारी संतोष शर्मा एवं सह प्रभारी प्रिया शर्मा व रश्मि जैन को दिया गया है। संस्था का मीडिया प्रभारी का दायित्व गोवर्धन सोनी पत्रकार को सौंपने के साथ मालचंद पारीक, योगेन्द्र भाटी, कविता यादव एवं नरेश खत्री को विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल करने के साथ ही 32 सदस्यीय की जंबो जेट कार्यकारिणी बनाई गई है।

उस्ता कला पर प्रशिक्षण

उस्ता कला पर सात दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन समारोह को वैशाली शेरोन ने संबोधित किया।

बीकानेर, (कासं)। बीएसएफ कैम्पस स्थित आरवीटीसी प्रांगण में सोमवार को भारतीय स्टेट बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान एवं आर्मी विमेंस वेलफेयर एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में उस्ता कला पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया गया। शिविर का उद्घाटन एसोसिएशन की अध्यक्ष वैशाली शेरोन, उपाध्यक्ष प्रिया राणा एवं आरसेटी के निदेशक रूपेश शम्रा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर शर्मा ने संस्थान द्वारा संचालित गतिविधियों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं एवं महिलाओं के कौशल विकास के लिए किए जा रहे क्रियाकलापों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कैमल आर्ट बीकानेर से जुड़ी हुई कला है। इसे प्रोत्साहित करना जरूरी है। वैशाली शेरोन एवं प्रिया राणा ने आरसेटी द्वारा की जा रही गतिविधियों की सराहना की तथा समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयासों को सराहा। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त मोहम्मद हनीफ उस्ता ने प्रतिभागियों को उस्ता कला के इतिहास, महत्व एवं तकनीक के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर बीएसएफ से कर्नल चंदन सिंह चौहान, मेजर राहुल यादव तथा आरसेटी से शशिकला, कुमारी सना मिर्जा एवं सरिता सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

शंकरनाथ का निर्वाण दिवस मनाया

बीकानेर, (कासं)। नत्थूसर बास स्थित श्री नवलेश्वर मठ सिद्धपीठ विवेकनाथ की बगेची में ब्रह्मनिष्ठ सतगुरू भगवान 1008 योगी शंकरनाथ महाराज का 35 वां निर्वाण दिवस सोमवार को भक्ति भाव के साथ मनाया गया। आयोजन की शुरूआत 21 सितम्बर की रात्रि सत्संग से हुई, जिसमें भक्तों ने गुरू वाणी और भजनों का रसपान किया। शिवकुमार गहलोत ट्रस्टी ने भी अपने भजनों की प्रस्तुतियां दी। अगले दिन प्रातः श्रीमद्भागवत गीता पाठ से वातावरण शास्त्र वाणी और आध्यात्मिक ऊर्जा से गूंज उठा। उसके बाद समाधि पूजन का आयोजन वैदिक विधि-विधान से सम्पन्न हुआ, जिसका पूजन अनुष्ठान पंडित जुगल किशोर ओझा (पुजारी बाबा) और पंडित रामप्रसाद पुरोहित ने मंत्रोच्चारण के साथ किया। इस अवसर पर पूज्य योगी विलासनाथ महाराज, योगी ओमनाथ महाराज और पूज्य योगी गोविंदनाथ महाराज की उपस्थिति ने समारोह की आध्यात्मिक गरिमा को और बढ़ा दिया। कार्यक्रम में बगेची से जुड़े ट्रस्टी द्वारका प्रसाद पचीसिया, श्यामसुंदर सोनी सहित बगेची से जुड़े कई भक्त मौजूद रहे। संयोजन महंत योगी शिवसत्यनाथ महाराज के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। उनके सानिध्य में सैकड़ों की संख्या में भक्तजन एकत्रित हुए और गुरू परंपरा के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए भक्ति एवं साधना का अनुपम अनुभव किया।

भुजिया पर जीएसटी 12 से घटा 5 प्रतिशत करने से रेट कम

- **15 से 20 रुपए सस्ती हुई नमकीन, बीकानेर के भुजिया व्यापारियों ने कम किए रेट, दुकान पर लगाया बोर्ड**

बीकानेर, (कासं)। केन्द्र सरकार ने भुजिया पर लगे जीएसटी (गुड्स सर्विस टैक्स) को 12 परसेंट से घटाकर पांच प्रतिशत कर दिया है। ऐसे में भुजिया की रेट में पंद्रह से बीस रूपए की कमी आई है। बीकाजी समेत बीकानेर के भुजिया व्यापारियों ने भी अपने दाम किए हैं।

दरअसल शहर में करीब 100 से ज्यादा भुजिया बनाने की भट्टियां हैं। इससे पहले भुजिया 220 रूपए प्रति किलो के हिसाब से बेची जा रही थी। लेकिन जीएसटी कम होने के बाद 15 से 20 रूपए कम हुए है। अब इसकी कीमत 200 रूपए प्रति किलो से शुरू हो रही है। बीकाजी ने दो सौ ग्राम पैकिंग वाला भुजिया की रेट 58 रूपए कर दी है। जबकि पहले इसकी रेट 62 रूपए थी। इसी तरह चार सौ ग्राम वाले पैकेट की रेट 122 रूपए से घटाकर 110 रूपए कर दी है। वहीं बीकाजी ने अपने गिफ्ट पैक भी सस्ते किए हैं, जिसमें भुजिया की पैकिंग शामिल है। इसमें 370 रूपए वाला पैकेट अब 350 रूपए में मिलेगा। वहीं 663 रूपए वाला पैकेट अब 630 रूपए में मिल सकेगा। दरअसल इसमें मिठाई का पैकेट भी होता है। मिठाई पर जीएसटी में कोई अंतर नहीं आया है।

बीकानेर की एक अन्य बड़ी भुजिया निर्माता कंपनी भीखाराम चांदमल ने जीएसटी धमाका नाम दिया है। कंपनी के प्रचार प्रसार से जुड़े ज्ञान गोस्वामी ने बताया कि 240 रूपए प्रति किलो भुजिया की रेट घटाकर अब 224 रूपए कर दी है। भुजिया के अन्य प्रोड्क्ट्स पर भी इसी अनुपात में रेट कम की गई है। जीएसटी विशेषज्ञ एडवोकेट मदन मोहन व्यास ने बताया कि केन्द्र सरकार ने ब्रांडेड भुजिया पर जीएसटी को बारह परसेंट से घटाकर पांच परसेंट कर दिया। जो भुजिया किसी भी थैली, पैकिंग में बेचा जा रहा है। उस पर 12 प्रतिशत जीएसटी था। जो भुजिया खुले में बिना पैकिंग बेचा जा रहा था, उस पर पांच परसेंट जीएसटी था। नए आदेश में केन्द्र सरकार ने इसे समान कर दिया। अब पैकिंग किया हुआ या फिर बिना पैकिंग किया हुआ भुजिया पर जीएसटी समान रूप से पांच परसेंट ही लगेगी। इससे भुजिया की कीमत में सात प्रतिशत की कमी आई।

युवक से मारपीट कर गल्ले से रूपए निकाल ले गए

बीकानेर, (कासं)। फड़ बाजार में एक पान की दुकान पर मारपीट हो गई। काका पान भंडार के आशीष गहलोत ने कोटगेट थाने में मोहम्मद साजिद और रियाज के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।

आरोप है कि दोनों युवक दुकान पर आये और शराब पीने के लिए पैसे मांगने लगे। मना करने पर गाली गलौज पर उतर आये। बीच बचाव करने पर ओमप्रकाश के सिर में लोहे की रॉड दे मारी और गल्ले से 2530 रूपए निकाल ले गए। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

वहीं पवनपुरी स्थित कृष्णचंद मेमोरियल हॉस्पिटल के बाहर से रात एक बाइक चोरी हो गई। चोरी की घटना हॉस्पिटल के सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। बाइक जयनारायण व्यास कॉलोनी के सेक्टर पांच ई निवासी लोकेश सोनी की है। वह अपने किसी परिचित से मिलने हॉस्पिटल गया था।

सेंड प्लांट में बजरी में दबने से युवक की मौत

- **कोलायत में सिलिका सेंड प्लांट में बजरी की खान में निगरानी कर रहा था, बजरी में दबा मिला**
- **रात को होद की निगरानी करते हुए अंदर गिर गया**

बीकानेर, (कासं)। कोलायत में बजरी में दबने से एक युवक की दर्दनाक मौत हो गई। ये युवक इस खान में निगरानी का काम कर रहा था और रात से गायब था। सुबह करीब चार बजे उसका शव बजरी में दबा हुआ मिला। पुलिस ने मर्ग दर्ज करके शव का पोस्टमार्टम करवाया है।

कोलायत के एक प्राइवेट सिलिका सेंड प्लांट में बजरी की होद की निगरानी का काम रविन्द्र मरदनिया के पास था। रविन्द्र बिहार के चम्पारण का रहने वाला था। 45 साल का रविन्द्र यहां पर मजदूरी का काम करता था। उसके पास बजरी की होद के पास निगरानी का जिम्मा था। रात में वह होद की निगरानी करते हुए अंदर गिर गया। सुबह करीब चार बजे उसका शव बजरी में दबा हुआ मिला। तुरंत पुलिस को सूचना दी गई। उसे कोलायत के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। बाद में शव को मोर्चरी में शिफ्ट किया गया जहां पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया। प्रथमदृष्टया दुर्घटनावश गिरना माना जा रहा है। उसके परिवार की सदस्य जिंदा देवी ने पुलिस को मर्ग दर्ज कराई है, जिसके आधार पर छानबीन की जा रही है। घटना कोलायत के आर.आर. मिनरल्स सिलिका सेंड प्लांट की है।

रामलीला में 45 कलाकार देंगे प्रस्तुति

- **रक्षाबंधन से ही कलाकार रिहर्सल करना शुरू कर देते हैं**

बीकानेर,(कासं)। शारदीय नवरात्रा के शुरूआत से लेकर दशहरे तक नगर सेठ श्रीलक्ष्मीनाथ मंदिर प्रांगण में श्रीराम कला मंदिर संस्थान व रोटरी क्लब रॉयल्स बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में भव्य रामलीला का आयोजन किया जाता है।

संस्था के अध्यक्ष गिरिराज जोशी ने बताया कि श्रीलक्ष्मीनाथ मंदिर में पिछले 13 सालों से श्रीराम कला मंदिर संस्थान द्वारा रामलीला का आयोजन लगातार किया जा रहा है। इस बार 22 सितम्बर से 3 अक्टूबर शाम 8 बजे से देर रात्रि तक भव्य रामलीला चलेगी। जिसमें 45 कलाकार व 20 सहयोगी साथ रहते है। रामलीला का मंचन करने का मुख्य उद्देश्य में आज की युवा पीढी मोबाइल में सोशल मीडिया, नशा व जुए की लत में जा चुका है। एकांकी परिवार हो गये है जहां पर बच्चे सिर्फ अपने मोबाइल से चिपके रहते हैं।

इसी सोच के साथ युवा को लेकर रामलीला के रूप में एक पेड़ लगाया था जो आज एक वृट वक्ष बन गया है। इसके लिए रक्षाबंधन से ही कलाकार रिहर्सल करना शुरू हो जाते हैं जो डेढ़ महीने तक कड़ी रिहर्सल करते हैं जिससे की वो मंच पर अपना किरदार अच्छे तरीके से पेश कर सकें।

पुलिसकर्मी के घर में चोरी

बीकानेर, (कासं)। बीछवाल थाना क्षेत्र में चोरी की वारदातें थम नहीं रही है। इंद्रा कॉलोनी में तीन दिन में तीन घरों में चोरियां हो गई। चोरों ने रात पुलिसकर्मी के घर में सेंधमारी की है।

देशनोक थाने में कार्यरत पुलिसकर्मी पदम सिंह राठौड़ के इंद्रा कॉलोनी स्थित घर पर शनिवार रात चोरी हो गए। घर के ताले तोड़कर अज्ञात चोर 5700 रूपए नकद और सोने की अंगूठी चुरा ले गया। एक ही रात में दो घरों में चोरियां हुई थी। पदम सिंह ने थाने में परिवाद दिया है। भाजपा नेता भगवान सिंह मेड़तिया ने वार्ड में चोरी की बढ़ती घटनाओं पर रोष जताते हुए कहा कि बीछवाल थाना क्षेत्र में पुलिस गश्त की कोई व्यवस्था नहीं है। उधर बीछवाल एसएचओ गोविन्द सिंह ने कहा कि फिलहाल कोई मुकदमा दर्ज नहीं हुआ है।

मन, कर्म व विचारों से व्यक्ति बुरा भला होता है : मेहुल प्रभ सागर

- **रांगड़ी चौक के सुगनजी महाराज के उपासरे में गणिवर्य मेहुल प्रभ सागर ने प्रवचन दिए**

बीकानेर, (कासं)। रांगड़ी चौक के सुगनजी महाराज के उपासरे में सोमवार को चातुर्मासिक प्रवचन में गणिवर्य मेहुल प्रभ सागर म.सा. ने कहा कि मनुष्य मन, विचार व कर्म से बुरा भला होता है। अपने में व्याप्त बुराईयों, बुरे चिंतन व बुरे कर्मों तथा काम, कोध, लोभ व मोह आदि कषायों से अंतर से युद्ध कर व्यक्ति अच्छा इंसान बन सकता है। आत्मा के पवित्र व निर्मल स्वरूप को प्रकट कर मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

एक श्रावक के प्रश्न का उत्तर देते हुए गणिवर्य ने कहा कि कर्मों का फल सूक्ष्म रूप से तत्काल व स्थूल रूप से कर्मों की बाधाएं दूर होने पर मिलता है। परमात्मा के मंदिर में दर्शन वंदन, पूजा अर्चना करने पर तत्काल फल के रूप में सुख, शांति व शकुन की प्राप्ति होती है। उन्होंने कहा कि अन्न, पान, स्थान, शयन, वस्त्र, मन, वचन व काया तथा नमस्कार के नौ पुण्य के मार्ग है। इनमें पांच पुण्यों को मजबूत बनाने वाला मन पुण्य है। मनुष्य के कर्म बंधन व मुक्ति का एक मार्ग मन है। मन को सकारात्मक, धार्मिक सोच, पुण्य व परोपकारी कार्यों में लगाएं बुरे चिंतन, विचार व कार्यों से बचें।

इस अवसर पर मुनि मंथन प्रभ सागर म.सा. के सांसारिक वीर पिता चोहटन के ओमजी सिंघवी व सूरत के कुशल मंडोवरा व उनकी पत्नी मनीषा मंडोवरा का अभिनंदन श्री संघ की ओर से खरतरगच्छ युवा परिषद की बीकानेर इकाई के कोषाध्यक्ष अनिल खजांची व सदस्य अभिषेक डागा तथा खरतरगच्छ महिला परिषद की सदस्याओं ने किया। खरतरगच्छ युवा परिषद के अध्यक्ष अनिल सुराणा ने बताया कि साध्वीश्री दीपमाला की 15 दिन की तपस्या के अनुमोदनार्थ मंगलवार को रांगड़ी चौक में होगी।

अष्टधातु से बनी 21 फीट की गदा सूरतगढ़ पहुंची

सूरतगढ़, (कासं)। विश्व की ऐतिहासिक 21 फीट लम्बी अष्टधातु निर्मित पवित्र गदा यात्रा सोमवार को सूरतगढ़ पहुंची।

कंचन सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा बनाई 21 फीट लम्बी अष्टधातु निर्मित पवित्र गदा यात्रा सोमवार को सूरतगढ़ पहुंची। यह गदा उदयपुर में निर्माणाधीन 11 मुखी, 84 फीट ऊंचे हनुमान महाराज मंदिर का हिस्सा है। पिछले 23 महीनों से देशभर के शहरों और गांवों में भ्रमण कर रही यह गदा मंगलवार को समूचे दिन नगर भ्रमण पर रहेगी। समिति सदस्यों के मुताबिक इस पवित्र गदा का सबसे पहले सुबह 8 बजे भारत माता चौक पर श्रद्धालु श्रृद्धा से स्वागत करेंगे। इसी तरह 9 बजे भगत सिंह चौक, 10 बजे महाराणा प्रताप चौक, 11 बजे सुभाष चौक, 12 बजे सैन मंदिर, दोपहर 1 बजे बाबा श्री रामदेव जी जाल मंदिर, शाम 4 बजे चौधरी चरण सिंह चौक, रात्रि विश्राम श्री हनुमानजी खेजड़ी धाम पर होगा।

बीछवाल में तेल के तीन नमूने लिए, 1950 किग्रा. तेल सीज

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बीछवाल औद्योगिक क्षेत्र में में मैसर्स उद्योग मंदिर से निरीक्षण के दौरान तेल के नमूने लिए।

बीकानेर, (कासं)। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण आयुक्त के निर्देश पर प्रदेश में चलाये जा रहे शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहत रविवार को बीकानेर के बीछवाल औद्योगिक क्षेत्र में निरीक्षण एवं नमूनीकरण की कार्रवाई की गई।

मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी बीकानेर डॉ. पुखराज साध के निर्देशन में खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्रवण कुमार वर्मा, सुरेन्द्र कुमार एवं भानु प्रताप सिंह द्वारा बीछवाल औद्योगिक क्षेत्र में मैसर्स उद्योग मंदिर पर निरीक्षण एवं नमूनीकरण की कार्रवाई की गई। इस फर्म के निरीक्षण में तेल उत्पादन क्षेत्र में दीवारों पर धूल एवं जाले लगे हुए थे। कुछ जगह पर तेल लीक हो रहा था। उपकरणों पर चिकनाई जमी हुई थी। पक्षियों को रोकने के लिए कर्टेन नहीं लगे हुए थे, जिन्हें तुरंत दुरूस्त करने एवं साफ-सफाई रखने के निर्देश दिए गए। कार्रवाई के दौरान रिफाइंड कॉटनसीड ऑयल, फिल्टर्ड ग्राउंडनट ऑयल तथा रिफाइंड ग्राउंडनट ऑयल के 3 नमूने लिए गए। इस कार्रवाई में नमूने लेने के बाद कुल 1950 किलोग्राम तेल को जांच रिपोर्ट प्राप्त होने तक सीज किया गया। प्रयोगशाला से जांच रिपोर्ट प्राप्त होने पर नियमानुसार कार्रवाई की जायेगी।

नशे का शोक पूरा करने के लिए बाइक चोरी की

अनूपगढ़, (कासं)। घड़साना पुलिस ने बाइक चोरी के एक मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से चोरी की गई बाइक भी बरामद कर ली गई है।

घटना 21 अप्रैल 2025 की है। श्योप्रकाश ने पुलिस थाना में शिकायत दर्ज कराई थी कि उनकी बाइक घड़साना से चोरी हो गई है। मामले की जांच एएसआई भोलूराम को सौंपी गई। एएसआई भोलूराम ने कांस्टेबल शंकर और कांस्टेबल पृथ्वीराज की मदद से मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए चक 14 जीडी ढाणी, घड़साना क्षेत्र के रहने वाले विक्रम कुमार को गिरफ्तार किया। एसएचओ महावीर प्रसाद बिश्नोई के अनुसार प्रारंभिक पूछताछ में पता चला है कि आरोपी नशे का आदी है और अपनी नशे के लिए बाइक चोरी करता था। पुलिस को उम्मीद है कि आगे की पूछताछ में आरोपी से अन्य चोरी के मामलों का भी खुलासा हो सकता है।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)
Telefax No. 0154-2466652, Email :- uit_sgnr@yahoo.com Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001
क्रमांक :- नियमन/2025/ **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 21.09.2025
सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्र में रिहायशी भूखण्ड वाके चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 69 के किला नं. 22, 23 में भूखण्ड ए-37 माप 25'-0'' गुणा 62'-6'' फीट के नियमन/पट्टा हेतु आवेदक श्री महेश कुमार पुत्र श्री मिलखराज भूतना निवासी म. नं. 161 जी ब्लॉक, वार्ड नं. 28, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर इनके भूखण्ड का नियमन/पट्टा सं. 14932 दिनांक 23.05.2022 द्वारा जारी किया गया था। आवेदक/पट्टाधारक द्वारा उक्त जारी पट्टे को निर्धारित समयावधि में उपपंजीयन कार्यालय से पंजीकृत नहीं करवाया गया। आवेदक द्वारा जरिये प्रार्थना पत्र उक्त भूखण्ड के जारी पट्टे को नवीनीकरण हेतु निवेदन किया गया है। विभागीय आदेशानुसार 3 वर्ष अवधि के पश्चात पट्टा नवीनीकरण नहीं किया जाकर पुनः नया पट्टा जारी किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूखण्ड के आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/पट्टे के आधार पर नया पट्टा जारी करने के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति मय सबूत आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अन्दर अन्दर न्यास कार्यालय में कमरा नं. 17 में प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा बाद मियाद गुजरने अवधि के उपरान्त नियमानुसार आवेदक श्री महेश कुमार पुत्र श्री मिलखराज भूतना निवासी म. नं. 161 जी ब्लॉक, वार्ड नं. 28, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/जारी पट्टे के आधार पर चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 69 के किला नं. 22, 23 में भूखण्ड ए-37 माप 25'-0'' गुणा 62'-6'' फीट का नियमन/पट्टा जारी कर दिया जावेगा। यदि उक्त वर्णित क्षेत्र का पूर्व में नियमन/पट्टा जारी होना पाया गया तो वर्तमान पट्टा स्वतः ही निरस्त माना जावेगा। न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। Rajkaj Ref. No. 17881826 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कार्यालय नगर पालिका सादुलशहर, जिला श्रीगंगानगर
Email :- nagarpalikasds@yahoo.in
क्रमांक :- 2290 **आपत्ति सूचना** दिनांक : 16.09.2025
सर्व साधारण को प्रकाशित कर सूचित किया जाता है कि श्रीमती डिम्पल पत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार जाति अरोड़ा निवासी सादुलशहर द्वारा ऑनलाईन आवेदन संख्या 145422 मय दस्तावेज प्रस्तुत कर पुरानी धानमंडी दुकान नं. 31 बी साईज 10' गुणा 30' फुट यानि 33.33 वर्गगज का नामांतरण दस्तावेज बैयनामा दिनांक 22.05.2024 के आधार अनुसार अपने नाम से करवाना चाहा गया है। पुरानी धानमंडी दुकान नं. 31 बी साईज 10' गुणा 30' फुट यानि 33.33 वर्गगज का नामांतरण पालिका में 14.07.2020 को दस्तावेज वसियतनामा दिनांक 12.03.2009 के आधार अनुसार श्री सुभाषचन्द्र पुत्र श्री दरबारी लाल जाति अरोड़ा निवासी सादुलशहर के नाम से दर्ज है। श्री सुभाषचन्द्र पुत्र श्री दरबारी लाल ने साईज 10' गुणा 30' फुट दस्तावेज अपंजीकृत मुख्त्यारनामा आम दिनांक 27.09.2023 द्वारा श्री सुरेन्द्र कुमार पुत्र श्री मुरारी लाल को मुख्त्यारेआम कर दिया। श्री सुरेन्द्र कुमार पुत्र श्री मुरारी लाल बहैसियत मु.आम श्री सुभाष चन्द्र पुत्र श्री दरबारी लाल ने साईज 10' गुणा 30' फुट दस्तावेज बैयनामा दिनांक 22.05.2024 द्वारा श्रीमती डिम्पल पत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार को विक्रय कर दिया। उक्त दस्तावेज बैयनामा दिनांक 22.05.2024 के आधार अनुसार पुरानी धानमंडी दुकान नं. 31 बी साईज 10' गुणा 30' फुट यानि 33.33 वर्गगज का नामांतरण श्रीमती डिम्पल पत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार जाति अरोड़ा निवासी सादुलशहर के नाम से दर्ज किया जाना है। इस संबंध में किसी भी व्यक्ति/संस्था को आपत्ति हो तो इस प्रकाशन के सात दिवस के अंदर-अंदर मय सबूत के साथ निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है। बाद गुजरने मियाद आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा तथा आवेदन द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के अनुसार नामांतरण दर्ज करने की कार्यवाही की जावेगी। सूचित रहे। - अधिशाषी अधिकारी, नगरपालिका सादुलशहर

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)
Telefax No. 0154-2466652, Email :- uit_sgnr@yahoo.com Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001
क्रमांक :- नियमन/2025/ **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 21.09.2025
सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्र में रिहायशी भूखण्ड वाके चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 69 के किला नं. 22 में भूखण्ड ए-38 (कॉर्नर) माप 24'-9'' गुणा 62'-6'' फीट के नियमन/पट्टा हेतु आवेदक श्री महेश कुमार पुत्र श्री मिलखराज भूतना निवासी म. नं. 161 जी ब्लॉक, वार्ड नं. 28, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर इनके भूखण्ड का नियमन/पट्टा सं. 14931 दिनांक 23.05.2022 द्वारा जारी किया गया था। आवेदक/पट्टाधारक द्वारा उक्त जारी पट्टे को निर्धारित समयावधि में उपपंजीयन कार्यालय से पंजीकृत नहीं करवाया गया। आवेदक द्वारा जरिये प्रार्थना पत्र उक्त भूखण्ड के जारी पट्टे को नवीनीकरण हेतु निवेदन किया गया है। विभागीय आदेशानुसार 3 वर्ष अवधि के पश्चात पट्टा नवीनीकरण नहीं किया जाकर पुनः नया पट्टा जारी किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूखण्ड के आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/पट्टे के आधार पर नया पट्टा जारी करने के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति मय सबूत आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अन्दर अन्दर न्यास कार्यालय में कमरा नं. 17 में प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा बाद मियाद गुजरने अवधि के उपरान्त नियमानुसार आवेदक श्री महेश कुमार पुत्र श्री मिलखराज भूतना निवासी म. नं. 161 जी ब्लॉक, वार्ड नं. 28, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/जारी पट्टे के आधार पर चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 69 के किला नं. 22 में भूखण्ड ए-38 (कॉर्नर) माप 24'-9'' गुणा 62'-6'' का नियमन/पट्टा जारी कर दिया जावेगा। यदि उक्त वर्णित क्षेत्र का पूर्व में नियमन/पट्टा जारी होना पाया गया तो वर्तमान पट्टा स्वतः ही निरस्त माना जावेगा। न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। Rajkaj Ref. No. 17881728 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)
Telefax No. 0154-2466652, Email :- SECYUIT.SGNR@RAJASTHAN.GOV.IN Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001
क्रमांक :- नियमन/2025/4382 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 16.9.2025
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती शशि पत्नी श्री सत्यनारायण एवं चाहत गोयल पुत्री श्री रतन लाल निवासी श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखंड का न्यास रिकार्ड में नामान्तरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखंड के सम्बन्ध में न्यास रिकार्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है :-

न्यास रिकार्ड के अनुसार भूखंड का विवरण		आवेदक के द्वारा भूखंड के नामांतरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण
भूखण्ड का विवरण	मूल भूखण्डधारी	दस्तावेज का विवरण
चक 6 ई छोटी मुरब्बा नं. 48 किला नं. 17 भूखंड माप 335.38 वर्गमीटर, श्रीगंगानगर	उक्त भूखंड का पट्टा सं. 20142 दिनांक 25.05.2023 को श्रीमती प्रकाश देवी पत्नी श्री जगदीश चन्द्र के नाम से जारी किया हुआ है।	श्रीमती शशि पत्नी श्री सत्यनारायण एवं चाहत गोयल पुत्री श्री रतन लाल निवासी श्रीगंगानगर द्वारा उक्त भूखंड को पंजीकृत बैयनामा दिनांक 20.06.2023 के द्वारा क्रय कर उक्त भूखंड का ऑनलाईन नामान्तरण हेतु न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामान्तरण चाहा गया है इस संबंध में श्रीमती शशि पत्नी श्री सत्यनारायण एवं चाहत गोयल पुत्री श्री रतन लाल निवासी श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज/फ्री लीज होल्ड पट्टे के संबंध में कोई आपत्ति है तो सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/उजर/ दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि के दौरान इस भूखण्ड से सम्बन्धित समस्त दस्तावेजों को आमखास/हितबद्ध व्यक्ति के देखने व पढ़ने के लिये कार्यालय समय में खुला रखा गया है। बाद मियाद प्रकरण का निस्तारण कर दिया जायेगा एवं कोई आपत्ति/उजर स्वीकार नहीं होगा।
आवेदन संख्या :- SGNR/FY24-25/MUT/632 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

गुजरात से अपहरण किये दो व्यापारियों को कोटा पुलिस ने मुक्त कराया

रेलवे कॉलोनी पुलिस टीम ने दो आरोपी पकड़े, दो पिस्टल व जिंदा कारतूस बरामद

रेलवे कॉलोनी पुलिस ने अपहरणकर्ताओं को गिरफ्तार किया।

- बीस लाख की फिरौती के लिये गुजरात से दो व्यापारियों का अपहरण किया था

कोटा, (निसं)। रेलवे कॉलोनी पुलिस टीम ने नाकाबंदी के दौरान कार्रवाई करते हुए गुजरात से अपहरण किये गये दो व्यापारियों को बदमाशों के चंगुल से छुड़वाया एवं कार्रवाई कर दोनों बदमाशों को गिरफ्तार किया गया। पकड़े गये दोनों बदमाश महाराष्ट्र के अमरावती जिले के निवासी है। पकड़े गये आरोपियों के पास से पुलिस ने दो पिस्टल व एक जिंदा कारतूस भी बरामद किया है। मामले में सामने आया कि बदमाशों ने 20 लाख की फिरौती के लिये गुजरात के दो व्यापारी जयेश व पाण्डया हिम्मत भाई का मलकापुर जिला बुलडाना (महाराष्ट्र) से अपहरण किया था। शहर

पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि रेलवे कॉलोनी थानाधिकारी रामस्वरूप मीणा के नेतृत्व में स्पेशल टीम ने इलाके के भदाना पेट्रोल पम्प के पास नाकाबंदी के दौरान कार्रवाई करते हुए गुजरात के अपहरण किये गये दो व्यापारियों को मुक्त कराते हुए आरोपी मोहम्मद जुनेद व नेहाल अहमद को दो देशी पिस्टल व जिंदा कारतूस सहित गिरफ्तार किया।

शहर एसपी ने बताया कि मामले में सामने आया कि पीड़ित जयेश मूल रूप से गुजरात के पोरबंदर व पाण्डया हिम्मत भाई जिला भावनगर गुजरात के निवासी है। दोनों महाराष्ट्र के एक व्यपारी की ल्यूब्रिकेंट कंपनी को संभालते हैं। शहर एसपी ने बताया कि 18 सितम्बर की सुबह को दोनों व्यापारी अपने मलकापुरा निवास पर चाय पी रहे थे। उसी समय पांच जने अंदर घुसे और दोनों व्यापारियों पर पिस्टल और चाकू तान दिये और जान से मारने की धमकी देते हुए रस्सी से हाथ बांधकर कार में अपहरण कर अमरावती महाराष्ट्र में सुनसान इलाके में एक खेत में ले गये।

शहर एसपी ने बताया कि मामले में सामने आया कि बदमाशों ने दोनों व्यापारियों को धमकी देकर मोबाइल से अपना स्वयं अपहरण नहीं होने तथा घूमने-फिरने के संबंध में अलग-अलग वीडियो बनावकर प्रचारित भी करवाया। शहर एसपी ने बताया कि बदमाशों ने अमरावती महाराष्ट्र के पास किसी फार्म हाऊस पर रात्रि के समय अपहरण किये गये पीड़ित जयेश को पिस्टल से जान से मारने की धमकी देकर गिरोह की महिला के साथ आपत्तिजनक वीडियो भी बनाया। बदमाशों ने दोनों व्यापारियों को जान से मारने की धमकी देकर ल्यूब्रिकेंट कंपनी के मालिक को फोन करवाया और 20 लाख फिरौती की मांग की। शहर एसपी ने बताया कि अमरावती के फार्म हाऊस से 5 बदमाशो में से 3 बदमाश इल्लु, अमन पठान व सद्दाम एक अन्य गाड़ी से फिरौती की रकम लेने निकले तथा दो बदमाश मोहम्मद जुनेद व नेहाल पिस्टल की नोंक पर दोनों व्यापारियों को दूसरी कार में डालकर महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और राजस्थान के विभिन्न जिलों से होते हुए कोटा पहुंचे। शहर एसपी ने बताया कि दोनों बदमाश अपहरण किये गये व्यापारियों को लेकर सवाईमाधोपुर होते हुए दिल्ली जाने की फिराक में थे, तभी सूचना पर रेलवे कॉलोनी थानाधिकारी रामस्वरूप मीणा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने भदाना पेट्रोल पम्प के समीप नाकाबंदी कर दोनों व्यापारियों को मुक्त कराते हुए कार्रवाई कर जिला अमरावती के निवासी मोहम्मद जुनेद (30) एवं नेहाल अहमद (26) को गिरफ्तार किया। आरोपियों के पास दो पिस्टल व एक जिंदा कारतूस भी बरामद किया है।

जैन प्रतिनिधि मंडल ने लापता बालिका को तलाश करने की मांग की

जैन समाज के प्रतिनिधि मंडल ने राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से मुलाकात की।

- जैन समाज का एक प्रतिनिधि मंडल विधानसभा अध्यक्ष देवनानी व आईजी चौधरी से मिला

अजमेर/ब्यावर, (कासं)। जैन संघर्ष समिति के बैनर तले सोमवार को जैन समाज का एक प्रतिनिधि मंडल राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी एवं अजमेर रेंज आईजी राजेन्द्र सिंह चौधरी से मुलाकात कर लापता बालिका की तलाश करवाने एवं पीड़ित परिवार को न्याय दिलवाने की मांग की है। मीडिया प्रभारी नोरत बाबेल बताया कि साढ़े तीन माह से नाबालिग जैन बालिका के लापता होने के बावजूद जिला पुलिस प्रशासन अब तक ठोस कार्रवाई नहीं कर पाया है। इस गंभीर मामले को लेकर सोमवार को समिति का एक प्रतिनिधि मंडल पीड़ित परिवार के साथ अजमेर पहुंचा और विभिन्न वरिष्ठ जनप्रतिनिधियों एवं पुलिस अधिकारियों से मुलाकात की।

पूर्व जिला प्रमुख पुखराज पहाड़िया के नेतृत्व में पीड़ित परिवार ने राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी से भेंट कर पूरे प्रकरण की विस्तृत जानकारी दी। पहाड़िया ने मांग की कि मामले को अत्यंत गंभीरता से लेकर शीघ्र समाधान कराया जाए। ब्यावर जन समाज के प्रतिनिधियों ने भी अनुरोध किया कि पीड़ित परिवार को जल्द से जल्द न्याय दिलाया जाए और बालिका को सुरक्षित घर पहुंचाया जाए। देवनानी ने तुरंत ही जिला पुलिस अधीक्षक, ब्यावर से जानकारी लेकर आवश्यक कार्रवाई के लिए निर्देश जारी किए, उन्होंने पीड़ित परिवार को विश्वास दिलाया कि न्याय अवश्य मिलेगा और बालिका शीघ्र ही सकुशल उनके पास पहुंचेगी।

इसी क्रम में प्रतिनिधि मंडल ने अजमेर पुलिस महानिरीक्षक राजेन्द्र सिंह चौधरी से भी उनके कार्यालय में मुलाकात की। पीड़ित परिजनों ने अपनी पीड़ा साझा की तथा यह भी बताया कि पुलिस प्रशासन की लापरवाही और उत्पीड़न से वे बेहद व्यथित हैं। अजमेर रेंज आई चौधरी ने पीड़ित परिवार एवं जैन समाज के प्रतिनिधि मंडल की बात को गंभीरता से सुना और जल्द से जल्द न्याय मिलने का विश्वास दिलाया। चौधरी ने आश्वासन दिया कि दोषी चाहे कोई भी हो, उसे बख्शा नहीं जाएगा। कल्पेश सिंघवी, अध्यक्ष जैन रक्षार्थ समिति की ओर से भी पीड़ित परिवार को समर्थन का विश्वास दिलाया। प्रतिनिधि मंडल में पूर्व जिला प्रमुख पुखराज पहाड़िया, राजेन्द्र जैन, अल्का जैन, अनिल डोसी, महेंद्र बोहरा, गौतम संचेती, सुशील मेहता, महावीर खीचा एवं राजेश जैन सहित समाज बंधु मौजूद रहे।

सुंधा माता मंदिर के कुछ ट्रस्टियों की मदद से मुझे नुकसान पहुंचाने की साजिश : रतन देवासी

- पूर्व विधायक रतन देवासी ने आरोप लगाया है कि जालोर, सिरोही और सुंधा माता मंदिर के कुछ ट्रस्टियों की मदद से उन्हें नुकसान पहुंचाने की साजिश रची जा रही है

जालोर, (का.सं.)। रानीवाड़ा के पूर्व विधायक रतन देवासी के एक ट्वीट ने राजनीतिक गलियारों और आम जनता के बीच हड़कंप मचा दिया है। मंगलवार को किए गए इस ट्वीट में देवासी ने अपने परिवार पर पूर्व सरकार के एक मंत्री, उनके बेटे और कुछ अधिकारियों से जान का खतरा बताया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया है कि जालोर, सिरोही और सुंधा माता मंदिर के कुछ ट्रस्टियों की मदद से उन्हें नुकसान पहुंचाने की साजिश रची जा रही है।

देवासी ने अपने ट्वीट में कहा कि क्या यह अपने परिवार को सुरक्षित रखने का सही समय है? मेरा परिवार वर्षों से एक पूर्व मंत्री, उनके बेटे और कई अन्य अधिकारियों से खतरों का सामना कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि उनकी लड़ाई समाज के कमजोर तबके, नशामुक्त समाज और अन्य सामाजिक कार्यों के लिए जारी रहेगी। उन्होंने यह भी लिखा, "समय बताएगा... ज्यादा लंबा नहीं, लेकिन एक दिन बाद मैं बोलूंगा।" इस ट्वीट के बाद उनके समर्थकों और आम लोगों ने सोशल मीडिया पर अपनी चिंता व्यक्त की है। कई लोगों ने उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि देवासी का यह ट्वीट गहरे राजनीतिक संकेत दे रहा है। यह सीधे तौर पर पिछली सरकार के कुछ प्रभावशाली लोगों की ओर इशारा करता है। देवासी के इस कदम को उनके और संबंधित पक्षों के बीच चल रहे विवाद को सार्वजनिक करने के रूप में देखा जा रहा है। देवासी ने अपने ट्वीट में सुंधा माता मंदिर के ट्रस्टियों का जिक्र भी किया है, जो इस मामले को और भी संवेदनशील बना देता है। जालोर और सिरोही जिले में सुंधा माता मंदिर का खासा प्रभाव है और इस विवाद में मंदिर से जुड़े लोगों का नाम आना चौंकाने वाला है।

अशोक गहलोत को अपनी जमीन खिसकती दिख रही है : मदन राठौड़

- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने भजनलाल सरकार द्वारा किए जा रहे विकास कार्यों को लेकर अशोक गहलोत तथा विपक्ष द्वारा फैलाई जा रही भ्रामक सूचनाओं पर प्रतिक्रिया दी
- गहलोत और कांग्रेस पार्टी कन्हैयालाल जैसे निर्दोष नागरिक की हत्या पर भी घिनौनी राजनीति कर रही है : मदन राठौड़

भीलवाड़ा, (निसं)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने भाजपा की भजनलाल सरकार द्वारा किए जा रहे विकास कार्यों और जनसेवा को लेकर अशोक गहलोत तथा विपक्ष द्वारा फैलाई जा रही भ्रामक एवं तथ्यहीन सूचनाओं पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। राठौड़ ने कहा कि जनता को गुमराह करने के लिए विपक्ष केवल प्रचार और भ्रमजाल फैला रहा है, जबकि जमीनी सच्चाई यह है कि प्रदेश सरकार पूरी संवेदनशीलता और गंभीरता के साथ हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य कर रही है।

उन्होंने कहा कि विपक्ष को अपने शासनकाल के दौरान की नाकामियां याद होनी चाहिए, जब भ्रष्टाचार, अपराध, बजरी और शराब माफियाओं को खुली छूट मिली थी। अब जब भाजपा सरकार ईमानदारी से कार्य कर रही है, तो उन्हें अपनी ज़मीन खिसकती दिख रही है। भाजपा और राज्य सरकार जनहित को सर्वोपरि रखती है। विपक्ष द्वारा गढ़ी गई कहानियों और नकारात्मकता का जवाब जनता लगातार उपचुनावों में दे रही है और आगामी निकाय एवं पंचायत चुनावों में स्वयं देगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उनकी सरकार विकसित राजस्थान के लिए सतत रूप से कार्य कर रही है। उन्होंने प्रदेश की कानून व्यवस्था पर बोला कि प्रदेश में अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो रही है, किसी भी अपराधी को राजनीतिक संरक्षण नहीं है, जैसा कि कांग्रेस सरकार में होता था। पेपरलीक माफियाओं पर लगातार कार्रवाई की जा रही है और उनकों सलाखों के पीछे पहुंचा रहे है। भाजपा के विधायक, जनप्रतिनिधि और मंत्री जनता के बीच हैं, न कि एसी कमरों में बैठकर ट्विटर राजनीति कर रहे हैं। विपक्ष का एजेंडा सिर्फ और सिर्फ भ्रम फैलाने का है वो इसके अलावा कुछ नहीं कर पा रहे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि गहलोत और कांग्रेस पार्टी कन्हैयालाल जैसे निर्दोष नागरिक की हत्या पर भी घिनौनी राजनीति कर रही है। गहलोत को यह साफ करना चाहिए कि जब राजस्थान में कांग्रेस की सरकार थी, तब आखिर क्यों कन्हैयालाल की हत्या को रोकने में पुलिस और खुफिया एजेंसियाँ नाकाम रही ? आपकी नाकामी के कारण एक निर्दोष दर्जी को दिनदहाड़े जिहादियों ने मौत के घाट उतार दिया था। अब तीन साल बाद आप प्रधानमंत्री मोदी पर आरोप लगाकर अपनी जिम्मेदारी से भाग नहीं सकते। कांग्रेस ने हमेशा आतंकवाद और कट्टरपंथ के मुद्दे पर ढुलमुल रवैया अपनाया है। कांग्रेस ने पूरे घटनाक्रम में पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने की जगह तुष्टिकरण की नीति अपनाई। यही कांग्रेस का असली चेहरा है। भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी आतंकवाद और चरमपंथ के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर अडिग हैं। जनता अब कांग्रेस के पाखंड को समझ चुकी है। राजस्थान की धरती पर कांग्रेस का झूठ और तुष्टिकरण एक साथ नहीं चलेगा।

अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्र में प्रशासन ने बाल विवाह रुकवाया

- प्रशासनिक टीम को मौके पर पहुंचने पर पता चला कि लड़के और लड़की दोनों के परिजन इस शादी से सहमत नहीं हैं
- लड़के और लड़की ने अपने अपने माता-पिता को धमकी दी थी कि अगर उनकी शादी नहीं करवाई तो वे आत्महत्या कर लेंगे

श्रीगंगानगर, (निसं)। अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्र में एक बाल विवाह को रुकवाया गया है। लड़का 18 साल 4 माह का और लड़की 16 साल 4 माह की है। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। लड़का कक्षा 11वीं और लड़की 9वीं की छात्रा है। दोनों अलग गांव के हैं और सरकारी स्कूल तीसरे गांव में है।

यह बाल विवाह 21 सितंबर को दिन में होने जा रहा था। जिला कलेक्टर डॉ. मंजू के निर्देश पर बाल कल्याण समिति अध्यक्ष जोगेंद्र कौशिक, सदस्य वंदना गौड़, विपिन सांखला, चाइल्ड हेल्पलाइन समन्वयक त्रिलोक वर्मा, राजस्व पटवारी अमीलाल, हिंदुमलकोट थाने से हेड कांस्टेबल खेतपाल सारस्वत व महिला कांस्टेबल की टीम दूल्हे के घर पहुंची। लड़के के माता-पिता ने कक्षा 8वीं की अंकतालिका पेश की। इसमें दूल्हे की जन्मतिथि 30 अप्रैल 2007 है। इस पर बारात को रुकवा दिया गया और परिवार को पाबंद किया गया। प्रशासनिक टीम दुल्हन के गांव पहुंची तो 8वीं की अंक तालिका माता-पिता ने पेश की। इसके अनुसार दुल्हन की आयु 16 साल 4 माह ही निकली। प्रशासनिक टीम को मौके पर पहुंचने पर पता चला कि लड़के और लड़की दोनों के परिजन इस शादी से सहमत नहीं हैं, लेकिन लड़के और लड़की ने अपने अपने माता-पिता को धमकी दी थी कि अगर उनकी शादी नहीं करवाई तो वे आत्महत्या कर लेंगे।

लड़के के पिता और मां ने टीम को बताया कि इसके बाद भी हमने शादी की रजामंदी नहीं दी तो इन्होंने कीटनाशी का सेवन कर जान देने की कोशिश का नाटक किया। गांव के ही डॉक्टर से उपचार दिलवाया गया। मजबूर होकर इनकी शादी के लिए हां करनी पड़ी। हमारे पास ओपीडी में ऐसे बच्चे हर रोज आ रहे हैं जो वयस्क होने से पहले ही प्रेम प्रसंगों में पड़कर भाग गए। बाद में मामले पॉक्सो एक्ट में चले जाते हैं और युवक या किशोर को जेल में जाना पड़ता है।

डॉ सांची, एचओडी, गायनो डिपार्टमेंट, जिला अस्पताल का कहना है कि 2 से 13 साल के बच्चों में हॉर्मोन्स के कारण शारीरिक बदलाव होने लगते हैं। इसी दौरान हॉर्मोन्स के कारण ही लड़के और लड़कियां एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। दूसरा बड़ा कारण सोशल मीडिया है। इस पर हर तरह का कंटेंट मौजूद है जो बच्चों को एक्सपोजर के लिए प्रेरित करता है कि हम भी ऐसा करके देखें। हमारा समाज संक्रमण काल में है इसलिए परिजनों और बच्चों में दोस्ताना व्यवहार नहीं होता। बच्चे अपने जीवन में चल रही घटनाओं की घर पर बात ही नहीं करते क्योंकि उनको डर रहता है कि घर पर बताने से डांट पड़ेगी। स्कूलों में साइकेट्रिक डॉक्टर से हर टीन एज बच्चे की काउंसलिंग होनी चाहिए। स्कूल स्टाफ भी बच्चों पर निगरानी रखें। परिजन अपने टीन एज बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखें और हर रोज बातचीत करते रहें ताकि बच्चे गलत रास्ते पर नहीं चले जाएं।

डूंगरपुर शहर के घाटी दरवाजे के ऊपर लेपर्ड दिखा

- घाटी गेट पर खड़ा था लेपर्ड, नीचे से निकलते रहे लोग
- बाइक सवारों को भीड़ ने चिल्लाकर रोका, आवाज सुन लेपर्ड घूरने लगा

डूंगरपुर, (निसं)। शहर के घाटी दरवाजे के ऊपर लेपर्ड खड़ा था और नीचे से बाइक सवार गुजरते रहे थे। यह देख दरवाजे से दूर खड़े लोग चिल्लाते हुए वाहन चालकों को दूर जाने की नसीहत दे रहे थे। शोर सुनकर एक बार लेपर्ड भी खड़ा होकर सबको घूरने लगा। घटना रविवार देर शाम की है। इसका वीडियो भी सामने आया है। शहर के घाटी दरवाजे के ऊपर लेपर्ड चहलकदमी करता नजर आया।

घाटी मोहल्ले से सारणेश्वर मंदिर रोड पर घाटी का पुराना दरवाजा है। दरवाजे के ऊपर से रविवार देर शाम लेपर्ड गुजरते हुए दिखा। लेपर्ड उदय विलास की पहाडयों से होता हुआ धनमाता की पहाडियों की तरफ जा रहा था। दरवाजे के नीचे से शहर और कई गांवों की तरफ आने जाने का रास्ता है। जब लेपर्ड दरवाजे से गुजर रहा था। उस समय कई बाइक सवार भी नीचे से निकल रहे थे। यह देख लोगों ने चिल्लाते हुए वाहन चालकों को दूर जाने की नसीहत दी। शोर सुनकर लेपर्ड लोगों को घूरने लगा। इस दौरान वहां मौजूद कुछ लोगों ने लेपर्ड का वीडियो भी बनाया।

आबादी के पास दिखने से लोगों में दहशत :- घाटी मोहल्ले के इसी दरवाजे के पास निसार ए हाली प्राइवेट और एक सरकारी स्कूल भी है, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चे पढ़ते हैं। वहीं, पास ही घनी आबादी है। पहाड़ी के दोनों तरफ आबादी है। ऐसे में घरों के नजदीक लेपर्ड दिखने से लोगों में दहशत का माहौल है। लोगों ने लेपर्ड को रेस्क्यू करने की मांग की है।

शहर के ही नगर परिषद के पीछे की तरफ स्थित बांसडवाड़ा के उदय विलास की पहाड़ी पर भी कुछ दिन पहले एक साथ 3 लेपर्ड दिखे थे। पहाड़ी के नीचे ही घनी आबादी है। उस समय भी लेपर्ड पत्थरों पर बैठकर अटखेलियां करते नजर आए थे। वहीं, कुछ दिनों बाद एक लेपर्ड आबादी की तरफ भी आया था। बाद में वह वापस पहाड़ी पर चला गया था। वहीं साबला में पिछले दिनों एक लेपर्ड घर में घुस गया था। लेपर्ड घर के बरामदे में एक खाट के पास बैठा मिला था। इसके बाद वन विभाग की टीम ने काफी मशक्कत के बाद खाट से उसे दबाकर रेस्क्यू किया था। ऐसे में अब लेपर्ड शहर और गांवों में भी आबादी की ओर आने लगे है।

एक गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। जवाहर नगर पुलिस टीम ने इलाके में गश्त के दौरान वारदात की फिराक में घूम रहे आरोपी संजय नगर निवासी मुन्तजिर अली उर्फ ईका पठान को अवैध पिस्टल व जिंदा कारतूस सहित गिरफ्तार किया। जवाहर नगर थानाधिकारी रामलक्ष्मण ने बताया कि शहर पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में कार्यवाही की जा रही है।

(रजि. नं. MSCS/CR/1234/2015 दि. 28.04.2015)
भव्यराज हाउसिंग मल्टीस्टेट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि.
पंजीकृत कार्यालय : बी- 36, शिवपुरी, सदाशिव पथ, बुधसिंहपुरा, सांगानेर एयरपोर्ट के सामने, जयपुर-302029
शाखा कार्यालय : 8, गोपाल विहार, प्रताप नगर, टोंक रोड़, सांगानेर, जयपुर-302029 (राज.)
क्रमांक : बीएचएमएससीएल/जन./2025/एसपी 1 दिनांक : 20.09.2025
वार्षिक आम सभा का नोटिस
भव्यराज हाउसिंग मल्टीस्टेट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. जयपुर के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 06.10.2025 को प्रातः 11:30 बजे सोसायटी के शाखा कार्यालय- 8, गोपाल विहार, प्रताप नगर, टोंक रोड़, सांगानेर, जयपुर-302029 (राज.) पर सोसायटी के सदस्यों की वार्षिक आम सभा आयोजित की जाएगी जिसके विचारणीय विषयबिन्दु निम्नलिखितानुसार रहेंगे :-
1. सोसायटी की गत वार्षिक आमसभा की कार्यवाही की पुष्टि पर विचार। 2. सोसायटी की कार्यकारिणी में लिये गये निर्णयों की पुष्टि पर विचार। 3. वर्ष 2025-26 के वार्षिक बजट के अनुमोदन पर विचार। 4. सोसायटी के वर्ष 2024-25 की ऑडिट रिपोर्ट की पुष्टि पर विचार। 5. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।
आज्ञा से, अध्यक्ष
नोट - कोरम के अभाव में स्थगित आम सभा उसी दिन दोपहर 12:30 बजे उसी स्थान पर पुनः आयोजित की जायेगी जिसमें विचारणीय विषय बिन्दु यथावत रहेंगे।

(रजि. नं. MSCS/CR/1159/2014 दि. 12.12.2014)
अभिनवोदय हाउसिंग मल्टीस्टेट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि.
पंजीकृत कार्यालय : शॉप नं. 38-39, प्रथम तल, धरणीधर कॉम्प्लैक्स, स्टेशन रोड़, धनेरा, जिला बनासकांठा (गुजरात) 385310
शाखा कार्यालय : 42-एबी, भैरव नगर, कल्याणपुरा सांगानेर, जयपुर - 302029
क्रमांक : एएचएमएससीएल/जन./2025/एसपी 1 दिनांक : 19.09.2025
वार्षिक आम सभा का नोटिस
अभिनवोदय हाउसिंग मल्टीस्टेट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि., जयपुर के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 06.10.2025 को प्रातः 11:30 बजे सोसायटी के शाखा कार्यालय- 42-एबी, भैरव नगर, कल्याणपुरा सांगानेर जयपुर-302029 पर सोसायटी के सदस्यों की वार्षिक आम सभा आयोजित की जाएगी जिसके विचारणीय विषयबिन्दु निम्नलिखितानुसार रहेंगे :-
1. सोसायटी की गत वार्षिक आमसभा की कार्यवाही की पुष्टि पर विचार। 2. समिति की कार्यकारिणी में लिये गये निर्णयों की पुष्टि पर विचार। 3. वर्ष 2025-26 के वार्षिक बजट के अनुमोदन पर विचार। 4. सोसायटी के वर्ष 2023-24 की ऑडिट रिपोर्ट एवं वर्ष 2024-25 के अंतिम लेखों की पुष्टि पर विचार। 5. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।
आज्ञा से, अध्यक्ष
नोट - कोरम के अभाव में स्थगित आम सभा उसी दिन दोपहर 12:30 बजे उसी स्थान पर पुनः आयोजित की जायेगी जिसमें विचारणीय विषय बिन्दु यथावत रहेंगे।

रेस्टोरेंट में फायरिंग करने के आरोपी उत्तरप्रदेश से गिरफ्तार

- पुरानी रंजिश को लेकर रेस्टोरेंट की दुकान में हमला किया था

फायरिंग कर जानलेवा हमले के बदमाशों को कोटा पुलिस ने उत्तरप्रदेश से गिरफ्तार किया।

कोटा, (निसं)। भीमगंजमंडी पुलिस टीम ने स्टेशन स्थित एक नॉनवेज रेस्टोरेंट की दुकान में फायरिंग कर जानलेवा हमला करने व तोड़फोड़ के दर्ज मामले में कार्रवाई करते हुए भीमगंजमंडी थाने का हिस्ट्रीशीटर इमरान उर्फ गोलू सहित चार अन्य आरोपियों को उत्तरप्रदेश के सारणपुर से गिरफ्तार किया है।

शहर पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि 18 सितम्बर को फरियादी अतीक खान ने भीमगंजमंडी थाने में रिपोर्ट दी। फरियादी ने कहा कि 17 सितम्बर की रात्रि को अपनी दुकान पर साथियों के साथ बैठा हुआ था। तभी गौलू, सलमान, सद्दाम, इमरान और सलमान आये। रिपोर्ट में कहा कि पुरानी रंजिश को लेकर सद्दाम ने देशी कट्टे से फायर करना चाहा तो फरियादी ने जान बचाने के लिये सद्दाम का हाथ पकड़ लिया साथ आये गोलु के हाथ में पिस्टल थी, जिसने जान से मारने की नियत से फायर किया, हमले में वह बाल-बाल बच गया। रिपोर्ट में कहा कि हमलावरों पर अन्य हथियार भी थे, लेकिनशोर सुनकर लोग इक्ट्ठा हुए तो हमलावर मौके से भाग गये। शहर एसपी ने बताया कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया। मामले में हमलावरों की तलाश के लिये पुलिस उपअधीक्षक गंगासहाय शर्मा के सुपरविजन में भीमगंजमंडी थानाधिकारी रामकिशन गोदारा के नेतृत्व में टीम गठित की गई। शहर एसपी ने कहा कि गठित टीम ने संभावित स्थानों पर दबिश दी। लेकिन आरोपी अपना निवास बदल रहे थे। गठित टीम ने मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए भगत सिंह कॉलोनी निवासी इमरान कुरैशी (20), रंगपुर निवासी सलमान गुवाड़ी (31), रंगपुर निवासी मोहम्मद इमरान उर्फ गोलू (31), तेलघर निवासी सलमान बैंड उर्फ लाला (22) एवं सब्जीमंडी स्टेशन निवासी मोहम्मद अय्यान लश्कर (20) को सारणपुर उत्तरप्रदेश से दस्तायाब कर प्रकरण में गिरफ्तार किया गया।

शोभायात्रा की तैयारी के दौरान ट्रैक्टर-ट्राली में आग लगी

राजगढ़, (निसं)। अग्रवाल समाज के आराध्य देव अग्रसेन महाराज की जयंती पर सोमवार को अवधूत दत्त आश्रम के समीप शोभायात्रा की तैयारी के दौरान ट्रैक्टर-ट्राली में आग लग गई। आग लगने का कारण अघोरी बाबा के काम आने वाला ज्वलनशील पदार्थ माना जा रहा है।

आसपास के लोगों ने पानी से आग पर काबू पाया। आग लगने पर लोगों ने राहत की सांस ली। इसके पश्चात अवधूत दत्ता आश्रम से अग्रसेन महाराज की जयंती पर शोभायात्रा बैंड बाजे के साथ रवाना हुई। इस बार की झांकी का प्रमुख आकर्षण अग्रवाल समाज के 18 गोत्रों की घोड़ी पर सजी झांकी प्रमुख रही। शोभायात्रा में श्री रामलला की प्रतिमा सहित अन्य झांकियां भी सजाई गई। इस दौरान शोभायात्रा का प्रमुख बाजारों में भव्य स्वागत किया गया।

तैराकी प्रतियोगिता का शुभारंभ

रावतभाटा, (निसं)। 69वीं जिला स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता 17 एवं 19 वर्ष (छात्र एवं छात्रा) का शुभारंभ सोमवार को पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रावतभाटा में हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आरती बारेशा प्रधान पंचायत समिति भैंसरोड़गढ़, विशिष्ट अतिथि राधेश्याम गुप्ता पूर्व प्रधान पंचायत समिति भैंसरोड़गढ़, नगर अध्यक्ष राजेंद्र दशोरा, पूर्व चेयरमैन राजकुमार वधवा, कमलेंद्र सिंह हाडा, पार्षद तन्वी शर्मा, दिलीप मीणा, विनीता अग्रवाल, एसीबी ओ नरेश कुमार अग्रवाल की उपस्थिति में शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि आरती बारेशा द्वारा प्रतिभागियों को शपथ दिलाई गई। उपस्थित सभी अतिथियों द्वारा अपने उद्बोधन में तैराकी प्रतियोगिता में शामिल हुए समस्त प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी गई एवं सभी को तैराकी का महत्व समझाया।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
महात्मा गांधी सर्वोदय विचार परीक्षा-2024 हेतु ऑनलाईन प्रवेश पत्र एवं केन्द्र सामग्री डाउनलोड़ करने बाबत
महात्मा गांधी सर्वोदय विचार परीक्षा–2024 का आयोजन रविवार, दिनांक 28.09.2025 को प्रातः 10.00 बजे से 11.30 बजे तक राज्य के जिला मुख्यालयों पर निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर कराया जायेगा। परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र बोर्ड की वेबसाईट www.rajeduboard.rajasthan.gov.in पर अपलोड कर दिये गये है। संबंधित शाला प्रधान तथा महाविद्यालय के प्राचार्य आवेदन करते समय प्रयुक्त यूजर आई.डी. एवं पासवर्ड से प्रवेश पत्र डाउनलोड कर हार्ड कापी मुद्रित कर प्रमाणीकरण पश्चात सम्बन्धित परीक्षार्थियों को वितरित करेंगे। केन्द्र सामग्री यथा निर्देश, उपस्थिति पत्रक, बैठक व्यवस्था तथा नामांकों की नॉमिनल रोल बोर्ड की वेबसाईट पर अपलोड़ कर दी गई है। केन्द्राधीक्षक सम्पूर्ण सामग्री डाउनलोड़ पश्चात् मुद्रित कर परीक्षा आयोजन करेंगे। सामग्री डाउनलोड़ संबंधी समस्या हेतु 0145–2632865, 2627454 तथा अन्य सहायता हेतु नियंत्रण कक्ष के दूरभाष नं. 0145–2632866, 2632867, 2632868 पर सम्पर्क करें।
सचिव

मुख्यमंत्री ने जी.एस.टी. बचत उत्सव के तहत लोगों को किया जागरूक

जी.एस.टी. रिफॉर्म से रोटी, कपड़ा और मकान होंगे सस्ते, जनता को मिलेगी बड़ी राहत : भजनलाल शर्मा

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार द्वारा जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) सरलीकरण तथा टैक्स स्लैब में परिवर्तन का निर्णय ऐतिहासिक हैं। उन्होंने कहा कि देशवासियों को त्योहारों के अवसर पर दी गई इस बड़ी सौगात से रोटी, कपड़ा और मकान सस्ते होंगे और आमजन को बड़ी राहत मिलेगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मानसरोवर क्षेत्र के प्रमुख बाजारों में व्यापारियों एवं आमजन को जीएसटी बचत उत्सव के तहत जागरूक किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न प्रतिष्ठानों पर जीएसटी बचत उत्सव से संबंधित स्टीकर्स लगाए तथा लोगों को स्वदेशी उत्पाद अपनाने के लिए प्रेरित किया। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आमजन के प्रति संवेदनशील हैं। उन्होंने जनता की परेशानी को समझते हुए 22 सितंबर से लागू नए जीएसटी स्लैब के माध्यम से मध्यम वर्ग, किसान, व्यापारी एवं उद्योगपतियों सहित सभी वर्गों को राहत दी हैं। जीएसटी के नए प्रावधानों के तहत अब अधिकांश वस्तुएं 4 की बजाय 2 टैक्स स्लैब के दायरे में आएंगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार जीएसटी बचत उत्सव के तहत 22 से 29 सितंबर तक विशेष जन-जागरूकता अभियान चला रही है, जिसके तहत उपभोक्ताओं और व्यापारियों को जीएसटी सरलीकरण से होने वाले लाभों की जानकारी दी जाएगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मानसरोवर क्षेत्र के प्रमुख बाजारों में व्यापारियों और आमजन को जीएसटी बचत उत्सव के प्रति जागरूक किया। उनके साथ यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा और ग्रेटर नगर निगम जयपुर के उपमहापौर पुनीत कर्णावट भी मौजूद थे।

■ **मुख्यमंत्री ने स्वदेशी उत्पाद अपनाकर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का आव्हान् किया**

उन्होंने कहा कि आमजन और व्यापारी जीएसटी बचत उत्सव के रूप में मनाएं तथा अधिक से अधिक स्वदेशी उत्पाद अपनाएं।इससे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी तथा उपभोक्ताओं को जीएसटी के नए टैक्स स्लैब का सीधा लाभ मिलेगा।

इस अवसर परनगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा, ग्रेटर नगर निगम उप-महापौर पुनीत कर्णावट सहित जनप्रतिनिधि, बड़ी संख्या में व्यापारी एवं आमजन उपस्थित रहे।

आचार्य बालकृष्ण विश्व रैंकिंग में शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में पुनः शामिल

हरिद्वार। आचार्य बालकृष्ण को अमेरिका के प्रतिष्ठित स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के शोध समूह और विश्वप्रसिद्ध प्रकाशक एल्सेवियर द्वारा जारी विश्व के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में पुनः सम्मिलित किया है। आचार्य बालकृष्ण की अनुसन्धानीय एवं आयुर्वेदिक कार्यों में गहन विशेषज्ञता एवं उनके गतिशील मार्गदर्शन से प्रेरणा लेकर 300 से अधिक शोध लेखों का प्रकाशन अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल्स में किया गया है।

आचार्य के निर्देशन में पतंजलि द्वारा 100 से अधिक साक्ष्य-आधारित आयुर्वेदिक औषधियों को विकसित किया है। योग और आयुर्वेद पर 120 से अधिक पुस्तकों और 25 से अधिक अप्रकाशित प्राचीन आयुर्वेद पांडुलिपियों का लेखन उनके आयुर्वेद के प्रति आस्था एवं समर्पण का परिणाम है। योगऋषि स्वामी रामदेव ने कहा कि आचार्य बालकृष्ण ने न केवल आयुर्वेद को वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ स्थापित किया है, बल्कि विश्वभर के शोधकर्ताओं के लिए आयुर्वेद में शोध के नए द्वार भी खोले है। विश्व के शीर्ष वैज्ञानिकों में सम्मिलित किया जाना इस बात का प्रमाण है कि प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और सनातन आयुर्वेदिक ज्ञान में अपार संभावनाएं छिपी हैं।

मां करणी की कथा का आयोजन

जयपुर। शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर शुक्रवार को सिरसी रोड स्थित केसर बाग मैरिज गार्डन में मां करणी की कथा का भव्य आयोजन किया गया। कथा की शुरुआत महंत करणी प्रताप सिंह आढ़ा और भजन प्रवाहक किन्नू बन्ना द्वारा विधिवत रूप से की गई। इस अवसर पर राजस्थान की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी भी कथा स्थल पर पहुंचीं और मां करणी का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं को नवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व आस्था, शक्ति और संस्कृति का प्रतीक है, जिसे पूरे भक्ति भाव से मनाना चाहिए। दिया कुमारी ने अपने संबोधन में कहा कि पर्व और त्योहार केवल परंपरा नहीं, संस्कारों और संस्कृति के संवाहक हैं।

■ **उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने लिया आशीर्वाद**

हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को सनातन धर्म, रीति-रिवाज और सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूक करना होगा। उपमुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों की सराहना करते हुए कहा कि देश में सकारात्मक बदलाव की लहर चल रही है। उन्होंने कहा, अब हमें महंगाई का सामना नहीं करना पडेगा। महंगाई में कमी आने से गृहिणियों को बड़ी राहत मिली है। कार्यक्रम में चेयरमैन अजय सिंह चौहान, रामकिशोर प्रजापत, विजेंद्र सिंह पाल, गोविंद सिंह करीरी सहित अनेक गणमान्य नागरिक, श्रद्धालु और भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने भक्ति भाव से कथा श्रवण कर मां करणी से प्रदेश और समाज की सुख-समृद्धि की कामना की। कार्यक्रम का समापन भजन संध्या और प्रसाद वितरण के साथ हुआ। श्रद्धालुओं ने इस आयोजन को धार्मिक आस्था और सामाजिक एकता का सुंदर संगम बताया।

अधीनस्थ अदालतों के कर्मचारियों को मंत्रालयिक श्रेणी का मानते हुए नियुक्ति देने के आदेश

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने अधीनस्थ अदालतों में काम कर रहे कर्मचारियों को मंत्रालयिक कैटेगरी का मानते हुए उन्हें कनिष्ठ लेखाकार भर्ती में इस वर्ग के तहत आरक्षण का लाभ देते हुए नियुक्ति देने को कहा है। जस्टिस आनंद शर्मा की एकलपीठ ने यह आदेश विमल गुप्ता व अन्य की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता दीपक चौहान ने अदालत को बताया कि कर्मचारी चयन बोर्ड ने साल 2022 में कनिष्ठ लेखाकार के पदों पर भर्ती निकाली थी। जिसमें मंत्रालयिक कर्मचारियों के लिए 12.5 फीसदी पद आरक्षित रखे गए। याचिकाकर्ता अधीनस्थ अदालतों में मंत्रालयिक कर्मचारी के तौर पर काम कर रहे हैं। उनके इस भर्ती में कट ऑफ से भी अधिक अंक आए हैं, लेकिन उन्हें मंत्रालयिक कर्मचारी कोटे में नहीं मानकर नियुक्ति से वंचित किया जा रहा है। इसलिए उन्हें इस कोटे का लाभ देते हुए नियुक्ति दी जाए। वहीं कर्मचारी चयन बोर्ड की ओर से अधिवक्ता संदीप माहेश्वरी ने कहा कि भर्ती में कैटेगरी तय करना राज्य सरकार का काम है। संबंधित व्यक्ति किसी वर्ग में शामिल होगा, यह राज्य सरकार के स्तर पर तय किया जाता है और इसमें कर्मचारी चयन बोर्ड की कोई भूमिका नहीं है। वहीं याचिका का विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता माही यादव ने कहा कि याचिकाकर्ता अधीनस्थ अदालत के कर्मचारी है और मंत्रालयिक कोटे की श्रेणी में नहीं आते हैं। ऐसे में उन्हें इस कोटे के तहत आरक्षण का लाभ नहीं दिया जा सकता। दोनों पक्षों को सुनने के बाद अदालत ने माना की अधीनस्थ अदालतों के कर्मचारी भी मंत्रालयिक कर्मचारियों की श्रेणी में आते हैं। ऐसे में उन्हें भर्ती में इस कोटे के तहत आरक्षण का लाभ दिया जाना चाहिए।

भाजयुमो कार्यकर्ताओं ने "नमो युवा रन" में दिखाया जोश

जयपुर । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष में भाजयुमो द्वारा चलाए जा रहे सेवा पखवाड़े के अंतर्गत सोमवार को 'नमो युवा रन - नशा मुक्त भारत के लिए' कार्यक्रम का आयोजन भांकरोटा में किया गया। यह आयोजन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्वाचन क्षेत्र सांगानेर के अंतर्गत भांकरोटा मंडल में हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दौड़ के माध्यम से युवाओं ने नशामुक्ति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। यह जानकारी कार्यक्रम संयोजक एवं भाजयुमो जयपुर शहर उपाध्यक्ष रमेश भीवाल नेदी।

जीएसटी रिफॉर्म से प्रधानमंत्री ने दिया दीपावली का तोहफा : सतीश पूनियां

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व पर आधारित "नमो प्रदर्शनी" का भाजपा हरियाणा प्रभारी तथा राजस्थान भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने जवाहर कला केंद्र जयपुर में पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ अवलोकन किया। उन्होंने नरेंद्र मोदी के जीवन पर आधारित फ़िल्म देखी, जिसको आमजन तक पहुंचाने की उन्होंने अपील की।

पूनियां ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आधुनिक भारत और आत्मनिर्भर भारत के शिल्पकार हैं, मोदी ने 11 वर्षों में विकसित भारत बनाने के लिये देश के सभी सेक्टर और सभी वर्गों को मजबूती देने का काम किया है। जीएसटी रिफॉर्म से प्रधानमंत्री ने देश को दीपावली का तोहफा स्वदेशी दिया है। आज आधुनिक हथियारों और मिसाइलों के निर्माण से लेकर पीएम किसान सम्मान निधि, जनधन, उज्ज्वला, स्टार्टअप इत्यादि तमाम योजनाओं से भारत का बुनियादी विकास हुआ है और अयोध्या में भगवान श्रीराम मंदिर के निर्माण से पूरी दुनिया में भारत और सनातन का स्वाभिमान बढ़ा है।

हरियाणा भाजपा के प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया ने सोमवार को जवाहर कला केन्द्र जयपुर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जीवनी पर लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

पूनियां ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस पर भाजपा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक पूरे देश में सेवा पखवाड़ा मना रही है।

■ **'नमो प्रदर्शनी, प्रधानमंत्री मोदी के परिश्रम की कहानी बताती है और नई पीढ़ी को प्रेरणा देती है'**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महान व्यक्तित्व एवं जीवन को आम जनमानस और युवा पीढ़ी को चित्रित करके पहुंचाया जाये, इसके लिए पार्टी की अभिनव पहल है नमो प्रदर्शनी, जिसके माध्यम से नरेंद्र मोदी के विकसित भारत विजन को जन-जन तक पहुंचाने का अनूठा कार्य किया जा रहा है, इसको लेकर भाजपा राजस्थान प्रदेश इकाई द्वारा जयपुर के जवाहर कला केंद्र में आयोजित यह प्रदर्शनी नरेंद्र मोदी के विचारों, उनके विजन और विकास कार्यों को लेकर दर्शायी गई है। नमो प्रदर्शनी, प्रधानमंत्री मोदी के परिश्रम की कहानी बताती है और नई पीढ़ी को प्रेरणा देती है।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक को अवमानना नोटिस

जयपुर, । राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रिंसिपल के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई पर रोक लगाने के आदेश की पालना नहीं करने पर माध्यमिक शिक्षा निदेशक को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस गणेश राम मीणा की एकलपीठ ने यह आदेश महेंद्र तिवाडी की अवमानना याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

■ **अदालती आदेश की पालना नहीं करने पर हाईकोर्ट ने दिखाई सख्ती**

याचिका में अधिवक्ता विजय पाठक ने बताया कि याचिकाकर्ता जयपुर जिले की कोटखावदा स्कूल से प्रिंसिपल पद पर से सितंबर 2022 में रिटायर हुआ था। इस दौरान शैक्षिणक सत्र 2018-19 में स्कूल का परीक्षा परिणाम तय मापदंड से कम रहने पर 2021 में उसे नोटिस दिया। वहीं बाद में उसे 17 सीसीए का नोटिस दिया और उसके जवाब पर ध्यान दिए बिना ही निदेशक ने जुलाई 2021 में दो वार्षिक वेतन वृद्धि रोकने का आदेश जारी कर उसे दंडित कर दिया। इसकी अपील उसने शिक्षा सचिव के यहां पर की। जिस पर मार्च 2024 में शिक्षा सचिव ने उसकी अपील को आंशिक मंजूर करते हुए एक वार्षिक वेतन वृद्धि रोकने के लिए कहा। इसे हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए कहा कि स्कूल के सीनियर टीचर्स का गणित व अंग्रेजी का परीक्षा परिणाम कम आया था, लेकिन कार्रवाई याचिकाकर्ता पर हुई है, जबकि उसके स्कूल का परीक्षा परिणाम सदैव उत्कृष्ट रहा है। केवल एक साल का कम परिणाम आने पर ही उसे दंडित नहीं कर सकते। उसने सिलेबस पूरा करवा कर छात्रों को पूरी साल पढ़ाए जाने का प्रयास किया।

'भूतपूर्व सैनिक कोटे का लाभ लेने के बाद पुनः नहीं लिया जा सकता फायदा'

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि सरकारी सेवा में एक बार भूतपूर्व सैनिक कैटेगरी का लाभ लेने के बाद दूसरी बार यह कहते हुए इस कैटेगरी का फायदा नहीं लिया जा सकता कि वह परिवीक्षा अवधि में चल रहा है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में दायर याचिका को खारिज कर दिया है। जस्टिस आनंद शर्मा की एकलपीठ ने यह आदेश नरेन्द्र सिंह की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में कहा गया कि याचिकाकर्ता ने जूनियर अकाउंटेंट भर्ती में भूतपूर्व सैनिक कोटे में भाग लिया था। उसके इस वर्ग की कट ऑफ से अधिक अंक आए थे। वहीं उसे यह कहते हुए नियुक्ति से वंचित कर दिया कि भूतपूर्व सैनिक कोटे के तहत वीडीओ पद पर लगा हुआ है। जबकि वह इस पद पर दो साल के लिए परिवीक्षा पर है। ऐसे में बतौर अस्थाई कर्मचारी, वह जूनियर अकाउंटेंट भर्ती में भूतपूर्व सैनिक कोटे का लाभ लेने का अधिकारी है। इसका विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता संदीप माहेश्वरी ने कहा कि याचिकाकर्ता नियमित भर्ती में चयनित होकर वीडीओ के स्थाई पद पर नियुक्त हुआ था। ऐसे में केवल परिवीक्षा के आधार पर उसे अस्थाई कर्मचारी नहीं कहा जा सकता। जब कोई भूतपूर्व सैनिक नियमित रोजगार प्राप्त कर लेता है तो वह इस श्रेणी के तहत आगे आरक्षण प्राप्त करने के लिए पात्र नहीं रहता है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने याचिका को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि परिवीक्षा अस्थाई नियुक्ति के समान नहीं है और इससे उसकी नियुक्ति का कानूनी स्वरूप नहीं बदलता है।

दो मोबाइल लुटेरे गिरफ्तार, 9 फोन जब्त

जयपुर। ट्रांसपोर्ट नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दो मोबाइल लुटेरों को गिरफ्तार किया हैं। साथ ही पुलिस ने इन दोनों आरोपियों के पास से लूटे गए नौ मोबाइल फोन भी बरामद किए गए है। पुलिस जांच में सामने आया कि ये लोग भीडभाड़ वाली जगहों पर राहगीरों के साथ उलझते है, जिससे राहगीर आरोपियों के साथ उलझता जिस का फायदा उठा कर ये उसका मोबाइल फोन लूट कर फरार हो जाते थे।

मुख्यमंत्री ने महारानी फार्म पुलिया के नवीनीकरण कार्य का लोकार्पण किया

आमजन को वर्षाकाल में आवागमन में होगी सुविधा : भजनलाल शर्मा

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मानसरोवर क्षेत्र में महारानी फार्म-मानसरोवर लिंक ब्रिज के नवीनीकरण कार्य का फीता खोलकर लोकार्पण किया। लगभग 6 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से पुलिया के नवीन निर्माण कार्य के अंतर्गत बॉक्स कल्वर्ट पद्धति से इसकी ऊंचाई 2 मीटर तक बढ़ाई गई है। इससे वर्षाकाल में पुलिया पर द्रव्यवती नदी के जल का बहाव नहीं होने से पुलिया पर यातायात सुचारू होगा तथा आमजन को बड़ी राहत मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि दुर्गापुरा टोंक रोड क्षेत्र को मानसरोवर से जोड़ने वाली यह पुलिया महारानी फार्म एवं अग्रवाल फार्म के मध्य द्रव्यवती नदी पर स्थित है। पूर्व में इस पुलिया की ऊंचाई कम होने के कारण वर्षाकाल में नदी का पानी पुलिया के ऊपर से बहकर निकलता था, जिससे यातायात अवरूद्ध हो जाता था। आमजन को इससे होने वाली परेशानी को देखते हुए मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने पुलिया की ऊंचाई बढ़ाने के निर्देश दिए थे। इस अवसर पर नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा, नगर-निगम ग्रेटर उप-महापौर पुनीत कर्णावट सहित जेडीए एवं संबंधित विभागों के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मानसरोवर क्षेत्र में महारानी फार्म-मानसरोवर लिंक ब्रिज के नवीनीकरण कार्य का लोकार्पण किया।

नवरात्र स्थापना पर शिला माता के दरबार में उमड़ी भक्तों की भीड़

सिटी पैलेस से आई परंपरागत पोशाक माता माता रानी को धारण करवाई

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। शारदीय नवरात्रों की शुरुआत सोमवार को भक्तिभाव से हुई। सोमवार अल सुबह से ही भक्त शिला माता के दर्शन करने के लिए आमेर पहुंचे और लंबी कतार में लग कर माता रानी के दर्शनों का इंतजार करते नजर आए। आमेर दुर्ग स्थित प्रसिद्ध शिला माता मंदिर में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। जिससे मंदिर परिसर माता के जयकारों से गूंज उठा। कई भक्त दंडवत प्रणाम करते हुए माता के दरबार तक पहुंचे। दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों से भी भक्तों ने इस अवसर पर भाग लिया। जो मंदिर की लोकप्रियता और महत्व को दर्शाता है।

मंदिर महंत बनवारी लाल शर्मा (शास्त्री) ने बताया कि सोमवार सुबह 6 बजकर 25 मिनट पर मंदिर परिसर में घट स्थापना की गई। जिसके बाद साढ़े 7 बजे श्रद्धालुओं के लिए मंदिर के पट खोले गए। भक्तों के लिए दर्शन का समय सुबह साढ़े 7 से साढ़े 12 बजे और शाम साढ़े 4 से साढ़े 8 बजे तक रहेगा। वहीं गर्भगृह के सामने वैदिक मंत्रों और तांत्रिक विधि से पूजा करने के बाद मंदिर के पट भक्तों के दर्शनों के लिए खोला गया।

शारदीय नवरात्र की घट स्थापना पर सोमवार को आमेर किले स्थित शिला माता मंदिर में दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी।

मंदिर महंत ने बताया कि शारदीय नवरात्रों में प्रतिदिन मंदिर प्रांगण में दुर्गा सप्तशती के पाठ ,हवन,पुष्प श्रृंगार और फूल बंगले की झांकी सजाई जाएगी। इसके अलावा 10 महाविद्याओं के स्तोत्र पाठ,मंत्र जाप और कन्या बटुक पूजन किया जाएगा।

शारदीय नवरात्रों में प्रतिदिन माता रानी को बाल भोग,राजभोग और सायंकालीन भोग अर्पण किया जाएगा। शारदीय नवरात्रों में सिटी पैलेस से आने वाली परंपरागत पोशाक माता रानी को धारण कराई गई। इसी के साथ माता शिला का भव्य श्रृंगार किया गया।

■ **आमेर में छठ को भरेगा विशाल मेला, हजारों श्रद्धालु उमडेंगे**

बताया जा रहा है कि साल में दो बार नवरात्रे आते है और छठ तिथि को आमेर में विशाल मेले का आयोजन होता है। जिसमें दूर-दराज से भी श्रद्धालु आते है। इस बार 28 सितम्बर छठ तिथि को आमेर में विशाल मेले का आयोजन किया जाएगा।

सोमवार को पहले नवरात्रों में दूर -दूर से श्रद्धालु शिला माता के दर्शनों के लिए पहुंचे। कुछ श्रद्धालु दडवत करते माता रानी के समक्ष पेश हुए। दडवत करने वाले श्रद्धालुओं के लिए मंदिर प्रशासन ने अलग से ही पक्ति लगाई। ताकी दडवत करने वाले भक्तों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना ना करना पडे। वहीं बढती भीड को देखते हुए मंदिर प्रशासन ने भक्तों की छाया के लिए काफी उत्तम व्यवस्था की। इसी के पानी की भी व्यवस्था की

शारदीय नवरात्रों में आमेर की शिला माता के अलावा दुर्गापुरा स्थित दुर्गा माता मंदिर,राजा पार्क के पंचवटी सर्किल पर माता वैष्णो देवी मंदिर ,झालानी स्थित माता वैष्णो देवी मंदिर में भी धूमधाम से घट स्थापना की गई। ज्योतिषाचार्य पं. दामोदर प्रसाद शर्मा के अनुसार दस दिनों में आठ दिन रवियोग, गजकेसरी और सर्वार्थ सिद्धि का संयोग रहेगा।

महिलाओं के गले से चेन तोड़ने वाली शातिर महिला गिरफ्तार

जयपुर । गोविंददेवजी मंदिर में सोमवार को महिलाओं के गले से सोने की चेन तोड़ने वाली शातिर महिला को पुलिस ने दबोच लिया। पुलिस ने बावरियां गैंग की इस महिला से लूट की दो चेन बरामद की है। गिरफ्तार आरोपित महिला ने गिरोह के अन्य लोगों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर उत्तर करन शर्मा ने बताया कि माणक चौक थाना इलाके में स्थित गोविंद देव जी मंदिर में महिलाओं के गले से सोने की चेन जोड़ने वाली शातिर महिला साहिबा उर्फ राखी पत्नि राहुल उर्फ निवासी- भरतपुर हाल खाना बदोस जवाहर सर्किल जयपुर को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने आरोपित महिला से पास से दो सोने की चेन बरामद की। आरोपित साहिबा उर्फ राखी मंदिरो मे आने वाली महिला दर्शनार्थियों की भीड़ मे शामिल होकर महिला श्रद्धालुओं द्वारा पहने हुए गले की चैन पर नजर रखकर मौका मिलते ही भीड़ का फायदा उठाकर उनके चैन चोरी कर लेती है तथा तुरंत वहां से निकल कर अपने ठिकाने पर ना जाकर अलग अलग जगह पर शरण लेती है।

पडौसी ने किया विवाहिता से दुष्कर्म

जयपुर । मुहाना इलाके में एक विवाहिता से पडौसी ने दुष्कर्म किया और अश्लील वीडियो बना उसे ब्लैकमेल करने लगा। आरोपी की धमकी से परेशान होकर विवाहिता ने मामले की जानकारी अपने परिवार के लोगों को दी। जिसके बाद परिजनों ने विवाहिता को थाने ले जाकर आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज कराया। पुलिस ने बयानों के आधार पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज उसकी तलाश शुरु कर दी है। थानाधिकारी गुर भूपेंद्र ने बताया कि 20 वर्षीय विवाहिता का आरोप है कि 5 सितम्बर को वो घर पर अकेली थी।

कोटा में ''राष्ट्रीय मेला दशहरा-2025'' का रंगारंग आगाज़

ध्वजारोहण के साथ मेला शुरुआत की उद्घोषणा की, आतिशबाजी की और गुब्बारे उड़ाए

कोटा, (निसं)। राष्ट्रीय मेला दशहरा-2025 का सोमवार को रंगारंग आगाज हुआ। मुख्य अतिथि लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने ध्वजारोहण, आतिशबाजी के बाद मेला शुरुआत की औपचारिक उद्घोषणा की। वहीं आसमान में गुब्बारे उड़ाकर मेले की भव्यता का परिचय कराया।

कार्यक्रम में विधायक संदीप शर्मा, कल्पना देवी, शहर भाजपा जिला अध्यक्ष राकेश जैन, महापौर राजीव अग्रवाल, मेला अध्यक्ष विवेक राजवंशी, मेला अधिकार अशोक कुमार त्यागी, आयुक्त ओमप्रकाश मेहरा, अतिरिक्त मेला अधिकारी महेश गोयल, मेला प्रभारी सत्यनारायण राठौर, उपायुक्त महावीर सिंह सिसोदिया मौजूद रहे।

कोटा में 132वें राष्ट्रीय मेला दशहरा 2025 का आगाज गुब्बारे छोड़कर किया गया।

- मेले स्वदेशी का आधार स्तम्भ हैं, हमारे स्वदेशी उत्पादों की ताकत दुनिया में बढ़ रही : ओम बिरला

लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि हमारे मेले स्वदेशी का आधार स्तम्भ हैं। हमारे स्वदेशी उत्पादों की ताकत दुनिया में बढ़ रही है। इनकी ताकत से हम आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं। इसके साथ लोगों को आर्थिक बचत भी हो, महंगाई कम करके मेले में ज्यादा से ज्यादा लोग स्वदेशी वस्तुएं खरीदें। उन्होंने कहा कि मेले में संस्कृति, संस्कार और विरासत के साथ आधुनिकता का संगम दिखाई देता है। इस बार मेले में विशेष बाजार दिखेंगे। देशभर की अलग-अलग हिस्सों की संस्कृति, वहां बनने वाले हस्तशिल्प और अन्य वस्तुएं नजर आएंगी। अलग-अलग प्रदेशों की कला एक छत के नीचे नजर आएगी। सभी समाज और धर्म को मानने वाले लोग सभी संस्कृतियों का उत्सव मेले में दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि श्रीराम के चरित्र का वर्णन रामलीला के माध्यम से मेले के दौरान किया जाएगा। भगवान राम ने अपने आदर्श जीवन के द्वारा लोगों को प्रेरणा देने का काम किया है। उनका समर्पण, त्याग और तपस्या हमें सदैव प्रेरित करती है। शोषित पीड़ित व्यक्तियों के आत्मसम्मान के लिए राम की लड़ाई पूरी दुनिया के लिए अदभुद है। श्रीराम ने अहंकार रूपी राक्षसी वृत्ति के प्रतीक रावण को समाप्त किया था। कभी भी अहंकारी व्यक्ति ज्यादा समय तक दिलों पर राज नहीं कर सकता। भगवान राम ने वनवासी के रूप में जीवन जीते हुए भी रावण जैसे शासन पर बैठे हुए व्यक्ति पर विजय प्राप्त की। महापौर राजीव भारती ने कहा कि राष्ट्रीय मेला दशहरा में विरासत, परंपरा, धरोहर का अमूल्य संगम दिखाई देता है। कोटा का मेला हमारे लिए गौरव का विषय है। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के मार्गदर्शन में इसे भव्य बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। नवाचारों के द्वारा इसका स्वरूप बदल गया है। धन्यवाद देते हुए महिला अध्यक्ष विवेक राजवंशी ने कहा कि हम राम बारात को भव्य बनाने का प्रयास कर रहे हैं। पहली बार राम बारात के मार्ग को लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के प्रयासों से बदला गया है। मेले से जन-जन का जुड़ाव हो, मेला केवल मेला समिति का नहीं है, बल्कि हर कोटा वासी का है।

बहीर क्षेत्र में उपजे साम्प्रदायिक तनाव में आठ आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में वृत्ताधिकारी टोंक राजेश विद्यार्थी व थानाधिकारी कोतवाली भंवरलाल के नेतृत्व में टीम गठित द्वारा बहीर क्षेत्र में 19 सितम्बर को हुए साम्प्रदायिक तनाव को लेकर उत्पन्न हुई घटना में शामिल आठ आरोपियों को गिरफ्तार कर व पांच बाल अपचारियों को निरुद्ध किया है।

थानाधिकारी ने बताया कि 19 सितम्बर को सांयकाल बहीर क्षेत्र में कुछ नाबालिग लड़कों ने इस्ट्राग्राम पर लगी एक स्टोरी को लेकर बहीर में परिवादी पक्ष के एक लड़के को रोका व पोस्ट करने वाले लड़के को ढूंढते हुये

- घटना में शामिल पांच बाल अपचारियों को भी निरुद्ध किया

उसके घर भगतों की ढाणी में आपराधिक आशय से गये। वहां पर वारदात करने के बाद वापसी में भागते समय परिवादी पक्ष के मकान में घुसकर अन्दर लगी एमरोड़ी (कशीदा मशीन) मशीनों में तोड़ फोड़ की व एक मोटर साइकिल को तोड़ दिया व बहीर से श्मशान रोड तिराहे पर एकत्रित होकर इस्टांग्राम पर पोस्ट करने वाले लड़के की गिरफ्तारी की मांग को लेकर नारेबाजी करने लगे व माहौल खराब करने की कोशिश की गई। जिसके बाद थाना कोतवाली पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर वीडियो फुटेज की सूचना व तकनिकी सहायता के आधार पर आरोपी आसिफ खान, रेहान खान पुत्र नियाज मोहम्मद, फारिक बेग उर्फ जाकिर, बिलाल पुत्र मोहम्मद इस्लाम, शाहवेज उर्फ शाबु पुत्र मोहम्मद आमीर, शारिक हुसैन पुत्र हामिद हुसैन, मोहम्मद अजहर पुत्र अहमद नूर व फाजिल पुत्र खलीलनिवासी बहीर टोंक को गिरफ्तार कर पांच बाल अपचारियों को निरुद्ध किया है।

29 क्विंटल जब्तशुदा अवैध डोडा पोस्त एवं 16 किलो गांजा नष्ट किया

ब्यावर, (निसं)। 22 सितंबर को पुलिस मुख्यालय द्वारा चलाया जा रहा राष्ट्रव्यापी अवैध मादक पदार्थ निस्तारण पखवाड़े के तहत जिले के थानों पर अवैध मादक पदार्थ तस्करी से संबंधित दर्ज प्रकरणों में बरामद अवैध मादक पदार्थों के नष्टीकरण हेतु न्यायालय से आदेश प्राप्त कर अवैध डोडा-पोस्त एवं गांजा ब्यावर शहर के बाहर निश्चित स्थान पर जलाकर नष्ट किया गया। जिला पुलिस अधीक्षक ब्यावर रतन सिंह ने बताया कि राष्ट्रव्यापी अवैध मादक पदार्थ निस्तारण पखवाड़े के तहत जिला के थानों पर एन.डी.पी. एस. के प्रकरणों में जब्त अवैध मादक पदार्थों के नष्टीकरण (भस्मीकरण) करने हेतु पुलिस मुख्यालय से निर्देश प्राप्त हुऐ थे, जिस पर नियमानुसार जिन प्रकरणों में एन.डी.पी.एस. एक्ट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर 26 प्रकरणों में जब्तशुदा अवैध डोडा-पोस्त एवं गांजा नष्ट करने हेतु नष्टीकरण समिति का गठन किया जाकर 22 सितंबर का दिन नियत किया गया था। निर्देशानुसार जिले के समस्त थानाधिकारीगण प्रकरणों में जब्त मादक पदार्थों को श्रीसीमेंट फैक्ट्री, ब्यावर लेकर पहुंचे, जहां गठित समिति के अध्यक्ष जिला पुलिस अधीक्षक ब्यावर रतन सिंह आईपीएस तथा सदस्य अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक ब्यावर भूपेन्द्र शर्मा व जयराम पुलिस निरीक्षक अपराध सहायक मय थानाधिकारी की उपस्थिति में नष्टीकरण के तहत थानों पर जब्त अवैध मादक पदार्थों का नष्टीकरण किया गया। नष्टीकरण की प्रक्रिया में करीब 29 क्विंटल डोडा-पोस्त एवं 16 किलोग्राम गांजा को जलाया जाकर नष्ट किया जाकर संपूर्ण कार्यवाही की वीडियोग्राफी व फोटोग्राफी करवाई गई।

डॉ. फतेह सिंह भाटी को ''मनुज साहित्य सम्मान-2025'' मिला

जयपुर/चूरू। डॉ. ओ.पी. शर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट, चूरू की ओर से रविवार को नगर-श्री चूरू के सभागार में आयोजित साहित्य समारोह में जोधपुर के जाने माने साहित्यकार डॉ. फतेह सिंह भाटी को प्रतिष्ठित मनुज साहित्य-सम्मान 2025 अर्पित किया गया। सम्मान स्वरूप सम्मान पत्र, शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न एवं ग्यारह हजार रुपये प्रदान किये गये। इस अवसर पर

नगर-श्री चूरू के सभागार में आयोजित समारोह में साहित्यकार डॉ. फतेह सिंह भाटी को सम्मानित किया।

- साहित्य समारोह में कहानी संग्रह ''वजूद'' का लोकार्पण किया

स्नेहलता शर्मा के हिन्दी कहानी संग्रह ''वजूद'' का लोकार्पण भी हुआ।

समारोह अध्यक्ष और विचारक प्रोफेसर कमल सिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. ओमप्रकाश शर्मा का जीवन हर व्यक्ति के लिए प्रेरणादायी है। उनके व्यक्तित्व से हम सीख सकते हैं कि प्रतिकूल परिस्थिति में अपने इरादे दृढ़ रखते हुए किस प्रकार आगे बढ़ा जाता है। जेन-जी जैसे नए किंतु विध्वंसक तत्वों को किनारे करते हुए हमें एक संस्कारवान पीढ़ी तैयार करनी है और इस कार्य के लिए डॉ. ओमप्रकाश शर्मा जैसे उज्ज्वल चरित्रों से ही प्रेरणा मिल सकती है। उन्होंने पुस्तक वजूद की कहानियों की सराहना की। मुख्य अतिथि, वरिष्ठ लेखक और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के उप निदेशक कुमार अजय ने साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि साहित्य मानसिक स्वास्थ्य की सबसे बड़ी दवा है। साहित्य कला से दूर होते समाज में निरंतर मनोरोगियों की संख्या बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि हमें पुरखों की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने का प्रयास सराहनीय है। साहित्यकार डॉ. फतेहसिंह भाटी ने कहा कि सच्चा साहित्यकार वह होता है, जो अपने लेखन में लोकमानस में रचे-बसे पात्रों को जीवन्त करता है, क्योंकि इन पात्रों को अगली पीढ़ी तक लेकर जाना बहुत जरूरी है। साहित्यकार का यह भी दायित्व है कि वह ऐसे पात्रों को भी अपने रचनाकर्म में सम्मिलित करे, जिनके विषय में लोगों को अधिक जानकारी नहीं है।

रवीन्द्र शर्मा ने कहा कि साहित्य के लिए अपना जीवन होम करने वाले साधकों का सम्मान करना संस्थाओं और समाज का कर्तव्य है। स्नेहलता शर्मा ने कहा कि साहित्य में सत्यं-शिवम-सुंदरम का आदर्श सर्वोच्च होना चाहिए। प्रबन्धन ट्रस्टी डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, एडवोकेट सुरेश शर्मा, श्यामसुंदर शर्मा, विनोद मेहता, डॉ. प्रमोद बाजोरिया, गुरुदास भारती, रवींद्र शर्मा, राजेन्द्र मुसाफ़िर, आशुतोष, इदरीस खत्री, ओमप्रकाश तंवर आदि ने सम्मान्य साहित्यकार व अतिथियों का स्वागत-अभिनन्दन किया। मंच संचालन साहित्यकार प्रोफेसर सुरेन्द्र सोनी ने किया। इस अवसर पर ऊषा शर्मा, अनसुईया शर्मा, पुष्पा शर्मा, मीना सोनी, आनंदबाला, विजयलक्ष्मी पारीक, भगवती पारीक, सरोज, लाजवंती मुद्गल, उमा सारस्वत, दीपिका शर्मा, डॉ. कमल वशिष्ठ, विष्वनाथ तंवर, बाबूलाल शर्मा, मनमीत सोनी, हरिसिंह, रमेश सोनी, बाबूलाल शर्मा, विजयकान्त, दिनेष तोषाण, षिवकुमार गोइन्का, बृजेन्द्र दाधीच, शैलेन्द्र माथुर, सोमेश शर्मा, सज्जन लाटा, सहित अनेक प्रबुद्ध श्रोता उपस्थित थे।

कार से 102 किलो डोडा-चूरा के साथ एक गिरफ्तार, दूसरा फरार

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की सवाईपुर चौकी पुलिस ने रविवार रात अवैध मादक पदार्थ के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक बलेनो कार से 102 किलो डोडा-चूरा को जब्त करते हुए एक जने को गिरफ्तार किया, वहीं दूसरा फरार हो गया।

पुलिस ने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह द्वारा चलाये जा रहे अवैध मादक पदार्थ की धरपकड़ अभियान के तहत पारस जैन अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुख्यालय भीलवाड़ा व बाबू लाल बिश्नोई वृताधिकारी वृत्त माण्डलगढ़ भीलवाड़ा के निकटतम सुपरविजन में जय सुल्तान कार्यवाहक थानाधिकारी बडलियास मय टीम के कार्रवाई की। जानकारी के अनुसार रविवार को थाना बड़लियास की चौकी सवाईपुर कांस्टेबल श्रवण कुमार व मुकेश कुमार दोनों कोटड़ी चौराहा, सवाईपुर पर गश्त कर रहे थे। उसी दौरान बिगोद कि तरफ से एक सफेद रंग कि बलेनो गाड़ी तेज गति से आई, जिसमें दो व्यक्ति बैठे थे। दो व्यक्ति संदिग्ध प्रतित होने से कांस्टेबल द्वारा पीछा कर चौकी सवाईपुर के सामने बेरिकेट्स लगाकर गाड़ी को रूकवाया, जहां चालक राहुल तेली पिता गिरधारी लाल तेली निवासी साडास, जिला चित्तौड़गढ़ को पीछा कर पकड़ा व खलासी साईड में बैठा व्यक्ति हितेश चौधरी भाग गया। गाड़ी में देखा तो पीछे वाली सीट पर दो काले रंग प्लास्टीक कट्टे व डिग्गी में तीन कालें रंग प्लास्टीक कट्टे पड़े हुये मिले, जिनकी तलाशी लेने पर डोडा-चूरा भरा हुआ पाया होने से उच्चाधिकारियों को सूचना दी। इस पर कार्यवाहक थानाधिकारी जय सुल्तान पुनि बड़लियास थाना कांस्टेबल शैतान सिंह मौके पर गये व कार कि तलाशी ली गई तो कार में पाँच कट्टों में 102.590 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा पाया गया। डोडा-चूरा व कार को जब्त कर राहुल तेली पिता गिरधारी लाल तेली निवासी गेहर का चौक साडास थाना साडास जिला चित्तौड़गढ़ को गिरफ्तार कर प्रकरण दर्ज किया गया।

कुलपति विवादित बोल मामला: छात्रों ने काली पट्टी बांधकर विरोध जताया

उदयपुर, (का.सं.)। उदयपुर की मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी की कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा के खिलाफ छात्रों का विरोध जारी है।अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने विरोध के रूप में सोमवार को यूनिवर्सिटी प्रशासनिक भवन के बाहर सफाई अभियान चलाया। इस दौरान छात्रों ने भवन की सीढ़ियों पर रखे गमलों को व्यवस्थित जमाया। वहां आसपास जमी मिट्टी को झाड़ू से साफ किया और पत्थरों को वहां से हटाया। इसके बाद कार्यकर्ताओं ने आंखों पर काली पट्टी बांधकर विरोध जताया और सीढ़ियों पर बैठ गए, जहां नारे लगाए गए।

एबीवीपी महानगर मंत्री पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ ने कहा कि औरंगजेब को कुशल शासक बताने वाले कुलपति के बयान से लगता है कि उन्हें मेवाड़ के वीर पराक्रमी योद्धाओं के बारे में ठीक से जानकारी नहीं है। इतिहास उन्होंने नहीं पढ़ा है। ऐसे कुलपति को जब तक पद से नहीं हटाया जाता, तब तक विरोध जारी रहेगा। विरोध में कुलदीप सिंह, त्रिभुवन सिंह, पार्थ दीक्षित, चिराग दायमा, अंशुमान सिंह, चिराग तिवारी सहित कई छात्र मौजूद रहे। वहीं कुलपति के खिलाफ जांच को लेकर राजभवन के निर्देश पर गठित की गई जांच समिति को 6 दिन हो चुके है। संभागीय आयुक्त प्रज्ञा केवल रमानी की अध्यक्षता में 4 सदस्यीय टीम जांच में जुटी है। टीम जल्द ही राज्यपाल को अपनी रिपोर्ट सौंप सकती है।

चोरी के दो आरोपी गिरफ्तार

बांसवाड़ा, (निसं)। थाना कसारवाड़ी क्षेत्र के जालिमपुरा गांव में जलोत्थान सिंचाई योजना के सौर ऊर्जा प्लांट से बिजली की केबल चोरी करने के दो आरोपी अनिल पुत्र दूदा डामोर निवासी रूपगढ़ व अल्पेश पुत्र रमेश बारिया निवासी गोयका बारिया को गिरफ्तार करते हुए 25 किलोग्राम ताम्बा जब्त किया गया है। थानाधिकारी नरेन्द्र सिंह ने बताया कि गत 12 सितम्बर को प्रार्थी निलेष रावत निवासी जालिमपुरा ने रिपोर्ट दी कि 10 सितम्बर की रात्रि को चोरों ने प्लांट में लगी केबल व वाईरिंग केबल चुराई थी।

ब्रेन डेड घोषित होने के बाद छात्र दुर्गाशंकर गुर्जर के अंगदान किये

जेएलएन मेडिकल कॉलेज में 60 साल में पहला अंगदान हुआ

अजमेर, (कासं)। शारदीय नवरात्रि के पावन दिनों में जब घर-घर घट स्थापना के साथ श्रद्धालु नवरात्र महोत्सव में जुटे थे, तभी अजमेर में ग्रीन कोरीडोर के माध्यम से अजमेर के जवाहरलाल नेहरू अस्पताल में 9वीं कक्षा के 16 वर्षीय छात्र दुर्गा शंकर गुर्जर ने इंसानियत की मिसाल पेश की, जिसे भूलना मुश्किल है। ब्रेन डेड घोषित होने के बाद दुर्गाशंकर के पिता जवानराम गुर्जर ने बेटे के अंगदान का फैसला लेकर तीन लोगों की नई जिंदगी रोशन की। ग्रीन कॉरिडोर के माध्यम से जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में किडनी, लिवर और फेफड़ों को भेजा गया है, जबकि हार्ट सही परफोरमेंस नहीं कर पाने, जांच में कमियां सामने आने पर तथा चेन्नई की दूरी अधिक होने की वजह से हार्ट चेन्नई भेजना कैंसिल कर दिया।

केकड़ी के रहने वाले दुर्गाशंकर गुर्जर 9वीं कक्षा के छात्र थे। 16 सितंबर को सिरदर्द और उल्टी की शिकायत के बाद केकड़ी के सरकारी अस्पताल में भर्ती किया गया, नाजुक हालत को देखते हुए अजमेर के जेएलएन अस्पताल रैफर किया गया। चार दिन इलाज के बाद 21 सितंबर की रात 2 बजे उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया। जेएलएन मेडिकल कॉलेज की अंगदान के प्रेरित करने वाली टीम ने परिवार से संपर्क कर उन्हें अंगदान के लिए प्रेरित किया। जेएलएन मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. अनिल सामरिया ने बताया कि जब परिवार ने सहमति दे दी तो तत्काल एसएमएस मेडिकल कॉलेज जयपुर और चेन्नई मेडिकल कॉलेज से संपर्क किया गया। जयपुर से आई टीम के

108 एंबुलेंस से शव को गांव रवाना किया।

- लिवर व लंग्स जयपुर एसएमएस अस्पताल भेजा, हार्ट का चेन्नई जाना कैंसिल हुआ

प्रभारी हार्ट सर्जन डॉ. संजीव देवगोडा, डॉ. ध्रुव शर्मा, लिवर सर्जन डॉ. दिनेश भारती, किडनी सर्जन डॉ. रामदयाल साहू, चेन्नई से हार्ट सर्जन डॉ. अरुण और डॉ. जगदीश अजमेर पहुंचे। चेन्नई के डॉक्टर्स की टीम बिना समय गवांए हवाई जहाज से अजमेर पहुंची। किशनगढ़ एयरपोर्ट पर चार्टेट प्लेन की भी व्यवस्था की गई थी। जयपुर और चेन्नई से डॉक्टरों की टीम 21 सितंबर रात ही जेएलएन अस्पताल पहुंच गई थी। शुरुआती योजना हार्ट को चेन्नई भेजने की थी, लेकिन हार्ट कमजोर पाया गया और दूरी के कारण जोखिम बढ़ जाता, इसलिए दो किडनी और लिवर सुरक्षित निकालकर ग्रीन कॉरिडोर के जरिए जयपुर के एसएमएस अस्पताल भेजे गए। इनसे तीन लोगों को नई जिंदगी मिलेगी। अस्पताल प्रशासन, पुलिस और जिला प्रशासन ने मिलकर अजमेर से जयपुर तक ग्रीन कॉरिडोर तैयार कराया। कलेक्टर लोकबंधु, एसपी वंदिता राणा और एएसपी ग्रामीण दीपक शर्मा के नेतृत्व में कॉरिडोर तैयार किया गया। जयपुर की टीम में हार्ट सर्जन डॉ. संजीव देवगोडा, लिवर सर्जन डॉ. दिनेश भारती, किडनी सर्जन डॉ. रामदयाल साहू और डॉ. जगदीश शामिल रहे।

प्राचार्य डॉ. सामरिया ने बताया कि छात्र दुर्गाशंकर की दिमाग की नस फटने से ब्रेन डेथ हो गया था, जबकि उसके शरीर के बाकी अंग सामान्य रूप काम कर रहे थे। उन्होंने कहा अंगदान करने में समय महत्वपूर्ण होता है, इसलिए परिवार का तुरंत निर्णय बेहद अहम साबित हुआ। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी इस मौके पर अस्पताल पहुंचे और उन्होंने छात्र दुर्गा शंकर के परिवार को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि यह कदम समाज में अंगदान को लेकर नई जागरूकता पैदा करेगा, उन्होंने कहा कि परिवार ने बहुत ही पुण्य का काम किया है। आमतौर पर परिवार हिम्मत नहीं जुटा पाता है। चिकित्सा के क्षेत्र में अंगदान से लोगों के जीवन को बचाया जा रहा है। अस्पताल परिसर में श्रद्धांजलि सभा हुई। दुर्गा के पिता जवानराम गुर्जर किसान हैं। मृतक के भाई रवि शंकर और दिनेश गुर्जर पेशे से नर्सिंग कर्मी हैं। उनकी बहन समा गुर्जर बीएससी नर्सिंग छात्रा है। जवानराम ने ईश्वर से प्रार्थना की कि उनके पुत्र के अंगदान सफल हों और जिन्हें ट्रांसप्लांट किया जा रहा है, उन्हें शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिले। मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल प्रबंधन ने दुर्गा शंकर को सम्मान के साथ विदाई दी। आपातकालीन विभाग में सभी डॉक्टर्स एकत्रित हुए, जैसे ही दुर्गा शंकर के शव को ऑपरेशन थियेटर से लेकर नीचे आया तो सभी चिकित्सकों ने पुष्प अर्पित किए। 108 एंबुलेंस को माला से सजाया गया और परिवार उसमें बैठकर अपने गांव रवाना हुआ।

डॉ. अरविंद खरे, अधीक्षक जेएलएन अस्पताल अजमेर का कहना है कि जेएलएन अस्पताल और मेडिकल कॉलेज के 60 साल के इतिहास में यह पहला अवसर रहा, जब किसी मृतक दाता के शरीर से अंग निकाले गए और अंगों को ट्रांसप्लांट के लिए भेजा गया।

वल्लभ नगर में तीन इंच बारिश

उदयपुर, (कासं)। मानसून के विदा होने से पहले उदयपुर संभाग के कई क्षेत्रों में बारिश का दौर जारी है। पिछले 24 घंटों में वल्लभनगर में तीन इंच (72 मिमी) बारिश दर्ज की गई। इधर कई जलाशयों में पानी की आवक भी बनी हुई है। रूक-रूक कर बारिश होने के बावजूद गर्मी का असर तेज बना हुआ है। सोमवार को उदयपुर में अधिकतम तापमान 32.5 तथा न्यूनतम तामपान 23.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जल संसाधन विभाग ने उदयसागर के दोनों गेट बंद कर दिए हैं। उदयसागर का जलस्तर 24 फीट के मुकाबले सोमवार को 22 फीट 8 इंच है। आयड़ नदी से आवक जारी है। फतहसागर में पानी की आवक बनी रहने से चारों गेट खुले रखे गए हैं। सीसारमा नदी में 2 फीट 8 इंच पानी का बहाव बना हुआ है।

दुष्कर्म के आरोपी फरार, तलाश जारी

अनूपगढ़, (निसं)। रावला क्षेत्र में मंदबुद्धि महिला के साथ दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पीड़िता के घर में दो लोगों ने घुसकर उससे दुष्कर्म किया। आरोपी पूर्व सरपंच श्रवण राम और केशराराम हैं। पीड़िता के पति की गैर मौजूदगी में दोनों आरोपी शराब के नशे में घर में घुसे। पीड़िता ने 13 सितंबर को रावला थाने में मामला दर्ज करवाया। घटना के बाद से पीड़िता मानसिक सदमे में है। उसका इलाज बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में चल रहा है। 9 दिन बीत जाने के बाद भी आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई है। इसके विरोध में समाज ने बैठक की। समाज के लोगों ने इसे पूरे समाज पर हमला बताया। बैठक के बाद डीएसपी प्रशांत कौशिक को ज्ञापन सौंपा गया।

विद्युत तार व नल चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

बांसवाड़ा, (निसं)। लोहारिया थाना पुलिस ने मंदिरों व विद्यालयों से विद्युत वायर व नल की टोटी चोरी करने के आरोपी को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी शिशुपाल सिंह ने बताया कि गत 18 सितम्बर को पृथ्वीराज सिंह पुत्र मनोहर सिंह चौहान हाल कार्यवाहक प्रधानाचार्य पीएमश्री राउमावि लोहारिया ने रिपोर्ट दी कि 14 सितम्बर को अवकाश के चलते विद्यालय बंद था। विद्यालय परिसर में विभिन्न स्थानों पर लगी 13 नल कमी स्टील टोटियां व हॉल के अंदर लगभग 150 फीट विद्युत वायर दिन के समय अज्ञात बदमाश चुरा ले गये, जिसकी जानकारी 15 सितम्बर को हुई। साथ ही सोशल मीडिया से इसी तरह की वारदात अन्य विद्यालयों में होने की जानकारी मिली। इसी तरह 19 सितम्बर को लक्ष्मण बुनकर ने रिपोर्ट दी कि सोमनाथ मंदिर से केबल, कपालेश्वर मंदिर से हैलोजन व केबल तथा कोडिया गणपति मंदिर से भी विद्युत केबल चोरी हुई है। पुलिस ने दो प्रकरण दर्ज किये।

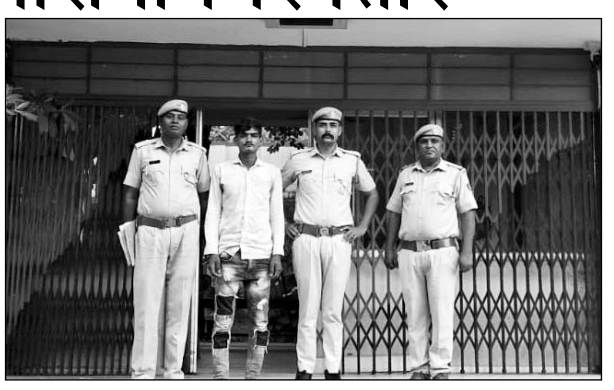

लोहारिया थाना पुलिस ने चोरी करने के आरोपी को गिरफ्तार किया।

उच्चाधिकारियों के निर्देश पर वारदातों के खुलासों के लिये टीम गठित की। इस टीम ने मुखबीरों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर संदिग्धों से गहनता से पूछताछ की। वहीं विद्यालय से सीसीटीवी फुटेज प्राप्त किये तो आरोपी की पहचान अरविन्द पुत्र नाथुलाल पटेल निवासी रतनपुरा आंजना थाना अरथुना के रूप में हुई। जिसे डिटेन कर पूछताछ की गयी तो उसने चोरी स्वीकार किया। आरोपी की सूचना पर विद्युत केबल से जलाकर निकाला तांबे का तार एवं नल की टोटियां बरामद की गयी। पुलिस टीम में थानाधिकारी शिशुपाल सिंह, सहायक उपनिरीक्षक नाथूलाल व सुरेन्द्र सिंह, हैड कांस्टेबल सरदार सिंह, मानशंकर, कांस्टेबल भानुप्रताप सिंह, जयवर्धन सिंह व बदामीलाल शामिल रहे।

फर्जी दस्तावेज से ट्रैक्टर खरीदने का आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। थानाधिकारी निवाई रामजीलाल के नेतृत्व में गठित टीम ने फर्जी दस्तावेज व फर्जी आदमी बनकर ट्रैक्टर खरीदने वाले आरोपी के कब्जे से वांछित ट्रैक्टर को बरामद कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया। थानाधिकारी ने बताया कि थाना टीम ने आरोपी भीमराज मीणा पुत्र नाथूलाल निवासी धन्ना फेली की ढाणी, मण्डावरी थाना जिला दौसा को गिरफ्तार कर वांछित ट्रैक्टर के सम्बन्ध में पूछताछ के बाद आरोपी ने चोरी किये गये ट्रैक्टर को अपने गांव धन्ना फेली की ढाणी होना बताया, जिस पर पुलिस टीम ने आरोपी के गांव मण्डावरी धन्ना फेली की ढाणी पहुंचकर प्रकरण में वांछित ट्रैक्टर को जब्त किया। आरोपी भीमराज मीणा ने ट्रैक्टर को राजेश मीणा पुत्र भरत लाल मीणा के नाम से फर्जी दस्तावेज तैयार कर ट्रैक्टर खरीदने एवं ट्रैक्टर के विक्रय इकारनामा की शर्तों के मुताबिक 84 हजार रूपये की 8 किस्त जमा नहीं करवाकर धोखाधड़ी करके ट्रैक्टर को खुर्द-बुर्द करने के सम्बन्ध में न्यायालय द्वारा इस्तगासा प्राप्त होने पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान किया गया। इस दौरान आरोपी को गिरफ्तार किया गया है।

मुझे नहीं पता कि ये मेरी सर्वश्रेष्ठ पारी है या नहीं, क्योंकि जब आप 413 रन का पीछा करते हैं तो आपके पास खेलने के लिए कोई और गियर नहीं होता। छक्के लगाने के मामले में शायद हां, लेकिन मैं इसे सर्वश्रेष्ठ नहीं मानूंगी। - स्मृति मंधाना

भारतीय महिला क्रिकेटर, विराट कोहली का रिकॉर्ड तोड़ने के बाद बोलते हुए।

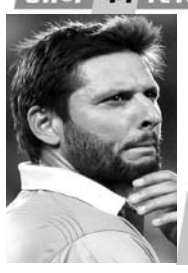

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

शाहिद आफरीदी

हालांकि, वह कोहली का वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ने के बाद भी खुश नहीं थीं। क्योंकि उन्होंने इसे अपनी सर्वश्रेष्ठ पारी नहीं करार दिया। स्मृति मंधाना ने कहा कि, मुझे नहीं पता कि ये मेरी सर्वश्रेष्ठ पारी है या नहीं, क्योंकि जब आप 413 रन का पीछा करते हैं तो आपके पास खेलने के लिए कोई और गियर नहीं होता। छक्के लगाने के मामले में शायद हां, लेकिन मैं इसे सर्वश्रेष्ठ नहीं मानूंगी। जब भी आप शतक बनाते हैं और टीम जीतती है मेरा मतलब है कि वह एक यादगार पारी बन जाती है।

क्या आप जानते हैं ?... दक्षिण अफ्रीका ने जिम्बाब्वे को टैस्ट मैच के दूसरे दिन ही एक पारी और 21 रन से हराकर दो दिन में जीत हासिल करने वाली तीसरी टीम का दर्जा मिला। इससे पहले इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया यह सम्मान पा चुकी है।

बास्केटबॉल अंडर-17 में दो श्रेणियों में जेपीआईएस ने जीता खिताब

जयपुर, 22 सितंबर। जयपुर में आयोजित पांच दिवसीय आईएसएसओ नेशनल गेम्स 2025-26 का भव्य समापन हुआ। इस प्रतिष्ठित खेल महोत्सव में देश-विदेश के 50 से अधिक अग्रणी विद्यालयों

के 1000 से अधिक खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया और उत्कृष्ट खेल भावना का प्रदर्शन किया। जयपुर स्थित जयश्री पेरीवाल इंटरनेशनल स्कूल (जेपीआईएस) ने इन खेलों की मेजबानी की। समापन दिवस पर बास्केटबॉल अंडर-17 के फाइनल मुकाबले खेले गए, जिनमें जेपीआईएस ने शानदार जीत दर्ज करते हुए दोनों श्रेणियों-बालक एवं बालिका-में चैम्पियन बना। बालिका वर्ग (अंडर-17) के फाइनल में जेपीआईएस की बालिका टीम ने गुरुग्राम के दी श्री राम स्कूल को 38-17 के अंतर से पराजित किया। वहीं, बालक वर्ग (अंडर-17) के फाइनल मुकाबले में जेपीआईएस की टीम ने मुंबई के ओबेरॉय इंटरनेशनल स्कूल को 57-18 से हराकर खिताब जीता। इन निर्णायक जीतों ने जेपीआईएस के खिलाड़ियों की प्रतिभा, समर्पण और टीमवर्क को उजागर किया। विद्यालय परिवार ने खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई दी और बताया कि यह उपलब्धि न केवल विद्यालय बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गौरव का क्षण है। विद्यालय की चेयरपर्सन, डॉ. जयश्री पेरीवाल ने विजेता टीमों को बधाई देते हुए कहा, यह जीत हमारी मेहनत, अनुशासन और खेल के प्रति समर्पण की मिसाल है। हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थी न केवल अकादमिक क्षेत्र में बल्कि खेल के क्षेत्र में भी नई ऊँचाइयाँ छू रहे हैं। इस अवसर पर समापन समारोह में विजेता एवं उपविजेता टीमों को ट्रॉफियां प्रदान की गईं और सभी प्रतिभागी विद्यालयों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। आईएसएसओ नेशनल गेम्स 2025-26 ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि खेल युवा पीढ़ी को एकजुट करने और उन्हें जीवन मूल्यों से जोड़ने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

जयपुर में होगा ग्रीन फिट मैराथन सीजन-2

जयपुर, 22 सितम्बर। पिंक सिटी जयपुर एक बार फिर दौड़ते कदमों की गूंज से सराबोर होने जा रहा है। 28 सितम्बर 2025 को रन फॉर ग्रीनर अर्थ के संदेश के साथ ग्रीन फिट मैराथन का दूसरा सीज़न

इस बार भी विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित होगा। इस मैराथन का उद्देश्य लोगों को हृदय स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश देना भी है। राजस्थान की डिप्टी चीफ मिनिस्टर, दिया कुमारी मैराथन को फ्लैग ऑफ विद्याधर नगर स्थित सन एंड मून कॉम्प्लेक्स की पार्किंग से सुबह 5:30 बजे करेंगी। मैराथन का मुख्य आकर्षण बॉलीवुड सिंगर रविंद्र उपाध्याय की लाइव परफॉर्मेंस होगी, जो धावकों को जोश और उमंग से भर देगी। ग्रीन फिट मैराथन में तीन श्रेणियां रखी गई हैं, जिनमें 3 किलोमीटर फन रन, 5 किलोमीटर टाइम्ड रन और 10 किलोमीटर टाइम्ड रन शामिल हैं। प्रतिस्पर्धी धावकों के लिए आकर्षक नकद पुरस्कार भी रखे गए हैं। 5 किलोमीटर और 10 किलोमीटर श्रेणी में पुरुष और महिला वर्ग के लिए 50 हजार रुपए तक के नकद पुरस्कार रखे गए हैं।

हिंदायान जॉय राइड, जयपुर के लिए पंजीकरण शुरू

जयपुर, 22 सितम्बर। देशभर के साइक्लिंग प्रेमी अब हिंदायान जॉय राइड, जयपुर में हिस्सा लेने के लिए पंजीकरण कर सकते हैं। संडे ऑन साइकल कार्यक्रम रविवार, 7 दिसम्बर 2025 को आयोजित होने जा रहा है।

यह आयोजन विजय दिवस की याद में किया जा रहा है, जो 1971 के युद्ध में भारत की सैन्य विजय और बांग्लादेश के निर्माण का प्रतीक है। 20 किलोमीटर की यह साइकल राइड अमर जवान ज्योति (जयपुर यूथ हॉस्टल के पास) से शहीदों को श्रद्धांजलि देकर शुरू होगी, जवाहर सर्कल तक जाएगी और फिर वापस अमर जवान ज्योति पर लौटेगी। यह आयोजन संडे ऑन साइकल का हिस्सा है और इसमें भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय का सहयोग है। मंत्रालय के सचिव ने दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र के मुख्य सचिवों से अनुरोध किया है कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में हिंदायान साइकिल अभियानों के लिए लॉजिस्टिक और पुलिस व्यवस्था सुनिश्चित करें। अब तक अर्धसैनिक बलों के सदस्य भाग लेते थे। "पिछले साल जयपुर में हिंदायान जॉय राइड में भारतीय थलसेना और वायुसेना की टीमें शामिल हुई थीं। इस साल पहली बार यह आयोजन स्कूल कॉलेज के बच्चों, युवाओं एवं आम नागरिकों के लिए भी खोला जा रहा है, ताकि यह स्मृति और राष्ट्रीय गर्व का व्यापक उत्सव बन सके। विश्व का स्थलमार्ग से चक्कर लगाने वाले पहले भारतीय कार्यक्रम आयोजक विष्णुदास चापके ने कहा कि पिछले आयोजनों में थलसेना, नौसेना, वायुसेना, टेरिटोरियल आर्मी, सीमा सुरक्षा बल, इंडो-तिब्बतन बॉर्डर पुलिस और दिल्ली पुलिस की टीमें भाग ले चुकी हैं। इस बार आयोजकों की योजना है कि विधायक, विधान परिषद सदस्य और जयपुर नगर निगम के पार्षदों को प्रतीकात्मक छोटी राइड में शामिल किया जाए।

भारत बनाम पाकिस्तान अब प्रतिद्वंद्विता नहीं रही : यादव

दुबई, 22 सितंबर। भारतीय टी-20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने इस धारणा को खारिज कर दिया है कि भारत बनाम पाकिस्तान मुकाबला अब प्रतिद्वंद्विता है। सूर्यकुमार यादव ने रविवार रात पाकिस्तान को छह विकेट से हराने के बाद पत्रकारों के सवालों के जवाब में कहा, "मैं इस सवाल पर एक बात कहना चाहूंगा। मुझे लगता है कि आपको प्रतिद्वंद्विता पर यह सवाल पूछना बंद कर देना चाहिए। इससे पहले उन्हें याद दिलाया गया कि सवाल प्रतिद्वंद्विता के बारे में बिल्कुल नहीं था। स्तर और प्रतिद्वंद्विता एक जैसी ही है। मेरे हिसाब से, अगर दो टीमें 15-20 मैच खेलती हैं और अगर आमने-सामने मुकाबला 7-7 या 8-7 का होता है, तो उसे प्रतिद्वंद्विता कहते हैं। लेकिन 13-0, 10-1... मुझे नहीं पता कि आंकड़े क्या हैं। लेकिन अब यह प्रतिद्वंद्विता नहीं रही। लेकिन हां, मुझे लगता है कि हमने उनसे बेहतर क्रिकेट खेला।"

रिकॉर्ड के लिए, भारत ने दुबई में 2022 में एशिया कप में पाकिस्तान से मिली पिछली हार के बाद से अब तक लगातार सात मैचों में सिर्फ पुरुष अंतरराष्ट्रीय मैचों में पाकिस्तान को हराया है। इस प्रतिद्वंद्विता के बारे में उनकी राय पूछे जाने से पहले, सूर्यकुमार ने बताया कि उन्हें खेल का निर्णायक दौर पाकिस्तान की पारी का आधा समय लगा जब पाकिस्तान ने दस ओवर में एक विकेट पर 91 रन बनाए थे, जो भारत के खिलाफ टी-20 अंतरराष्ट्रीय

मैचों में अब तक का उनका सर्वोच्च हाफटाइम स्कोर था। यही वह समय था जब सूर्यकुमार ने अपनी टीम को संभाला और अंपायरों ने ड्रिंक्स इंटरवल की घोषणा कर दी। इसके बाद, भारत ने अगले सात ओवरों में केवल 38 रन देकर पाकिस्तान पर लगाम कसी। इस टूर्नामेंट में 10-17 ओवरों के बीच बल्लेबाजी करने वाली टीमों का यह सबसे कम स्कोर है।

सूर्यकुमार ने कहा, "मेरे हिसाब से, पहली पारी के पहले ड्रिंक्स में टर्निंग पॉइंट आया। उसके बाद लोगों ने अपनी बॉडी लैंग्वेज बदल दी। आप हमेशा पावरप्ले के बाद खेल में बदलाव देखते हैं। लेकिन आज, दस ओवर के बाद खेल बदल गया, जब गेंदबाजों ने अपनी लाइन और लेंथ बदली, उस स्थिति में क्या ज़रूरी था, यह समझा और थोड़ी ज्यादा ऊर्जा दिखाई। स्पिनरों ने अच्छी गेंदबाजी की। और मेरे हिसाब से, शिवम दुबे का स्पैल, आप कह सकते हैं कि यह एक टर्निंग पॉइंट था।"

सूर्यकुमार ने शिवम दुबे के बारे में कहा, "मुझे लगता है कि वह सभी अभ्यास सत्रों में अपनी गेंदबाजी पर बहुत मेहनत कर रहा है। और यह एक बेहतरीन मैच था जहां उसे अवसर मिला। वह हमेशा कम से कम दो ओवर गेंदबाजी करना चाहता था। और आज उसे अपने कोटे के ओवर गेंदबाजी करने का अवसर मिला, इसलिए वह बहुत खुश था। और जिस तरह से उसने अच्छा प्रदर्शन किया, मुझे लगता है कि उसकी योजनाएं बहुत स्पष्ट थीं। मैं केवल नेट्स पर ही बल्लेबाजी कर रहा होता हूं जब वह बहुत गेंदबाजी करता है। वह सभी सही बल्लेबाजों को गेंदबाजी करता है। कभी-कभी नई गेंद से भी गेंदबाजी करता है। इसलिए उसकी तैयारी हमेशा बेहतरीन होती है। और जब भी उसे आज जैसा अवसर मिलेगा, मुझे लगता है कि वह हमेशा टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करने के लिए तैयार रहेगा।"

अभिषेक शर्मा के नाम बड़ा कीर्तिमान, टी-20 में तोड़ा क्रिस गेल का रिकॉर्ड

नई दिल्ली, 22 सितंबर। एशिया कप 2025 सुपर-4 मुकाबले में पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय ओपनर बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने कमाल की पारी खेली। भारत को जीत के लिए इस मैच में 172 रन का टारगेट मिला था और अभिषेक ने अपनी तूफानी बल्लेबाजी के बलबूते इस लक्ष्य को बेहद आसान बना दिया। वहीं अभिषेक ने इस मैच में 39 गेंदों पर 5 छक्के और 6 चौकों की मदद से 74 रन की पारी खेली और इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 189.74 का रहा। अपनी पारी में लगाए 5 छक्कों की मदद से अभिषेक ने क्रिस गेल को पछाड़ दिया और नया वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। अभिषेक ने पाकिस्तान के खिलाफ अपनी पारी के दौरान 5 छक्के लगाए और टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में उन्होंने अपने 50 छक्के भी पूरे कर लिए। अभिषेक ने ये 50 छक्के सिर्फ 20 पारियों में लगाए और टी20 में सबसे कम पारियों में 50 छक्के लगाने वाले पहले बल्लेबाज बने साथ ही इविन लुईस की बराबरी पर भी आ गए। लुईस ने ये कमाल 20 पारियों में किया था। अभिषेक क्रिस गेल से आगे निकल गए जिन्होंने 25 पारियों में टी20 में 50 छक्के लगाए थे।

फाइनल के लिए दावा पेश करने उतरेगी श्रीलंका-पाकिस्तान

अबू धाबी 22 सितंबर। एशिया कप 2025 में सुपर-4 चरण में मंगलवार को पाकिस्तान और श्रीलंका जीत हासिल कर टूर्नामेंट में वापसी करने और फाइनल के लिए अपना दावा भी पेश करने के लिए मैदान में उतरेंगी।

पाकिस्तान, जो इस मैदान पर पिछले छह मैच जीतकर, जिनमें श्रीलंका के खिलाफ तीन मैच भी शामिल हैं, लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, के लिए चुनौती अपनी लय को जारी रखने की है। वहीं श्रीलंका के लिए यह केवल विरोधी टीम के खिलाफ ही नहीं, बल्कि अबू धाबी में पिछले पांच मैच हार चुकी निराशाजनक यादों के सिलसिले के खिलाफ भी एक जंग है। श्रीलंका को बंगलादेश के हाथों हार नसीब हुई जबकि पाकिस्तान को टूर्नामेंट में दूसरी बार भारत से हार का सामना करना पड़ा। श्रीलंका सुपर-4 चरण में जीत की हैट्रिक लगाकर पहुंची थी, जिसे में बंगलादेश के खिलाफ मिली हार से सबक लेकर श्रीलंका की टीम वापस जीत की पटरी पर लौटना चाहेगी।

श्रीलंका की टीम मजबूत नजर आ रही है। इस समय पाकिस्तान के बल्लेबाज और गेंदबाज अपनी सर्वश्रेष्ठ लय में नहीं हैं। प्रमख तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी का गेंद के साथ प्रदर्शन पाकिस्तान के लिए चिंता का विषय बना हुआ है।

पथुम निसंका ने इस टूर्नामेंट में अब तक श्रीलंका के लिए सर्वाधिक 136 रन बनाए हैं जिसमें दो अर्धशतक भी शामिल हैं। इस टूर्नामेंट में कम से कम 100 रन बनाने वाले बल्लेबाजों में सिर्फ अभिषेक शर्मा और मोहम्मद नबी का स्ट्राइक रेट ही निसंका से अधिक है। अभिषेक ने जहां 208.43 के स्ट्राइक रेट से 173 रन बनाए हैं, वहीं नबी ने 171.42 के स्ट्राइक रेट से 108 रन बनाए हैं। वहीं निसंका के बल्ले से 136 रन 148.97 के स्ट्राइक रेट से निकले हैं।

शेख जायद क्रिकेट स्टेडियम की पिच पर लक्ष्य का पीछा करने वाली टीमों को अक्सर सफलता मिली है पिछले 20 मैचों में से 13 में जीत हासिल की है। हालांकि मुकाबला कांटे का होने की उम्मीद है, लेकिन पलड़ा पाकिस्तान के पक्ष में थोड़ा झुका हुआ है। हालांकि श्रीलंका एक ऐसे मुकाबले में इतिहास पलटने की कोशिश करेगा।

अगले मुकाबले के लिए पाकिस्तान की संभावित एकादश: सलमान आगा (कप्तान), सैम अयूब, साहिबजादा फरहान, फखर जमान, हुसैन तलत, मोहम्मद हारिस (विकेटकीपर), मोहम्मद नवाज, फहीम अशरफ, शाहीन अफरीदी, हारिस रऊफ और अबरार अहमद।

श्रीलंका की संभावित एकादश: चरिथ असलांका (कप्तान), पथुम निसांका, कुसल मेंडिस (विकेटकीपर), कामिल मिशारा, कुसल परेरा, दासुन शनाका, कामिंदु मेंडिस, वानिंदु हसरंगा, दुनिथ वेललेज, दुष्मंथा चमीरा और नुवान तुषारा

बेशर्मी की हद... पहले आतंकी इशारे किए फिर कहा मुझे फर्क नहीं पड़ता : फरहान

नई दिल्ली, 22 सितंबर। बार-बार भारत के हाथों हार मिलने के बाद भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आते पाकिस्तान खिलाड़ी। एशिया कप 2025 में लगातार दूसरी बार हार झेलने के बाद भी बेशर्मी दिखा

रहे पाकिस्तानी खिलाड़ी। पाकिस्तान को भारत की धमाकेदार जीत का जश्न दुनियाभर में मौजूद हिन्दुस्तानी फैंस मना रहे हैं। भारतीयों के भीतर पाकिस्तान को हराने का जितनी खुशी है उतना ही गुस्सा भी है। पाकिस्तानी बैटर साहिबजादा फरहान के गन स्टाइल सेलिब्रेशन पर विवाद अब बढ़ता जा रहा है। भारतीय फैंस का कहना है कि इस गन सेलिब्रेशन से साहिबजादा फरहान पहलगाम आतंकी हमले के जख्मों को कुरेदना चाहते थे। मैच के दौरान ये घटिया हरकत करने वाले साहिबजादा फरहान अब घिनौना बयान देकर सोशल मीडिया पर ट्रोल हो रहे हैं।

वहीं प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान साहिबजादा फरहान ने कहा कि, मुझे लगता है कि अगर आप छक्कों की बात करें तो आप भविष्य में ऐसा देखेंगे। और वह (जश्न) उस समय बस एक पल था। मैं 50 रन बनाने के बाद ज्यादा जश्न नहीं मनाता। लेकिन अचानक मेरे दिमाग में आया कि चलो आज जश्न मनाते हैं। मैंने वैसे ही किया। मुझे नहीं पता कि लोग इसे कैसे लेंगे। मुझे इसकी परवाह भी नहीं है और बाकी आप जानते हैं। आपको जहां भी खेलना है आक्रामक क्रिकेट खेलना चाहिए। जरूरी नहीं कि वह भारत ही हो। आपको हर टीम के खिलाफ आक्रामक क्रिकेट खेलना चाहिए, जैसा हमने आज खेला। वहीं श्रीलंका के खिलाफ पाकिस्तान की आगे की क्या रणनीति होगी इस पर उन्होंने कहा कि टीम ने पहले पावरप्ले में काफी विकेट गंवाए थे। इसमें सुधार करना जरूरी है। साथ ही ये भी सुनिश्चित करना होगा कि पहले 6 ओवर्स में रन बनाए जाएं।

अंडर-19 चैलेंजर ट्रॉफी

नावेद ने 7 छक्के और 4 चौके की मदद से शतक लगाया

जयपुर, 22 सितंबर। टीम बी - टीम एच (टीम एच 8 विकेट से जीती), टीम बी पारी 179/9, टीम के लिए रजत 80 रन। टीम एच के गेंदबाज पर्व, आशीष, अमन 2 -2 विकेट। टीम एच पारी 180/2, टीम के लिए अमित भारद्वाज 81, समीर गंगवाल 8 रन। टीम बी के गेंदबाज अभिषेक मूंड 38 /2 विकेट। टीम एफ - टीम डी (टीम एफ 106 रन से जीती), टीम एफ पारी रक्षित लुनावत 70, भव्य राज 36, आदित्य 33 रन, टीम डी के गेंदबाज रोहित सिगर व उदय सिंह 2 -2 विकेट।

टीम डी पारी 118 आल आउट, टीम के लिए आदित्य 32 व ओसनिक 30 रन। टीम एफ के गेंदबाज भव्य राज 11/3 व जगदीश 11/2 विकेट। टीम सी - टीम ई (टीम ई 3 विकेट से जीती), टीम सी पारी 223 आल आउट। टीम के लिए देवांश जसवाल 80, सचिन सेन नाबाद 42 रन। टीम ई के गेंदबाज केतन 42/3, दिव्यांश, जयवर्धन 2 -2 विकेट।

टीम ई पारी 227/7, टीम के लिए दीपेश नाबाद 112 व कुश 59 रन, टीम सी के गेंदबाज दिव्यांश 47 /2 विकेट। टीम जी - टीम ऐ (टीम जी 14 रन से जीती), टीम जी पारी नावेद खान 100, सुनील दुलार 97 रन टीम ऐ के गेंदबाज प्रखर शर्मा 32 /3 विकेट। टीम ऐ पारी 238/8, टीम के लिए कविश घोणावत 108, अनिताराज 44 रन, टीम जी के गेंदबाज शुभांकर त्यागी 40/3, धीरज, नावेद 2 -2 विकेट लिए।

राज्य स्तरीय अंडर-23 (प्री-क्वार्टर फाइनल मैच)

जयपुर 6 विकेट से जीती, ताम्बी का अर्द्धशतक

जयपुर, 22 सितंबर। अजमेर पारी 212/9, टीम के लिए राजुल गैंगवार 68 रन। जयपुर के गेंदबाज शुभम खंडेलवाल 19/3, मेहुल पारीक व आयुष अमेरिया 2-2 विकेट। जयपुर पारी 214/4, टीम के लिए जयंत ताम्बी 86, राज शर्मा नाबाद 39, भावित कुमावत नाबाद 31 रन। अजमेर के गेंदबाज प्रतिर विरंजनी 26/3 विकेट।

नागौर - जैसलमेर (नागौर 134 रन से जीती), नागौर पारी 298/9, टीम के लिए ललित शेरावत 108, पुखराज कुमार 51 रन। जैसलमेर के गेंदबाज गुलाब 52/3, संजय, गणेश 2 -2 विकेट। जैसलमेर पारी 164 आल आउट, टीम के लिए आदित्य लूना 58 रन। नागौर के गेंदबाज रौनक गौड़ 44/4, दिव्य प्रताप, राहुल 2 -2 विकेट।

जोधपुर - हनुमानगढ़ (जोधपुर 203 रन से जीती) जोधपुर पारी 289/5, टीम के लिए भवानी सुथार 135, युवराज 72 रन। हनुमानगढ़ के गेंदबाज उत्कृष्ट 50/2 विकेट। हनुमानगढ़ पारी 86 आल आउट। जोधपुर के गेंदबाज सोयब 21/5, भौमिक 13/4 विकेट।

उदयपुर - टोंक (उदयपुर 74 रन से जीती), उदयपुर पारी 163 आल आउट। टीम

के लिए विश्वजीत 44, पुष्पेंद्र 32 रन। टोंक के गेंदबाज मो साद 22/3, गणेश सुथार 36/3 विकेट। टोंक पारी 89 आल आउट। उदयपुर के गेंदबाज पुष्पेंद्र 17/3, केतन शर्मा, विश्वजीत व ऋतिक 2 -2 विकेट।

झुंझनू -सीकर (झुंझनू 19 रन से जीती) झुंझनू पारी 274/7, टीम के लिए, शुभम सिंह 114 रन। सीकर के गेंदबाज हिमांशु जांगिड़ 58/4, अंकित कुमार 58 /2 विकेट। सीकर पारी 255 आल आउट। टीम के लिए धर्मवीर सैनी 116, अंकित कुमार 46 रन झुंझनू के गेंदबाज अंकुश कुमार 37/5 विकेट।

भीलवाड़ा - बीकानेर (भीलवाड़ा 37 रन से जीती) भीलवाड़ा पारी 255 आल आउट। टीम के लिए सर्वज्ञ पानेरी 87, कृष्णा 67 रन बीकानेर के गेंदबाज विशाल 38/3 व अपूर्व शर्मा 47 /3 विकेट। बीकानेर पारी 218 आल आउट। टीम के लिए जयंत गथर 72 व सचिन लखेसर 51 रन भीलवाड़ा के गेंदबाज अनिल दारा 43/4, अपूर्व शर्मा 47 /3 विकेट।

बाड़मेर - अलवर (बाड़मेर 130 रन से जीती), बाड़मेर पारी 254/9, टीम के लिए दरबार 94, सौरभ 59 रन। अलवर के गेंदबाज सचिन यादव 54/3, तशरीफ 51 /2 विकेट। अलवर पारी 124 आल आउट। टीम के लिए नितिन 36 व सौरभ 33 रन, बाड़मेर के गेंदबाज राहुल चौधरी 12/3, श्रवण, प्रवीण, दीपेंद्र 2-2 विकेट।

करौली - श्रीगंगानगर (श्रीगंगानगर 7 विकेट से जीती) करौली पारी 172 आल आउट। टीम के लिए गाजी खान 38, श्रीगंगानगर के गेंदबाज दिग्विजय सहारण 25/4 व हिमांशु शर्मा 48 /2 विकेट। श्रीगंगानगर पारी 176/3, टीम के लिए शोभित मिश्रा 82 व राहुल गर्ग 60 रन।

टीम को पिछली हारों पर ध्यान नहीं देकर, आगे बढ़ना होगा : उपेन्द्र मलिक

जयपुर, 22 सितंबर। यूपी योद्धा के सहायक कोच उपेंद्र मलिक ने कहा है कि टीम को पिछली हार पर ध्यान न देते हुए आगे बढ़ने की जरूरत है। यूपी योद्धा सोमवार को जयपुर के एसएमएस इंडोर स्टेडियम में तमिल थलाइवास से मुकाबला करेंगे। यूपी योद्धा का अब तक का अभियान मुश्किल रहा है, उन्होंने अपने छह मैचों में केवल चार अंक ही जुटाए हैं। वे लगातार चार मैच हारे हैं और अगर उन्हें अपना सीजन जारी रखना है तो उन पर जल्द से जल्द स्थिति बदलने का दबाव है।

सहायक कोच उपेंद्र मलिक ने स्वीकार किया कि हालिया नतीजे टीम के लिए कठिन रहे हैं, लेकिन उन्होंने शिविर के भीतर सकारात्मक माहौल बनाए रखने के महत्व पर बल दिया। बंगाल वॉरियर्स से हार के बाद मलिक ने कहा, "एक कोच के तौर पर, यह सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है कि टीम सकारात्मक सोच में रहे, खासकर मुश्किल दौर में। खिलाड़ियों को यह विश्वास होना चाहिए कि हर नया मैच एक नया अवसर है। पिछली हारों पर ध्यान देने से कोई फायदा नहीं होगा, इसलिए हमारा ध्यान हमेशा आगे बढ़ने पर है।"

वॉरियर्स के खिलाफ मैच को याद करते हुए, मलिक ने बताया, "हमारी शुरुआत अच्छी रही और शुरुआती दौर में हमारे डिफेंस ने जिस तरह से काम किया, उससे मैं खुश हूँ। लेकिन जब मैच नजदीकी दौर में होता है, तो धैर्य ही सबसे ज़रूरी होता है। कुछ मौकों पर हम थोड़ा संयम खो बैठे और उन गलतियों की वजह से हमें अंक गँवाने पड़े। अगर हमने थोड़ा और अनुशासन और संयम दिखाया होता, तो मैच हमारे पक्ष में जा सकता था।" मलिक ने कहा कि पीकेएल जैसी प्रतिस्पर्धी लीग में निरंतरता और एकाग्रता बेहद जरूरी है।

उन्होंने कहा, "आप केवल कुछ हिस्सों में अच्छा खेलकर जीत की उम्मीद नहीं कर सकते, चाहे वह पांच, 10 या 20 मिनट ही क्यों न हों। कबड्डी में पूरे 40 मिनट तक खेल पर ध्यान केंद्रित रखना जरूरी है। डिफेंस और ऑफेंस, दोनों को पूरे समय एक साथ काम करना होगा। एक भी चूक मैच का रुख बदल सकती है। इसलिए मैं खिलाड़ियों से कहता रहता हूं कि भले ही हमने कुछ हिस्सों में अच्छा खेला हो, लेकिन अगर हम हार गए, तो यह मायने नहीं रखता। हार तो हार है, और हमें इसे स्वीकार करना होगा। अहम मौकों पर धैर्य की कमी ही उस मैच का अंतर थी।"

मुख्यमंत्री भजनलाल ने नवरात्र स्थापना पर पूजा की

जयपुर, 22 सितम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शारदीय नवरात्रि के पावन पर्व पर सोमवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित मां राज राजेश्वरी मंदिर में सपत्नीक विधिवत रूप से पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री ने मां दुर्गा की आराधना करते हुए प्रदेशवासियों के उत्तम स्वास्थ्य, सुख-शांति और समृद्ध जीवन की कामना की। उन्होंने कहा कि शक्ति और सेवा की प्रतीक मां दुर्गा का

- **प्रदेशवासियों के उत्तम स्वास्थ्य, सुख-शांति और समृद्ध जीवन की कामना की।**

आशीर्वाद सदैव प्रदेश पर बना रहे, यही प्रार्थना है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री निवास के अधिकारी-कर्मचारी भी उपस्थित रहे और सभी ने एकजुट होकर मां दुर्गा से प्रदेश की खुशहाली के लिए प्रार्थना की। मुख्यमंत्री शर्मा ने नवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व आत्मशक्ति, साधना और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है, जो हमें सत्कर्म और सेवा के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को नवरात्रि के शुभारम्भ पर मुख्यमंत्री निवास स्थित मां राज राजेश्वरी मंदिर में पत्नी के साथ पूजा की।

भारत अंतरिक्ष में 50 बॉडी गार्ड सैटलाइट भेजेगा

नई दिल्ली, 22 सितंबर। भारत अब अंतरिक्ष में मौजूद अपने उपग्रहों को बाहरी खतरों से बचाने के लिए एक नई योजना पर काम कर रहा है। इस योजना का मकसद दुश्मन देशों के उपग्रहों से होने वाले संभावित हमलों को रोकना है।यह कदम इसलिए तेजी से उठाया जा रहा है, क्योंकि हाल ही में एक विदेशी उपग्रह भारत के एक उपग्रह के बेहद करीब आ गया था।

सूत्रों के मुताबिक, केंद्र सरकार ऐसे बॉडीगार्ड उपग्रहों को बनाना चाहती है, जो भारतीय उपग्रहों के आसपास रहकर उन्हें खतरे से बचा सकें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि को पहचान सकें। मामले से जुड़े लोगों ने बताया कि 2024 के मध्य में एक पड़ोसी देश का उपग्रह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के एक उपग्रह के महज एक किलोमीटर पास से गुजरा। यह इसरो का वो उपग्रह था, जो धरती पर निगरानी और मानचित्रण जैसे काम कर रहा था, जिनका उपयोग रक्षा क्षेत्र में भी होता है। उपग्रहों की टक्कर नहीं हुई लेकिन जानकारों का मानना है कि यह इत्तेफाक नहीं, बल्कि एक तरह का शक्ति प्रदर्शन था। यानी दूसरा देश अंतरिक्ष में अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहता था। इस घटना ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अंतरिमक्ष मौजूद खतरे को उजागर कर दिया।

'अब समय आ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रखा था, जब सुब्रमण्यम स्वामी, राहुल गांधी और अरविंद केजरीवाल सहित कई नेताओं ने इसकी संवैधानिकता को चुनौती दी थी।

वर्तमान मानहानि मामला "द वायर" की एक खबर से संबंधित है, जिसमें कहा गया था कि प्रोफेसर अमिता सिंह जेएनयू के उन शिक्षकों के समूह की अगुवाई कर रही थीं जिन्होंने एक 200 पन्नों का डोज़ियर तैयार किया था, जिसमें जेएनयू को "व्यवस्थित देह व्यापार का अड्डा" बताया गया था।

खबर के अनुसार, इस डोज़ियर का शीर्षक था, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, अलगाववाद और आतंकवाद का अड्डा।

इस लेख में यह भी कहा गया था कि यह डोज़ियर जेएनयू प्रशासन को सौंपा गया था, जिसमें कुछ शिक्षकों पर भारत में अलगाववादी आंदोलनों को वैधता देकर जेएनयू में पतनशील संस्कृति को बढ़ावा देने का आरोप लगाया गया था।

"द वायर" के लेख के अनुसार, प्रोफेसर सिंह इस डोज़ियर को तैयार करने वाले शिक्षकों के समूह की अगुवाई कर रही थीं।(इसके बाद वर्ष 2016 में प्रोफेसर सिंह ने द वायर और उसके रिपोर्टर के खिलाफ आपराधिक मानहानि का मामला दायर किया था।

फरवरी 2017 में एक मजिस्ट्रेट ने इस मामले में पोर्टल को समन जारी किया था। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल उस समन को रद्द कर दिया था और मजिस्ट्रेट को समाचार लेख की जांच के बाद नया फैसला लेने का निर्देश दिया था।

इस वर्ष जनवरी से, मजिस्ट्रेट ने फिर से द वायर और इसके राजनीतिक मामलों के संपादक अजॉय आशीरवाद महाप्रस्थ को समन जारी किया। दिल्ली हाई कोर्ट ने 7 मई को उस समन को सही ठहराया, जिसके बाद यह मामला अब सुप्रीम कोर्ट के समक्ष है।

सोमवार को, सुप्रीम कोर्ट ने सबसे पहले मामले के लम्बे समय से लंबित रहने पर सवाल उठाया। कोर्ट ने कहा, आप इसे कब तक घसीटते रहेंगे? इस पर सिब्बल ने कहा, इसी तरह का मामला राहुल गांधी का भी विचाराधीन है। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने मामले में नोटिस जारी किया।

बिहार के चुनाव ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लेकिन बिहार, जहाँ दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्गों के मुद्दों का राजनीति में दबदबा रहता है, वहां कानूनी पहलुओं से ज्यादा अहमियत राजनीतिक नैरेटिव की होती है। हालिया विवादों के चलते, अडानी समूह विपक्ष को एक ताकतवर मुद्दा देता दिख रहा है।

2023 में "हिंडनबर्ग रिसर्च" द्वारा स्टॉक हेराफेरी और धोखाधड़ी के आरोपों के अलावा, कम्पनी कई गलत कार्यों के सिलसिले में खबरों में रही है। गत वर्ष अमेरिकी न्याय विभाग द्वारा गौतम अडानी और अन्य के खिलाफ सिक्योरिटीज फ्रॉड और रिश्वत के आरोप (सोलर प्रोजेक्ट से जुड़े) लगाये गये थे। इसके अलावा, इन रिपोर्टों पर भी बहुत हो-हल्ला हुआ था कि अडानी ग्रुप इज़रायल को ड्रोन निर्यात कर रहा है।

इससे पूर्व, भाजपा-शासित असम में, ग्रामवासियों ने बड़े पैमाने पर विरोध-प्रदर्शन करते हुये आरोप लगाये थे कि अडानी ग्रुप "वन संरक्षण कानूनों" का उल्लंघन कर रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई जीएसटी दरों में कटौती की घोषणा को डैमेज कंट्रोल के रूप में देखा जा रहा है। जैसे-जैसे चुनाव नज़दीक आते हैं, एनडीए, और विशेष रूप से पीएम मोदी की ओर से, पूर्वी राज्य की सत्ता में बने रहने के लिये, आक्रामक चुनावी रणनीतियाँ सामने आने की उम्मीद है।

लेकिन फिलहाल, विपक्ष के हौसले बुलंद है।

90 करोड़ ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आरोपियों को जमानत नहीं दी जाए। आरोपियों ने जमानत अर्जी में कहा था कि उन्हें केस में झूठा फंसाया है, उन्होंने कोई अपराध नहीं किया है और उनके फरार होने की संभावना नहीं है। इसलिए उन्हें जमानत दी जाए। कोर्ट ने दोनों पक्षों की बहस सुनकर आरोपियों की जमानत अर्जियों को खारिज कर दिया।

पाक वायुसेना ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बम गिराये। ग्रामीणों का कहना है कि इस बमबारी से गांव पूरी तरह से तबाह हो गया। बारुद से जले शव घरों और सड़कों पर बिखरे पड़े हैं।

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों ने इन आरोपों की गहन जांच की मांग की है, और सशस्त्र संघर्ष के कानूनों का सम्मान करने, नागरिकों की सुरक्षा और किसी भी उल्लंघन के लिए जवाबदेही तय करने का आग्रह किया है।

सेना का कहना है कि इन हमलों का टारगेट तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) का बम बनाने वाला ठिकाना था। लोकल पुलिस ने मीडिया को बताया कि टीटीपी के दो कमांडर, अमान गुल और मसूद खान बम बनाकर मस्जिदों में छिपा रहे थे।

जीएसटी दरों में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले इस अर्थशास्त्री ने इस तरह की टैक्स प्रणाली पर गहरी पकड़ बनाई और लगातार मेहनत की।

देशभर में एक समान वस्तु कर लगाने का विचार आसानी से स्वीकार कर लिया गया, लेकिन सेवाओं पर कर लगाने को लेकर दिक्कत थी, सबसे बड़ा सवाल था कि किन सेवाओं पर टैक्स लगाया जाए। शुरुआत में केवल कुछ सेवाओं पर कर लगाया गया, जिसे धीरे-धीरे बढ़ाकर लगभग सभी सेवाओं तक पहुँचा दिया गया, यहाँ तक कि टेंट वालों तक। आखिरकार, जब नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में नई भाजपा सरकार सत्ता में आई, तब तक नई जीएसटी लागू करने की पूरी रूपरेखा तैयार हो चुकी थी। ज़रूरत केवल केन्द्र और राज्यों में राजनीतिक सहमति की थी। मज़े की बात है कि जब मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने इस विचार का राजनीतिक विरोध किया था। लेकिन समय के साथ जब मोदी केन्द्र में प्रधानमंत्री बने, तो उनकी सरकार ने इसे लागू करने में अगुवाई की।जैसा कि होता है, जीएसटी प्रणाली की शुरुआत में कई गड़बड़ियाँ और दिक्कतें आईं। पूरी प्रणाली के लिए एक मज़बूत आईटी ढांचे की ज़रूरत थी और शुरुआती महीनों और सालों में इसमें बार-बार दिक्कतें आती रहीं। सौभाग्य से, समय के साथ ये समस्याएँ दूर हुईं और जीएसटी ने अच्छे नतीजे देने शुरू कर दिए। अब, जब नई दरें लागू हो रही हैं, तो सौभाग्य से देश में इस समय त्योहारों का सबसे बड़ा मौसम है, शायद जानबूझकर ऐसा समय चुना गया है। प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि कैसे जीएसटी व्यवस्था में बदलाव से आम लोगों को राहत और खुशी मिलेगी और सरकार के बजाय, उनके पास ज़्यादा पैसा बचेगा।

दिल्ली दंगे मामले ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

याचिकाओं पर सोमवार को दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया। न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और न्यायमूर्ति एन वी अंजारिया की पीठ ने वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, ए एम सिंघवी और अन्य की संक्षिप्त दलीलें सुनने के बाद नोटिस जारी किया।

इन छात्रों को दंगों में एक बड़ी साज़िश रचने के आरोप में यू.ए.पी.ए. के तहत गिरफ़्तार किया गया था। खालिद और अन्य 2020 से दंगों के सिलसिले में जेल में हैं। पुलिस के मुताबिक, दंगों में 53 लोग मारे गए थे और 700 से ज़्यादा घायल हुए थे। अधिवक्ता सिंघवी ने अदालत से अंतरिम ज़मानत याचिका पर भी नोटिस जारी करने का अनुरोध किया।

उन्होंने दावा किया कि याचिकाकर्ता छात्र हैं जो पाँच साल से जेल में हैं। याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सिब्बल ने मामले में जल्द सुनवाई की माँग की, ताकि पाँच साल से जेल में बंद याचिकाकर्ता दिवाली से पहले बाहर आ सकें।

इस पर शीर्ष अदालत ने कहा कि वह मुख्य याचिका पर ही विचार करेगी। अदालत ने मामले की सुनवाई के लिए सात अक्टूबर निर्धारित की है।

पीठ ने कहा कि मामले की सुनवाई पहले स्थगित कर दी गई थी क्योंकि पीठ के सदस्य न्यायमूर्ति मनमोहन, सिब्बल के चैंबर से जुड़े होने के कारण सुनवाई से अलग होना चाहते थे।

चीन ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ट्रंप के एच-1बी वीज़ा का तोड़ निकालते हुए चीन ने अपनी वीज़ा कैटेगरी में 'के वीज़ा' को शामिल करने का फैसला किया है। इस वीज़ा के जरिए चीन दुनिया भर के युवा वैज्ञानिकों और तकनीकी से जुड़े प्रोफेशनल्स को बुलाने की तैयारी में है।

चीनी न्यूज एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, 'के वीज़ा' से जुड़े नए नियम आगामी 1 अक्टूबर से लागू हो जाएंगे। बता दें कि चीन में पहले से 12 तरह के वीज़ा मिलते हैं। वहीं, अब इस लिस्ट में 'के वीज़ा ' का नाम भी शामिल होने वाला है।

चीन के 12 अन्य वीजा की तुलना में 'के वीज़ा ' बिल्कुल अलग होगा। 'के वीज़ा ' के जरिए चीन में एंट्री लेने वाले लोग शिक्षा, कल्चर, विज्ञान और तकनीकी के अलावा बिजनेस जैसे क्षेत्रों में हिस्सा ले सकेंगे।

हालांकि, यह वीज़ा हासिल करने के लिए चीन कुछ योग्यताएं निर्धारित करेगा। इसके लिए वीजा धारक को कुछ जरूरी दस्तावेज भी जमा करने होंगे।चीन कुछ विशेष आयु वर्ग वाले, बेहतर शिक्षा, योग्यता और अनुभवी लोगों को ही 'के वीज़ा ' देगा।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश में सुप्रीम कोर्ट का केन्द्र को नोटिस

नयी दिल्ली, 22 सितंबर। उच्चतम न्यायालय ने अहमदाबाद में 12 जून, 2025 को हुए एयर इंडिया बोइंग ड्रीमलाइनर विमान दुर्घटना मामले की शीर्ष अदालत की निगरानी और नियंत्रण में स्वतंत्र जांच की मांग वाली याचिका पर केन्द्र और अन्य को सोमवार को नोटिस जारी किया। इस दुर्घटना में 260 लोगों की मृत्यु हो गई थी। न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कैप्टन अमित सिंह द्वारा स्थापित विमानन सुरक्षा एनजीओ सेफ्टी मैटर्स फाउंडेशन की याचिका केंद्र सरकार और अन्य से जवाब जवाब तलब किया। याचिकाकर्ता की ओर से दलीलें देते हुए वकील प्रशांत भूषण ने दुर्घटना के लिए पायलटों को दोषी ठहराने वाली रिपोर्टों का मुद्दा उठाया।

एच-1बी वीज़ा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एक अन्य वीडियो में विमान के कैप्टन को यात्रियों को संबोधित करते हुए सुना जा सकता है, जिसमें वे मौजूदा स्थिति को "अभूतपूर्व" बताते हैं और कहते हैं कि जो यात्री उतरना चाहते हैं, वे उतर सकते हैं।

कैप्टन ने कहा, "लेडीज़ एंड जेंटलमैन, यह आपके कैप्टन की आवाज़ है। मौजूदा हालात, जो हमारे लिए भी अभूतपूर्व हैं, को देखते हुए हमें जानकारी है कि कुछ यात्री इस उड़ान में यात्रा नहीं करना चाहते। यह बिल्कुल स्वीकार्य है। हम बस इतना चाहते हैं कि यदि आप उतरना चाहते हैं, तो कृपया ऐसा कर सकते हैं।"

इंस्टाग्राम पर वीडियो साझा करते हुए एक यूज़र ने बताया कि कैसे घबराहट और अफरा-तफरी का माहौल बन गया था, विशेष रूप से भारतीय यात्रियों के बीच।

एक यूज़र ने लिखा, इस शुक्रवार सुबह, सैन फ्रांसिस्को एयरपोर्ट पर एमिरेट्स यात्रियों के लिए हालात बिल्कुल अफरातफरी वाले हो गए थे। राष्ट्रपति ट्रंप ने एक आदेश पर हस्ताक्षर किए, जो नए और मौजूदा एच-एन बी वीज़ा धारकों, दोनों को प्रभावित करता है। इससे कई लोग, खासकर भारतीय यात्री, घबरा गए और उन्होंने विमान से उतरने का फैसला किया।"

उसने यह भी दावा किया कि विमान तीन घंटे तक वहीं रुका रहा और बाकी यात्री बस उड़ान के प्रस्थान का इंतज़ार करते रहे।

राष्ट्रपति ट्रंप ने एच-वन बी वीज़ा शुल्क में बदलाव की घोषणा करते हुए कहा: "इस कार्यक्रम का उद्देश्य अमेरिका में अस्थायी, उच्च-कुशल कर्मचारियों को लाना था, ताकि वे मौजूदा अमेरिकी वर्कफोर्स के पूरक बन सकें। लेकिन इसका जानबूझकर दुरुपयोग किया गया है, ताकि अमेरिकी कर्मचारियों कीजगह कम वेतन और कम कौशल वाले श्रमिकों को लगाया जा सके।"

MARUTI SUZUKI ARENA

त्योहारों की ख़ुशी
अब हुई और बड़ी

GST लाभ और सीमित अवधि फैस्टिव ऑफ़र्स के साथ
30 सितंबर, 2025 तक मान्य

MODEL	S-PRESSO	ALTO K10	CELERIO	WAGONR	SWIFT	DZIRE	BREZZA	ERTIGA	EECO
REDUCTION IN PRICE^ (₹) UP TO	129 600	107 600	94 100	79 600	84 600	87 700	112 700	46 400	68 000
NOW STARTING AT^ (₹)	349 900	369 900	469 900	498 900	578 900	625 600	825 900	880 000	518 100
ADDITIONAL FESTIVE OFFERS* (₹) UP TO	60 000	70 000	65 000	75 000	70 000	5 000	56 000	7 500	45 000

BOOK NOW — UP TO 100% PROCESSING FEE WAIVER ON CAR FINANCE#

ARENA SAFETY SHIELD

SCAN TO CONNECT TO SHOWROOM NEAR YOU

E-BOOK TODAY AT WWW.MARUTISUZUKI.COM

Contact us at 1800-102-1800

T&C available at dealership. Features/accessories vary by variant. Black glass shade on the vehicle is due to lighting effect. *Offers / Prices differ by variant/model/location/city and may change or end without notice. Includes consumer, exchange, and institutional/rural offers (where applicable) on select models. Offer values shown are maximums. Prices subject to GST rates as notified by the Government. ^Reductions and starting prices vary by variant. #Valid with select financiers, for personal-use vehicles only.

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:**-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908